हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

22 जनवरी 1976

खण्ड 1, अंक 9

अधिकृत विवरण

विषय–सूची

वीरवार, 22 जनवरी, 1976

पृष्ठ

संख्या

तारांकित प्रश्न एवं उत्तर (9)1

तारांकित प्रश्न के लिखित उत्तर

(9) 27

अध्यक्ष द्वारा घोषणा

9 (32) गैर सरकार संकल्प

शिक्षा पद्धति मे सुधार लाने सम्बन्धी (पुनरारम्भ)

(9) 32–76

हरियाणा विधान सभा

वीरवार, 22 जनवरी, 1976

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन,

सैक्टर–।, चण्डीगढ में 14.00 बजे हुई ।

अध्यक्ष (चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की ।

तारांकित प्रश्न एवं उत्तर

Mr. Speaker : Question hour.

तारॉंकित प्रश्न सं० 1442

यह प्रश्न पूछा नही गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी दल सिंह, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न सं० 1413

यहप्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी राम लाल वधवा, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न सं० 1519

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य श्री ओम प्रकाश गर्ग सदन में उपस्थित नहीं थे ।

Repair of Roads

***1554. Chaudhri Ram Parshad :** Will the Minister for Revenue be pleased to state whether there is any proposal under consideration of the Government to repair the following roads :-

From :—

(i) Mohammadpur to Tankri ;

(ii) Mohammadpur approach road to High School;

(iii) National Highway road to Ohdi Nanglia; and

(iv) Bharangi to Majra Saban ?

चौधरो रांम प्रशाद : मन्त्री महोदय ने 'नो सर' कह दिया है । 'नो सर' से तो काम नहीं चलेगा । वह सड़क जो बनी पड़ी है, उसकी मुरम्मत होनी चाहिए क्योंकि सिर्फ तारकोल पड़ना है और कोई लम्बी–चौड़ी बात नहीं है, सिर्फ 5,000 रुपए. का भी खर्च नहीं है?

पंडित चिरंजी लाल शर्मा: स्पीकर साहब, और महकमे में तो यह काम दे सकेगा, लेकिन इसमें तो 'नो सर' से ही काम चल सकेगा ।

Water Supply Scheme in Kanina

***1556. Rao Dalip Singh :** Will the Minister for Local Government be pleased to state—

(a) the total amount spent on Water Supply Scheme in the Notified Area Committee, Kanina to-date;

(b) the number of water supply connections given to consumers

in village Kanina;

(c) the number of connections given for common use of people

in the wards and Mohallas of the said Village; and

(d) the conditions required for the water supply connection ?

State Minister for Development and Local Government (Chaudhri Gordhan Dass Chauhan) :

(a) Rs. 7.25 lakhs upto December, 1975.

(b) 7.

(c) 2.

(d) The consumer is required to deposit security of Rs. 200.00, payable in four half yearly instalments of Rs. 50.00 each and also Rs. 50.00 as road damage charges (non-refundable).

राव दलीप सिंह : क्या मिनिस्टर साहब यह बताएंगे कि

जो 7 लाख रुपए की राशि खर्च की गई है, इसमें से कितना रुपया सरकार ने खर्च किया है और कितना कमेटी ने खर्च किया है ?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : कमेटी ने सिर्फ 5,000 रुपया खर्च किया है । जो सरकार ने दिया है वह है एक लाख 38 हजार । इसके अलावा सरकार ने जो और रुपया दिया है, वह है एक लाख 70 हजार ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि देहात के अन्दर वाटर सप्लाई के कनैक्शन क्यों नहीं दिए जाते? क्या गवर्नमैंट इस बारे में अपनी पालिसी को री–कसीडर करेगी?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

राव दलीप सिंह : क्या मिनिस्टर साहब यह फरमाएंगे कि यह जो एक लाख 36 हजार और एक लाख 70 हजार रुपया सरकार ने दिया है, यह कब दिया था?

चौधरी गोवर्धन दास चौहानः इसकी मेरे पास डेट तो नहीं है,लेकिन जो एक लाख 38 हजार रुपया दिया गया था, यह ग्रान्ट–इन–एड था ।

राव बंसी सिंह : क्या मन्त्री महोदय यह बताएंगे कि इतने थोड़े कनैक्शन्ज क्यो दिए गए हैं?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : जितने लोगों ने. मांगे,

उतने दे दिए है । इसके अलावा 1 3 एप्लीकेशन्ज और भी आई थीं । उनके लिए भी हमने कौक्शन सैंक्शन कर दिए हैं, लेकिन उन्होंने अभी तक अपने घरों में वाटर सप्लाई के प्वांयट्स नहीं बताये कि वह कहां कहां लगाना चाहते हैं ।

श्री अमर सिंह : क्या मिनिस्टर साहब यह बताने की कृपा करेंगे. कि बयानी खेड़ा नोटिफाईड एरिया कमेटी जोकि एक नई तहसील बनी है, वहां पर घर–घर पानी पहुंचाने का यत्न करेंगे?

चाधरी गोवर्धन दास चौहान :. अभी तो ऐसी कोइ स्कीम नहीं है । इस बारे बाद में देखा जाएगा ।

श्री हरि सिंह : क्या मिनिस्टर साहब यह फरमाने की कृपा करेंगे कि आप कंज्यूमर मं वाटर कनैक्शन के लिए कुछ चार्ज भी करते हैं और अगर करते हैं तो चार्ज करने का क्या क्राइटेरिया है?

चौधरी गोवर्धन दास चौहानः स्पीकर साहब, हम कन्ज्यूमर से चार्ज करते हैं । सरकार की तरफ से जो चार्जिज हैं, कनैक्शन देने के, वह 6 एम.एम. तह का 6 रुपए और इसके बाद 2 रुपए, 6 एम.एम. से 9 एमएम. तक 1 5 रुपए और फिर अगर उससे ज्यादा लगाए तो 3 रुपए और 9 एमएम. से 12 एमएम. तक 20 रुपए और उसके बाद 4 रुपए । यह चार्जिज तौ सरकार की तरफ से हैं लेकिन जो म्युनिसिपल कमेटी ने वहां के लिए किए हैं,

वे हैं 6 एम.एम. तक 6 रुपए, उसके बाद 2 रुपए, 8 एम.एम से 9 एम.एम. तक 10 रुपए और उसके बाद 3 रुपए और 9 एमएम. से 12 एमएम. तक 12 रुपए और उसके बाद 4 रुपए ।

श्री जगजीत सिंह टिक्का : क्या मिनिस्टर साहब यह बताएंगे कि यह जो वाटर सप्लाई की स्कीम बनाते है! और उसमें कनैक्शन देने के लिए जो सड्कों को तोड़ देते हैं उसको दरुस्त करने के एस्टीमेट्स भी पहले शामिल नहीं किए जाते क्योंकि बहुत से शहरों में यह देखा गया है कि लाइनें तो खिंच गयीं । लेकिन सड़कें टूटी पड़ी रहती है?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : उमके भी हम 50 रुपाए लेते हैं और ऐसी बात नहीं है कि सड़क साथ की साथ ठीक नहीं होती । लाइन डालने के जल्दी ही बाद, हम उसको रिपेयर कर देते हैं ।

श्री मन्शा राम : क्या मन्त्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि आप यह पैसे पहले भरवाते हैं या बाद में भरवाते है?

चौधरी गोबर्धन दास चौहान : यह पैसे तो हम पहले ही लेते हैं ।

चौधरी फूल सिंह कटारियाः क्या मन्त्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे जो रेट्स

आपने बताए हैं, यह तमाम स्टेट के अन्दर एक ही हैं या अलग–अलग कमेटी के रेट्स अलग– अलग हैं?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : मैंने जो रेट्स पहले पढ कर सुनाए थे । वह तो पब्लिक हैल्थ की तरफ से हैं । यह तो मेरे ख्याल में राक ही होंगे बाकी वे (पब्लिक हैल्थ वाले) जानते होंगे कि अलग हैं या एक ही है । म्युनिसिपल कमेटी के रेट्स का जहां तक ताल्लुक है वह अलग–अलग हैं ।

श्री जगजीत सिंह टिकका : क्या मन्त्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि अगर किसी जगह की मिसाल दी जाए कि वहां पर एक साल से ज्यादा पहले की सडक इस वजह से टूटी पड़ी हो, तो क्या उसको ठीक करवा देंगे?

चौधरी गो वर्धन दास चौहान : जरूर करवा देंगे ।

राव दलीप सिंह : क्या मन्त्री महोदय यह बताने की कृ पा करेंगे कि रूरल एरियाज के लिए जो वाटर सप्लाई स्कीम्ज होती हैं, उनमें सरकार कितनी एड देती हैं

श्री अध्यक्ष : यह तो दूसरे महकमे का सवाल है । चौधरी गोवर्धन दास चौहानय सर यह तो पब्लिक हैल्थ से कन्सर्न रखता है ।

लाला रुलिया रामः मन्त्री महोदय ने यह बताया कि वह सड़क की रिपेयर के लिए 50 रुपए चार्ज करते हैं, क्या वे यह बताने की कृपा करेंगे कि ऐसा उन्होंने कितने रोज से किया है?

चौधरी गोवर्धन दास चौहानः यह तो कनीना नोटिफाइड एरिया कमेटी ने किया था ।

श्री धज्जा राम : अभी मन्त्री महोदय ने यह बताया था कि डिफ्रैट प्लेसिज पर डिफैटं रेट्स ले रहे हैं, क्या वे यह बताने की कृपा करेंगे कि इसकी क्या वजह है?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : वजह तो वहां पानी की सप्लाई होना है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि कुरुक्षेत्र और शाहबाद जहां पर कि पानी की सप्लाई बड़ी आराम से और आसानी से हो रही है, रेट्स क्यों बढ़ा दिए गए गए, क्या उनको री–कन्सीडर करेंगे?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : इसके लिए अलग से नोटिस देंगे तो इसका भी जवाब दे दिया जाएगा ।

राव दलीप सिंह : वहां पर जो कॉमन परपज के लिए नलके लगाए गए हैं, वे सिर्फ दो लगाए गए हैं, क्या इनकी गया और ज्यादा करने की कृपा करेंगे?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : अभी तक वहां यह सोचा गया था कि दो से काम चल सकेगा । इसके बाद अगर वहां पर ज्यादा की जरूरत होगी तो और बढ़ा दिए जाएंगे ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या मन्त्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि कामन प्लेस के लिए जो –तलके लगाते हैं, उसके अन्दर खास तौर पर हरिजन और बीकर सैक्शन्ज के मुहल्लों में भी नलके लगाने की प्रोपोजल है?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : तकरीबन सभी ऐसी जगहों पर लगे हुए हैं लेकिन अगर फिर भी आनरेबल मैंबर कहीं बताएगे कि किसी एरसे मुहल्ले में तकलीफ है, तो हम जरूर उस तकलीफ कौ दूर करेंगे ।

चौधरी अमीर चन्द कक्कड़ : क्या मिनिस्टर साहब यह बताने की कृपा करेंगे कि सरकार ने म्युनिसिपल कमेटी को मीटर लगाने के लिऐ कोई. हिदायत दी है?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : यह तो देखकर ही बताया जा सकेगा ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि क्या सिटीज में जो वाटर सप्लाई है उसके मिनिस्टर जुदा हैं और जो रूरल वाटर सप्लाई है उसके मन्त्री जुदा हैं

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : स्पीकर साहब, जहां म्युनिसिपल कमेटीज हैं और जहां की वाटर सप्लाई स्कीम म्युनिसिपल कमेटी चला रही है वह तो म्युनिसिपैलिटी के पास है और जो देहात में वाटर सप्लाई की स्कीम चल रही हैं, वह पब्लिक हैल्थ के पास है ।

राव दलीप सिंहः स्पीकर साहब, अभी तक इस स्कीम पर सात लाख रुपया. खर्च हो चुका है और सात कनैक्शन्ज दिए गए हैं । कोनैक्शन लेने के लिए दो सौ रुपया की सिक्योरिटी रखी गई है क्या मिनिस्टर साहब इस सिक्योरिटी को कम करने की कृपा करेंगे?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : सीकर साहब, सात लाख रुपया खर्च करने के बाद सात कोनैक्शन की बात नहीं है । वाटर सप्लाई स्कीम बनाने के बाद ही उसका कनैक्शन देने की बात आती है कि कितने कोनैक्शन लगते हैं और कितने नहीं । हम जो सिक्योरिटी ले रहे हैं वह तो रिफण्डेबल है ।

श्री हरि सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि वाटर मीटर के लिए जो रेट है वह मन्थली है या ईयरली?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : स्पीकर साहब, रेट तो मन्थली ही है और मीटर के लिए तो पैसा लेते ही हैं ।

Road link to Nawagaon

***1560. Shri Jagjit Singh Tikka :** Will the Minister

for Revenue **be** pleased to state—

(a) whether the Government has taken any decision to construct a road to link Nawagaon in Tehsil Naraingarh; and

(b) if so, the time by which the construction of the said road is likely to be started ?

Revenue Minister (Pandit Chiranji Lal Sharma) :

(a) Yes.

(b) It is not possible to indicate when the work will be started.

Construction of Police Station at Bawani Khera

***1566. Shri Amar Singh :** Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) whether there is any proposal under consideration of the Government to construct Police Station at Bawani Khera in Bhiwani district; and

(b) if so, the time by which the said Police Station is likely to be constructed ?

गृह तथा स्वास्थ्य राज्य मन्त्री (श्रीमती शारदा रानी):

(क) जी, हां ।

(ख) लगभग एक वर्ष ।

श्री अमर सिंहः क्या मन्त्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि इस साल के पीरियड को कम करने की कृपा करेगी?

श्रीमती शारदा रानीः अध्यक्ष महोदया इसकी स्वीकृति 1978–77 के बजट में है, इसलिए कम करने का सवाल नहीं है ।

श्री हरि सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगी कि हरियाणा स्टेट में कितने नयू पुलिस स्टेशन बनाने की तजवीज है और जो पुराने पुलिस स्टेशन हैं उनको कहां शिफ्ट करने की तजवीज है और वह कितने समय में हो जाएगें?

श्रीमती शारदा रानीः जहां तक पुरानों को नए बनाने का सवाल है और कहां शिफ्ट करके ले जाएंगे उसके लिए तो अलग से नोटिस चाहिए । वैसे नए पुलिस स्टे–शन पांच हैं जो हमारे अन्डर कन्सीड्रेशन हैं और उन पर काम शुरू होने वाला है ।

श्री अमर सिंहः क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेगी कि बवानी खेड़ा के पुलिस स्टेशन के लिए कितना रुपया मन्जूर किया गया है और कितनी जमीन एक्वायर की गई हे?

श्रीमती शारदा रानीः इसके लिए चार लाख रुपया मन्जूर हुआ एं । जमीन की ऐक्वीजीशन के बारे में नहीं बता सकती ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या मन्त्री महोदया बताने की कृपा करेंगी कि रोहतक जिले में कितने पुलिस स्टेशन बनाए जा रहे हैं?

श्रीमती शारदा रानी : बहादुरगढ में पुलिस स्टेशन बना रहे हैं ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट): स्पीकर साहब, पुलिस स्टेशन्ज में जौ लाक–अप्स हैं उनकी सैनीटेशन बिल्कुल खराब है (हंसी) क्या मन्त्री महोदया इस तरफ ध्यान देने की कृपा करेंगी?

Mr. Speaker : No please. It is not a supplementary to this question.

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : स्पीकर साहब, अब की बार अब इनको ले जाएंगे तो अच्छी जगह रखेंगे और अच्छा सामान देंगे ।

श्री के ० एन ० गुलाटी : स्पीकर साहब! फरीदाबाद में 15 सैक्टर में स्कूल की बिल्डिंग में पुलिस स्टे शन है । क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि जब वह बिल्डिग कम्पलीट हो जाएगी तो वह बिल्डिंग पुलिस स्टेशन को दे देंगे ताकि वह पहली बिल्डिंग स्कूल के काम आ सके?

Mr. Speaker : Order please. This is quite a separate question.

श्री धजा राम : क्या मन्त्री महोदया बताने की कृपा करेगी कि जो नए पांच पुलिस स्टेशन्ज बनवाने की तजवीज हए वे किन–किन जगहों पर बनाए जा रहे हैं?

श्रीमती शारदा रानी : अध्यक्ष महोदय, वे पांच जगह हैं–सांपला सिटी, सोनीपत, सफीदों, जींद, बहादुरगढ़ । इस प्रकार जींद में दो हो गए हैं ।

श्री बिहारी लाल बाल्मीकिः हसनपुर में पुलिस स्टेशन की बिल्डिंग टूटी हुई है क्या वहां पर नई बिल्डिग बनाने की कृपा की जाएगी?

श्रीमती शारदा रानी : अध्यक्ष महोदय, पुलिस स्टेशन की बिल्डिग का जहां तक सवाल है हमें मालूम है कि बहुत अच्छी कन्डीशन में नहीं है लेकिन अभी काम चलाऊ है । हसमपुर में स्टाफ क्वार्टर्क बन रहे हैं, एक ए०एस०आई० के लिए हैड कांस्टेबल के लिए और नौ कांस्टेबल्ज के लिए ।

श्री हरि सिंहः स्पीकर साहब यमुना के किनारे यू ०पी० का बौर्डर लगता है और यू०पी० की तरफ से लोग स्मगलिंग वगैरह करते हैं । क्या मन्त्री महोदया इस चीज को देखते हुए जमुना के किनारे कोई पुलिस स्टेशन बनाने की तजवीज पर गौर करने की कृपा करेंगी ।

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

Jawahar Lal Nehru Canal

***1580. Chaudhri Phul Singh Kataria :** Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) the total acreage of land likely to be irrigated by the Jawahar Lal Nehru Canal in District Mohindergarh and Tehsil Jhajjar of District Rohtak on its completion; and

(b) the time by which the Jawahar Lal Nehru Canal is likely to be completed and start providing water for irrigation purposes ?

State Minister for Irrigation and Power (Sardar Harmohinder Singh Chatha) :

(a) Total acreage of land likely to be irrigated by Jawahar Lal Nehru Canal in :—

Jawahar Lal Nehru Canal	Culturable Commanded area (in)
Distt. Mohindergarh	506488
Tehsil Jhajjar of Distt. Rohtak	88000

(b) The time of completion cannot be indicated at this stage. The water for irrigation is likely to be made available in 1976.

राव बंसी सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस कैनाल से महेन्द्रगढ़ और तहसील नारनौल का कितना एरिया सैराब होगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठाः स्पीकर साहब, मेरे पास डिस्ट्रिक्ट वाइज फिगर हैं– रोहतक का ग्रास एरिया एक लाख दस हजार एकड़, भिवानी डिस्ट्रिक्ट का 28 लाख 800 एकड़ और महेन्द्रगद डिस्ट्रिक्ट का 6 लाख 33 हजार 110 एकड़ ।

चौधरी मनफूल सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस नहर पर कुल कितनी लागत आएगी?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : जाकर साहब, इस पर तकरीबन 40 करोड़ रुपया खर्च आएगा । अब तक साढ़े सात करोड़ रुपया लग चुका है । बरसात होने से पहले जब हम पानी देंगे उस वक्त तक तकरीबन इस पर 11– 12 करोड़ रुपया खर्च हो जाएगा ।

श्री गुलाब सिंह जैन : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस नहर में कितने कयूसिंक पानी चलेगा और वह पानी कहां से आएगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठाः स्पीकर साहब, जवाहर लाल नेहरू कैनाल की कैपेसिटी 3300 क्यूसिक पानी की है । एक तो इसमें रावी–ब्यास का पानी आएगा जब हमारा हिस्सा मिल जाएगा । जमुना का सरप्लस पानी इसमें चलेगा और वर्षा का

पानी इसमें होगा । एक बात मैं साफ कर दूं कि किसी इलाके का पानी काट कर नहीं दिया जाएगा और हमें उम्मीद है कि जितनी देर रावी–व्यास का पानी हमें नहीं मिलता, 90 दिन तकरीबन हम जरूर वर्षा का पानी दिया करेंगे ।

श्री धजा राम : मन्त्री महोदय ने इरीगेशन का एरिया भी बताया है और इस पर जो लागत आएगी 40 करोड़ रुपया वह भी ठीक है । क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इससे रेवैन्यू स्टेट को कितना मिलेगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठाः रेवैन्यू की फिगर तो मेरे पास नहीं है । बहरहाल यह जो नहर बनाई गई है, यह रेवैन्यू के लिए ही नहीं बनाई गई है बल्कि लोगों के कष्ट देख कर उनको दूर करने के लिए बनाई गई है ।

मलिक सतराम दास बसरा : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस नहर से जो सिंचाई होगी उसके आबियाने का रेट क्या होगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : वही रेट होंगे, जो बाकी स्टेट में होंगे. ।

राव बंसी सिंह : क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस बरसात के पानी से डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ़ का कितना एरिया सैराब होगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, इस साल हमारा विचार है कि इस नहर में 500 क्यूसिक पानी चलाएंगे । पांच फीडर जवाहर लाल नेहरू में चलेंगे महेन्द्रगढ़ कैनाल में तीन फीडर चलेंगे । इस साल हम पांच सौ क्यूसिक पानी ही चला पाएगे ।

श्री हरि सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस नहर की टेल कल पर होगी?

सरदार हरमोहिदर सिंह चट्ठा : इसकी टेल वहां होगी जहां 571 कींट की ऊंचाई है ।

चौधरी प्रभु राम : स्पीकर साहब, मेरे हल्के में नहर जमनगरबी जाती है और उर नहर से आठ सौ एकड़ को पानी दिया जा रहा है, जबकि 3400 एकड़ को पानी देने की उस की कैपसिटी है । क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि खारा पानी कब तक दिया जाएगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, प्रभु राम जी के हल्के की अगर कोई तकलीफ छउ तो हम बैठ कर बात कर लेंगे और उसको दूर करने का यत्न करेंगे ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि रावी–व्यास से जो पानी मिलेगा उसमें से कुछ पानी तो भाखडा सिस्टम में जाएगा और बाकी के डिस्ट्रीब्यूशन का क्या इन्तजाम है?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा: यह पानी कामन पूल में आएगा । डिस्टिब्यूशन की बात तब होगी जब हमें पानी मिल जाएगा ।

चौधरी रिजक राम : क्या मन्त्री महोदय यह फरमाएंगे कि जवाहर लाल नेहरू कैनाल पर कितने पम्प लगेंगे और उनकी हाइट कितनी होगी और कितनी वहां पर बिजली खर्च होगी?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : रेवैन्यू की फिगर तो मेरे पास नहीं है । बहरहाल यह जो नहर बनाई गई है, यह रेवैन्यू के लिए ही नहीं बनाई गई है बल्कि लोगों के कष्ट देख कर उनको दूर करने के लिए बनाई गई है ।

मलिक सतराम दास बसरा : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस नहर से जो सिंचाई होगी उसके आबियाने का रेट क्या होगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : वही रेट होंगे, जो बाकी स्टेट में होंगे. ।

राव बंसी सिंह : क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस बरसात के पानी से डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ़ का कितना एरिया सैराब होगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, इस साल हमारा विचार है कि इस नहर में 500 कैनाल पानी चलाएंगे । पांच

फीडर जवाहर लाल नेहरू में चलेंगे महेन्द्रगढ़ कैनाल में तीन फीडर चलेंगे । इस साल हम पांच सौ क्यूसिक पानी ही चला पाने ।

श्री हरि सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस नहर की टेल कहां पर होगी?

सरदार हरमोहिदर सिंह चट्ठा : इसकी टेल वहां होगी जहां 571 कींट की ऊंचाई है।

चौधरी प्रभु राम : स्पीकर साहब, मेरे हल्के में नहर जमनगरबी जाती है और उर नहर से आठ सौ एकड़ को पानी दिया जा रहा है, जबकि 3400 एकड़ को पानी देने की उस की कैपसिटी है । क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि खारा पानी कब तक दिया जाएगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, प्रभु राम जी के हल्के की अगर कोई तकलीफ छउ तो हम बैठ कर बात कर लेंगे और उसको दूर करने का यत्न करेंगे ।

चौधरी मेहर चन्द: क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि रावी–व्यास से जो पानी मिलेगा उसमें से कुछ पानी तो भाखडा सिस्टम में जाएगा और बाकी के डिस्ट्रीब्यूशन का क्या इन्तजाम है?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : यह पानी कामन पूल में आएगा । डिस्ट्रीब्यूशन की बात तब होगी जब हमें पानी मिल जाएगा ।

चौधरी रिजक राम : क्या मन्त्री महोदय यह फरमाएंगे कि जवाहर लाल नेहरू कैनाल पर कितने पम्प लगेंगे और उनकी हाइट कितनी होगी और कितनी वहां पर बिजली खर्च होगी?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, हमारे विचार से वहां पर 140 पम्पिग स्टेशन बनेंगे और जहां तक हाइट का ताल्लुक है इसके लिए जमीन की लेवलिग पर बात बनती है क्योंकि कहीं पर कोई पम्प 3० फुट की ऊंचाई पर पानी उठाता है, कहीं पर 2० फुट की ऊंचाई पर और कहीं पर 1० फुट की ऊंचाई पर पानी उठाता है । बिजली की कन्जम्पशन के बारे में अभी मैं कुछ नहीं कहू सकता, लेकिन यी जरूर कहूंगा कि चाहे बिजली जितनी भी खर्च आए वहां पर 1 4० पम्पिंग स्टेशन लगेंगे ।

राव बंसी सिंह : स्पीकर साहब, 571 फुट की ऊंचाई पर पंडित जवाहर लाल नेहरू कैनाल पर जो टेल बनाया है, क्या मिनिस्टर साहब उस स्थान का नाम बताने की कृपा करेंगे?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, इस बारे में अभी मैं डैफिनेट नहीं बता सकता ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग: क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस नहर के बनने से कितना उत्पादन बढ़ जाएगा?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब इस इलाके की हालत यह है कि वहां पर पानी की पूरी यूटिलाइजेशन पांच, छः सात सालों मैं हो सकेगी और बहरहाल उस नहर के ऊपर खर्चे और आमदन का अ तर लगाया गया है कि सरकार 4० करोड़ का जितना खर्चा करेगी, इससे दो तीन साल के अन्दर–अन्दर और ज्यादा प्रोडक्शन हो जाएगी ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या मंत्री. महोदय बताएंगे कि. सबसे पहला पम्प किस ` पर लगाया जाएगा, उसका नाम क्या है?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब आनरेबल मैम्बर जो नक्शे बने हुए हैं, उनसे देख सकते हैं । वैसे इनके इलाके में तो यह जवाहर लाल नेहरू कैनाल पिछले दो सालों से चल रही है ।

श्री हरि सिंह : अभी मन्त्री महोदय ने बताया कि उस नहर पर 14० पम्प लगाए जाएंगे । क्या वे पम्प अपने देश से ही अवेलेबल होगें या कि बाहुयरू से मंगाए जाएंगे?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, पहले हम बाहर से पम्प खरीदा करते थे । अब एम०आई०टी० सी० पम्प बनाता है । वैसे हम यह कोशिश करेंगे कि हमारे हरियाणा के ही बने हुए सारे पम्प लगाए जाए ।

Tehsildars Sales (Rehabilitation)

***1586. Chaudhri Shiv Ram Verma :** Will the Minister for **Revenue be** pleased to state—

(a) the total number of Tahsildars (Sales) Rehabilitation in the State;

(b) the total number of Tahsildars (Sales) Rehabilitation out of those referred to in part (a) above posted at Karnal during the period from Ist April, 1970 to 31st March, 1973, together with their names and the period of stay of each of them at Karnal;

(c) whether any case of irregular sale or under-sale of evacuee agricultural lands/houses at Karnal conducted by the Tehsildars Sales (Rehabilitation) have come to the notice of the Government during the period referred to in part (b) above;

(d) whether the Government have received any complaint against the Tahsildars Sales (Rehabilitation) functioning at Karnal during the period from Ist April, 1970 to 31st March, 1973 of any irregular or under-sale of evacuee agricultural lands/ houses; and

(e) if answer to parts (c) and (d) above is in the affirmative, the estimated loss suffered by the Government as a result of irregular or under-sale of evacuee agricultural lands/ho uses conducted by the said Tahsildars at Karnal together with the action taken or proposed to be taken against the said officers ?

Revenue Minister (Pandit Chiranji Lal Sharma) :

(a) At present, six Tahsildars (Sales) are in position and one post is vacant.

(b) Three.

1. Shri M.L. Chopra 1-4-1970 to 14-4-1970

2. Shri S.C. Seth 20-4-70 to 23-1-73

3. Shr Rajind r Paul 25-1-73 to 31-3-73

(c) Yes.

(d) Yes.

(e) The cases are either under enquiry or are pending with the quasi-judicial tribunals for decision. It is not possible to indicate the loss suffered by the Government till these enquiries or cases are completed. The question of taking any disciplinary action against the Tahsildars at this stage does not arise.

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि इनके फाइनल होने मे कितना वक्त लगेगा?

Pandit Chiranji Lal Sharma : Cases are pending with various authorities, Sir. It is for them to decide the cases. However, I will issue instructions to decide the cases **as** early as possible.

श्री जगजीत सिंह टिक्का क्या मिनिस्टर साहब बताएंगे कि ये केसिज किसी कोर्ट में पैंडिंग हैं या कि आपके

महकमें के एक्जै–क्टिव आफिसर्ज के पास पैंडिंग हैं? अगर एक्जैक्टिवं आफिसर्ज के पास पैंडिंग हैं तो इन केसिज का फैसला कब तक हो जाएगा?

Pandit Chiranji Lal Sharma : These are quasi-judicial.

मलिक सतराम दास बसरा : अभी मिनिस्टर साहब ने बताया है कि इनक्वायरी पैंडिंग है । जिन तहसीलदारों के खिलाफ केस पैंडिंग हैं, क्या ऐसे तहसीलदारों को उस स्थान से बदलने की कृपा की जाएगी जिससे कि वह इनक्वायरी में बाधा न डाल सकें?

Pandit Chiranji Lal Sharma: As I have already submitted, Sir, the question of taking any action against them does not arise if the appellate authorities put a premium of confirmation on the findings of the Tahsildars.

Chaudhri Phool Chand (Mullana) : May **I** ask the Hon`ble Minister as to wh ther it is in his knowledge that the work with the Rehabilitation Department is not so much and considering this point, is the Minister

willing to merge this Depatrment with the Revenue Department ?

Pandit Chiranji Lal Sharma : This question was got examined by me, Sir. **I** also thought that Revenue and Rehabilitation Departments be amalgamated. But then it was considered desirable not to do so in the interest of the Department itself.

राव बंसी सिंह : स्पीकर साहब, यह जो छः तहसीलदार बताए गए हैं, इनके हैडक्वार्टज कहां कहा हं?

पडिंत चिरंजी लाल शर्मा : स्पीकर साहब जींद । रिवाडी और सोनीपत में तो नायब तहसीलदार हैं । बाकी 11 जिलों में सिरसा को छोड्कर, सभी हैड–क्वार्टर्ज पर तहसीलदारज हैं ।

चौधरी अमीर चन्द कक्कड़ : स्पीकर साहब, क्या मिनिस्टर साहब बताएंगे कि इस डिपार्टमैंट से सरकार को कितना रेवैन्यू आता है?

Pandit Chiranji Lal Sharma : It is a question which needs notice.

श्री जगजीत सिंह टिक्का: स्पीकर साहब, अभी मिनिस्टर साहब ने कहा कि इस वक्त कोई एक्शन का सवाल नहीं है जैसे कहते हैं कि तो मैं पूछना चाहता हूं कि क्या ट्रांसफर भी एक्शन में शामिल हो जाती है, वन थिंग, दूसरी बात यह है कि क्या और जगहों से भी कोई शिकायतें आई हैं या कि यहीं से ही आई हैं?

Pandit Chiranji Lal Sharma : The Tahsildar at Karnal, Shri Rajinder Paul, **I** must say, Sir, was one of my best Tahsildars in the Department. He has been promoted to H.C.S. and the cases of Karnal district are involved. Therefore, the question of transfer does not arise. He was transferred to Revenue and now has been selected as H.C.S. Officer.

श्री प्रेम सुख दास : क्या मिनिस्टर साहब बताने की कृपा क रेंगे ' कि सिरसा में! कब तक रिहैबलीटेशन का नायब तहसीलदार लगा दिया जाएगा?

Pandit Chiranji Lal Sharma : This will he done, Sir, as early as possible.

तारांकित प्रश्न सं० 1443

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी दल सिंह, सदन में उपस्थित नहीं थे?

तारांकित प्रश्न सं० 1414

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी राम लाल वधवा, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

Sugar-Cane

***1520. Shri Om Parkash Garg :** Will the Minister for Agriculture be pleased to state—

(a) the total quantity of sugarcane produced in the State during the current season; and

(b) the target fixed by the Government for its production during the period mentioned in part (a) above ?

State Minister for Agriculture and Revenue (Chaudhri Surjit Singh Mann) :

Year	Production of Sugarcane

in lac

		Tones (in sugarcane)
(a)	1975-76 (estimated)	71.00
(b)	1975-76	71.20

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मिनिस्टर साहब बताएसे कि मिलों में गन्ना लेने का प्रोसीजर क्या है.

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, गन्ना लेने का प्रोसीजर तो पहरने वाला है । जिस तरह पहले लेते थे, उसी तरह से इस साल भी ले रहे हैं ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : स्पीकर साहब, मैं आपकी मारफत मिनिस्टर साहब से यह पूछना चाहता हूं किं पड़ता सिस्टम है या कि नया बांड सिस्टम हे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, यमुनानगर में तो पड़ता सिस्टम है और, और जगहों में कोई डिफिकल्टी नही है ।

श्री धजा राम : स्पीकर साहब, क्या मिनिस्टर साहब, जैसा कि उन्होंने गन्ने की 71 लाख टन पैदावार बताई है, यह बताने को कृपा करेंगे कि स्टेट में इस वक्त कितनी शूगर मिले हैं और उनकी क्रशिग कैपेसिटी कितनी है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब सउ–कारी मिल्ज तो इस वक्त हमारे पासे तीन हैं और उनकी क्रशिंग कैपेसिटी सवा 6 हजार टन पर–डे है, चार हजार सरस्वती मिल की, 1. 25 पानीपत मिल की और 12 रोहतक गिल की ।

मलिक सतराम दास बसरा : मिनिस्टर साहब बताएंगे कि बांडिंग के समय पर 80 और 100 क्विटल प्रति एकड़ की जो रेशो लगाई जाती है, क्या यह दुरुस्त है कि क्या गन्ना इससे ज्यादा नहीं होता? क्या जमीदारो को धोखादेने के लिए यह लगाई जाती है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : पोजीशन यह है कि इस समय यमुनानगर की जो मिल है, उस एरिया के अन्दर तो थोड़ा सा गन्ना सरप्लस है, वैसे तो आए साल स्म गन्ना लेते हैं, हमारी मिलें चलती हैं और जब तक हम सारा गन्ना यश न कर लें, हमारी मिल्ज चलती रहती हैं ।

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि इन तीन मिलों में पिछले साल किस–किस भाव पर गन्ना लिया गया और इस साल किस किस भाव पर गन्ना लिया गया है? दोनों सालों की अलग–अलग डिटेल बताए?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, गवर्नमैंट की प्राइस पर पिछले साल यमुनानगर में हमने जिस भाव पर गन्ना लिया था, वह इस प्रकार है –

पहले लिया था 8 50 रुपए प्रति क्विंटल्न

उसके बाद 2 9— 10— 74 को 13.75 रुपए प्रति क्विंटल

16— 5— 75 को 12.75 रुपए प्रति क्विंटल

23— 5—75 को 12.50 रुपए प्रति क्विटल

1— 6—75 को 11.25 रुपए प्रति क्विटल

8— 6—75 को 10.75 रुपए प्रति क्विंटल

16—6—75 को 11. 50 रुपए प्रति क्विंटल

23—8—75 को 10.50 रुपए प्रति क्विटल

और इस साल लिया 11 रुपए प्रति क्विटल और पानीपत सरकारी मिल मैं हमने जब तक मिल चली है, गन्ना 15—11—74 से 11 रूपए प्रति क्विंटल के हिसाब से लिया है और इस साल 11 रुपए प्रति क्विटल के भाव से लिया है । इसी प्रकार रोहतक की शूगर मिल के अन्दर किया गया है । हमने पिछले साल 15.25 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से गन्ना खरीदा ओर इस साल 11 रुपए प्रति क्विटल के भाव से खरीदा गया ।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : जैसे कि मन्त्री महोदय ने अभी बताया कि यमुना नगर में पड़ता सिस्टम है तो क्या जिन लोगों ने टाइम न होने की वजह से गुरदासपुर बोरर नहीं बाँड

नहीं भरे और उनका पड़ता भी दर्ज है तो क्या उनका गन्ना खरीदा जाएगा?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : अगर तो डिजिजड गन्ना है तो उसे तो कोई भी लेने को तैयार नहीं होगा । दूसरे के लिरा हम कोशिश करेंगे ।

राव बसी सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि पिछले साल गन्ना 14 रुपए क्विटल लिया गया था और अब की बार 11 रुपए क्विटल लिया जा रहा है, यह फर्क क्यों है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यह प्रोवीजनल रेट है । अभी यू ० पी०के एकट का कोई फैसला नही हुआ है । जिस दिन. उनका फैसला हो जाण्गा हम भी उसी के अनुसार फैसला कर देंगे ।

श्री आम प्रकाश गर्ग : क्या मंत्री महोदय बताएंगे कि गन्ने का बौंड भरने के लिए सिर्फ दस दिन मिले, 10 अक्तूबर से 20 अक्तूबर तक, और यमुनानगर में आपने पड़ता सिस्टम किया है, तीन मात्र के लिए । पड़ता मिल में मौजूद है, लेकिन किसानों का गन्ना नहीं लिया जाता तो क्या गन्ना लिया जाएगा?

चौधरी' सुरजीत सिंह मान : आप हमें कोई स्पैसिफिक केस बताए, अगर ऐसी बात होगी तो उसे ठीक करने की हम पूरी कोशिश करेंगे ।

चौधरी मनफूल सिंह : अभी मन्त्री महोदय नें बताया कि यु०पी० का रेट अभी फिक्स नहीं हुआ और हरियाणा सरकार अभी 11 रुपए प्रोवीजनल रेट दे रही है । क्या मन्त्री महोदय की नोलेज में यह बात है कि पांजब ने 14. 25 रुपए का रेट फिक्स किया हुआ है यहां क्यों नहीं किया जा सकता?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : पंजाब ने किया है, यह ठीक है लेकिन हम यू०पी० के बाद कन्सीडर करेंगे ।

चौधरी रिजक राम : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि जो रिकवरी की रेशो है वह पंजाब की निस्बत हुमारे हरियाणा के मिलों की और खासतौर से यमुना नगर के मिल की ज्यादा है या कम?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : अध्यक्ष महोदय, यमुना नगर यूरिया में कुछ रिकवरी कम छउ । हमारी रिकवरी पिछले एक दो सालों में रोहतक में सब से ज्यादा रही छैं, उससे कम पानीपत में और उससे कम यमुना नगर में । पंजाब से हमारी रिकवरी कु छ ज्यादा है । जहां तक गन्ने के भाव का सम्बन्ध है हमारी अब तक यह परम्परा रही है कि जो भाव यू०पी० देती है वही कीमत हम हरियाणा में देते हैं । पंजाब जो रेट देता है उस हिसाब से हमारी मिलों में भाव नहीं रहा, यू०पी का जो भाव होता है, वही भाव हम हरियाणा में देते हैं । यू ०पी० में भाव अभी निश्चिंत नहीं हुआ क्योंकि वहां पर अभी पापुलर गवर्नमैंट नहीं थी,

अब पापुलर गवर्नमैंट बन चुकी है और मुझे उम्मीद हैकि वहां हफ्ते दस दिन में फैसला हो जाएगा और वही कीमत हम देंगे ।

मलिक सत राम दास बत्तरा : क्या मन्त्री महोदय तीनों मिलों की अलग–अलग पिछले सालों की क्रशिंग कैपेसिटी बताने का कष्ट करेंगे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यमुना नगर की पिछले साल 1. 52 थी और रोहतक और पानीपत की मेरे पास अप–टू–डेट है, वह क्रमशः 9 53 और 9.32 है ।

चौधरी शिवराम वर्मा : जैसे मन्त्री महोदय ने अभी पिछले साल के रेट पढ़कर सुनाए तो जो को–आप्रेटिव शूगर मिल हैं, उनमें तो रेट ज्यादा मिला और यमुनानगर की मिल में कम मिला । यह लुटाई कब तक चलती रहेगी, यह बन्द होगी या नहीं क्योंकि इसके असर से इस साल को–आप्रेटिव मिलों ने भी भाव कम कर दिए हैं । तो क्या इस चीज पर विचार किया जाएगा कि किसानों को ज्यादा रेट दिया जाए?

श्री बनारसो दास गुप्त : यमुना नगर मिल का कोई प्रश्न पैदा नहीं होता । जो को–आप्रेटिव सैक्टर में मिलें हैं उनका मुनाफा कमाने का उद्देश्य नही होता, उसमें जितना भी मुनाफा होता है वह शेयर होल्डर्ज में किसी न किसी रूप में तकसीम कर दिया जाता है, गन्ने की प्राइस के साथ या और किसी रूप में । पानीपत में ऐसा किया गया है, उनके मुनाफे की रकम से उनके

शेयर भी खरीदे गए हैं, ताकि वे मिल के शेयर होल्डर भी बन सकें । इसलिए जिस को–आप्रेटिव सैक्टर में ज्यादा मुनाफा होता है वहां ज्यादा भाव दिया जाता

श्री के०एन०गुलाटी : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि जहां गन्ने की पैदावार कम होती हए वहां मित्र वाले सरकार के. दबाव से सारा गन्ना ले जाते हैं तो क्या किसान जितना देना चाहे उतना विद पलीयर ले लेंगे?

श्री बनारसी दास गुप्त : यह तो भारत सरकार की नैशनेलाइजेशन की नीति है ।

चौधरी रिजक राम : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि जैसे यमुना नगर मिल के अलग– अलग भाव रहे हैं तो क्या पानीपत और रोहतक के मिलों के भाव भी बढ़ते और कम होते रहे है

चौधरी सुरजीत सिंह मान : पानीपत और रोहतक में एक ही जैसे रहे हैं ।

चौधरी पीर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि यह जो गन्ने के भाव घटते रहे तो क्या उससे चीनी के भाव भी सस्ते हुए?

कृषि मन्त्री (कर्नल महा सिंह) : भाव तो एक जैसे ही रखे गए थे लेकिन जब गर्मी का मौसम आ गया तो पानीपत और

रोहतक में गन्ना नहीं होता था यमुना नगर में होता था, उस वक्त भाव में फर्क करना पडा था ।

श्री गिरीश चन्द्र जोशी : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि चूंकि हमारे गन्ने का भाव यू ०पी० के बराबर होगा तो जब इसका फैसला होगा क्या यह उसी डेट से दिया जाएगा जब से ये मिले चलीं?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : उसी डेट से दिया जाएगा ।

श्री हरि सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि शुगर मिल 'के एरिया में जमींदार को कोल्हू और क्रशर लगाने की इजाजत है या नहीं?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : कोल्हू तो आप शुगर मिल के बाहर भी लगा सकते हैं लेकिन क्रशर के लिए यमुना नगर के मिल के लिए दस मील का एरिया रखा हुआ हद कि मिल के दस मील के एरिया में कोई नहीं लग सकता । जो पहले लगे हुए हैं, उनकी कैपेसिटी बढाने के लिए भी इजाजत देने के लिए तैयार हैं ।

लाला रुलिया रामः क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि पानीपत के मिल का पिछले साल साढे चौदह रुपए भाव था तो क्या वह मुनाफे में रहा या नुक्सान में?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : मुनाफे की बात तो इस सवाल से अराइज नहीं होती वैसे फिर भी मैं आपको बता दूं कि मुनाफा रहा है ।

चौधरी रिजक राम : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि जो कोल्हू लगाने के लिए 10 मील के एरिए की पाबन्दी है तो क्या उस छुरिए के लिए मिल मालिक की जिम्मेदारी है कि वह उस एरिया का गन्ना लाजमी तौर पर खरीदे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : कोल्हू तो लगा सकते हैं, क्रशर नहीं लगा सकते ।

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या सरकार इस बात पर विचार करेगी कि यमुना नगर के मिल को को–आप्रेटिव तौर पर मिल बना दिया जाए ताकि किसानों की लुटाई बंद हो जाए?

श्री बनारसी दास गुप्त : अभी ऐसी कोई बात विचारा–चीन नहीं है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग क्या मन्त्री महोदय बताएने कि जिनका पड़ता जमा है और वे टाइम की कमी की वजह से बांड नहीं भर सके क्या उनका केस कंसीडर करेंगे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : कोशिश करेंगे ।

चौधरी रिजक राम : मुख्य मन्त्री जी ने अभी बताया कि हरियाणा. की गन्ना मिलों के जो भाव हैं, वे यू०पी० के साथ

मुकरर्र हैं यानी जो उनके भाव होंगे वही हम देंगे तो क्या वे फरमाएंगे कि पिछले साल यूपी. के मिलों के क्या भाव थे?

कर्नल महा सिंह : यूपी. में भी अलग–अलग रेट हैं । एक ईस्टर्न यू०पी० के हैं, एक सैन्ट्रल यू०पी० के हैं और एक वैस्टर्न यू ०पी० के हैं । वैस्टर्न यू ०पी० के भाव सबसे ज्यादा होते हैं और वैस्टर्न यु० पी० से हमारा लगाव है । पिछले साल से पहले लगातार हम 75 पैसे कम भाव देते रहे हैं, लेकिन इस साल वही देंगे, जो वैस्टर्न यू०पी० में होंगे ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि गन्ने का उत्पादन ज्यादा होने की वजह से जिला कुरुक्षेत्र में कोई नया मिल लगाने की तजवीज है?

चौधरी सुरजीत सिंह मानः जिला कुरुक्षेत्र में लगाने की कोई तजवीज नहीं है, हम करनाल में एक लगा रहे है और शाहबाद तथा पलवल में लगाने की तजवीज है ।

श्री धजा राम : अभी कर्नल साहब ने ईस्टर्न और वैस्टर्न यू०पी० के रेट्स के बारे में बताया कि वहां अलग–अलग रेट्स थे और हरियाणा में वैस्टर्न यू ०पी० का रेट दिया गया हए, क्योंकि हमारा एरिया उस इलाके के साथ लगता है लेकिन मैं अर्ज करता हू कि यह अलग– अलग भाव की प्राब्लम इसी साल ही पैदा हुई है, लास्ट ईयर तो यू ०पी० में पू आउट गन्ने का भाव 14 रुपए 25 पैसे रहा है । तो क्या वजीर साहब बताएगे कि जब यमुना

नगर का एरिया यू०पी० के साथ लगता है, तो पिछले साल यू ०पी० वाला रेट क्यों नहीं दिया गया और वहां पर कम रेट्स क्यों रखे गए?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : पोजीशन यह है कि यमुना नगर की मिल चार महीने पानीपत और रोहतक की मिलों से फालतू चली है । जैसे–जैसे गरमी ज्यादा पड़ती जाती है, शीरा ज्यादा बनता है और शूगर की रिकवरी कम हो जाती है । तो उस वक्त रिकवरी के हिसाब से प्राइस दी है ।

मलिक सत राम दास बसरा : क्या वजीर साहब बताएंगे कि रोहतक शूगर मिल एरिया में गन्ने की पैदावार कितनी है और मिल क्रशिंग कैपेसिटी कितनी है और अगर गन्ना फालतू रहता है, तो उसे पेलने के क्या उपाय किए जा रहे हें?

श्री बनारसी दास गुप्त : यह बात तो स्पष्ट है कि जितना गन्ना हमारे पास पैदा होगा उतनी क्रशिंग कैपेसिटी हमारी नहींहै । इसलिए यह कर सकते हैं कि बाकी गन्ने का गुड़ बना सकते हैं और दस मील के एरिया के बाहर क्रशर लगा सकते हैं और वहां गन्ने को पेसै सकते हैं ।

डाक्टर ओम प्रकाश शर्मा : क्या वजीर साहब बताएंगे कि सरस्वती शूगर मिल एरिया सैडी है और जब वहां पर गन्ने में पानी की रेशों कम हुई और शूगर कन्टैंट्स बढ़े तो रेट कम न

करके बढ़ना चाहिए था तो यह रेट कम क्यों दिया गया जब कि शूगर कन्टैट्स बढ़ गए?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : बढ़े कहां? मैंने अर्ज किया है कि जैसे जैसे गरमी पड़ती है, शीरा ज्यादा बनता ' है और चीनी की परसैटेज कम हो जाती है, इसकी वजह से रेट कम किया है ।

श्री जगजीत सिंह टिक्का : क्या वजीर साहब बताएंगे कि पिछले साल शीरे का भाव एक रुपया क्विटल रखा था और इस साल 8 रुपए रखा है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : अभी तक हमने वही रखा हुआ है ।

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या वजीर साहब बताएंगे कि यह गन्ने का भाव डी.डी. पुरी की वजह से कम रखा हुआ है?

Mr. Speaker : Order please. No names to be introduced please.

चौधरी शिव राम वर्मा : मैं जानना चाहता हूं कि बजाय यू०पी० के रेट के हिसाब से यमुना नगर शूगर मिल एरिया में रेट रखने के, जब हम पंजाब के साथ रहे हैं और ज्यादा पंजाब के साथ ही लगते हैं, पंजाब के रेट के साथ यहां का रेट जोड़ने का प्रयत्न करेंगे?

श्री बनारसी दास गुप्त : यह बात बिल्कुल निराधार है कि किसी व्यक्ति विशेष की वजह से कम रेट रखा गया है । तमाम चीजों का हिसाब लगाकर गन्ने का रेट निश्चित किया जाता है । जैसा कि मैंने पहले निवेदन किया है कि जितनी हमारी केन ग्रोईंग बैल्ट है, वह वैर्स्टन यू०पी० के साथ लगती है इसलिए जो वहां पर भाव निश्चित होता है, उसी आधार पर यहां भी निश्चित कियां जाता है । यहां न पूरी का सवाल है, न सरस्वती शूगर मिल का सवाल है और न ही किसी व्यक्ति विशेष का सवाल है ।

Buses allotted to Naraingarh Sub-Depot

***1561. Shri Jagjit Singh Tikka :** Will the Minister for Transport be pleased to state-

(a) the total number of buses allotted to Naraingarh sub-depot of Haryana Roadways;

(b) the year-wise model of each of the buses. in the said sub-depot;

(c) the total number of cases of breakdown of the buses of the said sub-depot which occurred since 1st April, 1975 to-date; and

(d) the time by which the old model buses are expected to be replaced by the new model buses in the said sub-depot ?

शिक्षा तथा परिवहन राज्य मन्त्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) :

(क) 21

(ख) माडल बसों की संख्या

1975 3

1974 1

1973 3

1971 3

1970 10

1969 1

(ग) 117 (1 – 4 – 75 से 7– 1 – 78) (घ) पुरा नी बसों को उनकी निर्धारित आयु समाप्त होने पर ही बदला जाता है । गाड़ियों को निम्न शडयूल के अनुसार बदला जाएगा ।

मास / वर्ष जितनी बसों की तबदीली की जानी है. ।

अप्रैल, 76 1

मई , 76 1

सितम्बर,76 3

अक्तुबर, 76 6

जुलाई, 77	3
अगस्त, 81	1
अक्तूबर,81	2
अक्तूबर,82	1
अक्तूबर,83	2
नवम्बर, 83	1

श्री जगजीत सिंह टिक्का : क्या वजीर साहिबा बताएगी कि जब 1989 से पुराना माडल इनमें नहीं है तो फिर हमारे यहां इतने ब्रेक डाउन– क्यों हुए और क्या इन ब्रेक डाउन्ज को बन्द किया जाएगा ताकि वहां लोगों को तकलीफ न हो?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, वैसे ब्रेक डाउन कोई ज्यादा नहीं हैं, महीने में केवल 12 की एवरेज बनती है और ये भी ज्यादातर इंजन की खराबी की वजह से हुए हैं, या डीजल की खराबी की वजह से हुए हैं क्योंकि कई बार डीजल में पानी मिला हुआ होता है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या कबीर साहिबा बताएंगी कि एक बस की कितनी लाइफ होती है और कितने समय के बाद उसे बदलते हें?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : जैसे कि पहले भी कई बार बताया जा चुका है आठ साल बस की लाइफ होती है ।

श्री के०एन० गुलाटी : क्या वजीर साहिबा बताएंगी कि पिछले साल गुड़गांव डिपो को कितनी बसें अलाट हुई और उन में से कितनी वल्लभगढ़ु सब–डिपो को दी गई?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : यह सवाल गुड़गांव डिपो के बारे में नहीं है नारायणगढ के बारे में है । इसके लिए सैप्रेट नोटिस दें ।

राव जैसी सिंह : क्या वजीर साहिबा बताएगी कि उन्होंने जो फरमाया कि पानी मिला डीजल मित्रता है तो यह पानी मिला डीजल कहां से आता है और जो ऐसा डीजल सप्लाई करते हैं, उनके खिलाफ क्या ऐक्शन लिया गया है?

(उत्तर नहीं दिया गया)

श्रीमती चन्द्रावती : क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि यह जो उन्होंने आठ साल बस की लाइफ बताई है यह माइलेज के हिसाब से बताई है या बस वर्कशाप में खड़ी हुई का हिसाब लगा कर बताई है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : गाड़ी खड़ी करने के लिए नहीं मंगाई जाती है रोड पर चलाने के लिए मंगाई जाती है और उसी हिसाब से लाइफ बताई है ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या वजीर साहिबा बताएंगी कि यह जो स्टील बाडी की बस बनी है उसकी उमर कितनी है और जो पहले वाली बाडी की बस है उसकी कितनी हु?

श्रीमती प्रसन्नी देवी: यह बस तो एक साल से चालू हुई है । बस की लाइफ का दारोमदार ज्यादातर इंजन पर होता है ।

श्री जगजीत सिंह टिक्का : क्या वजीर साहिबा बताएगी कि यह जो उन्होंने बस की उमर बताई है यह ईयर्ज के साथ–साथ माइलेज कवर करने के हिसाब से भी बताई है कि इतनी माइलेज करने के बाद कन्डैम होगी?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : यह सारी बात देख कर ही बताई है । हमारी बस की एवरेज माइलेज रोज की 240 और 250 किलोमीटर की पड़ती है और इसी एवरेज का हिसाब लगाकर यह उमर रखी है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या वजीर साहिबा बताएगी कि आठ साल की उमर के बाद भी अगर कोई बस अच्छी हो तौ चलाते हैं या बदल देते हैं?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : आम तौर पर आठ साल से ज्यादा बस नहीं चलती है ।

श्री अमर सिंह : क्या यह बताया जाएगा कि नारायणगढ सब–डिपो के लिए 1976–77 में कितनी बसें नई ली जाएंगीं?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : 11 बसें 1978 में बदली जानी हैं और तीन बसें 1 977 में बदली जानी हैं ।

श्री हरि सिंह : क्या आठ साल की उमर के बाद ये बसे सकैप के तौर पर बेची जाती हैं या ऐज बस ही बेची जाती है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : नीलामी करके बेची जाती हैं । जो ज्यादा बोली देता है उसे देते हैं ।

श्री के० एन० गुलाटो : क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि गुडगावां और बल्लभगढ में 75 परसैन्ट पूरानी बसें चल रही हैं, उनको कब तक रिप्लेस किया जाएगा?

Mr. Speaker : No, this is not a supplementary. This is a sugestion for particular action.

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : नारायणगढ सब–डिपो में मुसाफिरों का रश ज्यादा है, बसें भी काफी हैं, टैरफिक भी ज्यादा हए । क्या मन्त्री महोदया बताएगी कि इस सब–डिपो को डिपो कब तक बना देंगे?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : वहां पर कोई इतना ज्यादा रश नहीं है, उसको मैंने खुद देखा है । अलबत्ता अगर और बसों की जरूरत होगी तो एक आध और बढ़ाई जा सकती है ।

. श्री जगजीत सिंह टिककाः मन्त्री महोदया ने बताया है कि इतनी बसें नई आई हैं, मुझे इस बात की खुशी है । तेकिन

पिछला तजर्बा यह बताता है कि वहां भेज कर एक हफ्ते के बाद किसी और जगह भेज दी जाती हैं, किसी दूमरे डिपो में ट्रांसफर कर दी जाती हैं । क्या अब की बार ऐसा तो नहीं होगा?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : ऐसी बात नहीं है ।

मलिक सत राम दास बत्तरा : आपने मरसडी की लाईफ 6 साल और लै–लैण्ड की 8 साल बताई है । मैं मन्त्री महोदया से जानना चाहता हूं कि इनको नीलाम करने का क्राइ– टीरिया क्या है? क्या किसी बोर्ड के शू नीलाम करते हैं या कोई एक आदमी नीलाम करता है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : एक बोर्ड बना है, जो कन्डैम डिक्लेयर करता है और उसके बाद ओपन बोली होती है, जो ज्यादा पैसे देता है, उसको दे दी जाती है ।

श्री हरि सिंह : क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि आठ साल के अर्से में एक बस की रिपेयर पर तकरीबन कितना खर्चा आता हे?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : इसके लिए अलग नोटिस दें, पता करके बता दिया जाएगा ।

Water Supply Scheme in District Bhiwani

***1567. Shri Amar Singh :** Will the Minister for Local Government be pleased to state whether there is any proposal under consideration of the Government to construct

water supply works at the following places in Bhiwani District—

(a) Barsi.

(b) Milakpur.

(c) Rohnat.

(d) Sewara.

(e) Baliali.

(f) Harita.

(g) Bharri ?

गृह तथा स्वास्थ्य राज्य मत्री (श्रीमती शारदा रानी) : जी हां ।

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब, मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि मिनिस्टर साहिबा ने 'हां' कहा । मैं एक स्पैसिफिक प्रश्न पूछना चाहता हूं कि इन गांवों–बरसी, हरिता, सेवारा, बलियाली बगैरा में जो वाटर सप्लाई स्कीम की प्रपोजल बनी है, यह प्रपोजल कब तक मैटीरियलाईज हो जाएगी और इन गांबों को कब तक पानी मिल जाएगा?

श्रीमती शारदा रानी : यह कुछ नहीं कहा जा सकता कि कब तक पानी देंगे । इन का पहला क्वैश्चन था कि क्या यह अन्डर कन्सीड्रेशन है । मैं यह बताना चाहती हूं कि यह स्कीम सरकार के अन्डर कन्सीड्रेशन है, लेकिन मुझे सन्देह है कि गाव

वालों के भी अन्डर कन्सीड्रेशन है या नहीं –– (इंट्रप्शन) ––क्योंकि बरसी गांव के लिए बोर्ड ने 2 लाख रुपया दिया था औरयह रुपया चार साल तक पड़ा रहा, उन लोगों ने न तो अपना बैनिफिशरी शेयर दिया और न ही जमीन दी जिसका नतीजा यह हुआ कि हमें रुपया विदड्रा करना पड़ा । वे कब अपना बैनिफिशरी शेयर देते हैं, इस पर सारी बात डिपैडं करती है ।.

चौधरी मेहर चन्द : स्पीकर साहब, मन्त्री महोदया ने मेरे साथी को 'यस' में जवाब दिया है, मेरा ख्याल है कि मुझे भी 'यस' में ही जवाब मिलेगा – (व्यवधान) –मैं मन्त्री महोदया से पूछना चाहता हूं कि किरमार और कुम्हारिया विलेजिज में कोई वाटर वर्क्स बनाने की स्कीम है या नहीं ?'

श्रीमती शारदा रानी : नहीं होगी, तो प्रपोजल बना लेंगे बशत वे पूरा बैनिफिशरी शेयर देने की कोशिश करें ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : झज्जर तहसील के साहलाबास के एरिये में पांच गांव कोकाक्रुलाना, असदपुर खेड़ा, रतनथालावास और मछराली वगैरह हैं, वहां पर वाटर वर्क्स बनाने की बहुत जरूरत है । क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि वहां पर वाटर वर्क्स बनाने की कोई स्कीम हे?

श्रीमती शारदा रानी : इनके लिए स्कीम की एडमिनिस्ट्रेटिव अप्रूवल हो गई है, कुछ पैसा भी दिया जा चुका है और काम जल्दी से जल्दी शुरु होने वाला है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : स्पीकर साहब, गांव जोती, मथन, पीपली वगैरह कई गांवों ने वाटर सप्लाई स्कीम के लिए रैजोल्यूशन पास करके भेजे हैं, क्या मन्त्री महोदया वहां पर वाटर सप्लाई स्कीम चालू करेंगे?

श्रीमती शारदा रानी : उन गांवों में खारा पानी नहीं है । अभी हम वहां बनाएंगे जहां खारा पानी है ।

राव बंसी सिंह : जैसा कि मन्डी महोदया ने बताया कि खारा पानी वाले इलाकों को वाटर सप्लाई स्कीम पहले देंगे । इस तरह अटेली के हलके में खारा पानी है और यह महेन्द्रगढ़ डिस्ट्रीक्ट में है, जो कि बैकवर्ड डिस्ट्रिक्ट है । क्या मन्त्री महोदया वहां पर वाटर सप्लाई स्कीम आरम्भ करने की कृपा करेंगे? हम बैनिफिशियरी शेयर भी इकट्ठा कर देंगे ।

श्रीमती शारदा रानी : महेन्द्रगढ़ डिस्ट्रिक्ट में बैनिफिशयरी शेयर नहीं देना पड़ता । वहां बहुत से गांवों की स्कीमें बन रहीं हैं । अगर आप किसी विशेष गांव के बारे में पूछना चाहते हैं तो मुझे बता दे, उसके विषय में मैं बता दूंगी?

चौधरी जोगेन्दर सिंह शेरोआः' मैं ऐसे गांवों के नाम बता सजता हूं जिन्होंने बैनिफिशरी शेयर दिया है, क्या वहां भी वाटर सप्लाई स्कीम देंगे?

श्रीमती शारदा रानी : सोचेंगे ।

श्री बिहारी लाल बाल्मीकि : स्पीकर साहब चीफ मिनिस्टर साहब बैठे हैं, उन्होंने हसनपुर में ऐलान किया था कि वहां पर वाटर सप्लाई स्कीम के लिए पैसा मन्जूर हो गया है । क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि. वही पर काम कितने दिनों में चालू हो जाएगा?

श्रीमती शारदा रानी : खारा पानी वहां भी नहीं है, फिर भी जांच करना लेंगे ।

श्री अध्यक्ष : क्या आपने सारी स्टेट का पानी टैस्ट किया है– (हंसी)–।

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब, मेरे सवाल के जवाब में नम्बर 3 पर गांव का नाम है

रोहनात । 14 जनवरी को आनरेबल गुप्ता जी ने यहां पर जवाहर लाल नेहरू की मूर्ति का अनावरण किया था और उस समय लोगों को यह वायदा दिया था कि इस गांव में वाटर सप्लाई स्कीम होनी चाहिए । इस बात को ध्यान में रखते हुए क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि वहां पर कब तक स्कीम दे देंगे?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : अध्यक्ष महोदय, रोहनात गांव भिवानी जिले में पड़ता है । उस गांव के लोगों से वायदा तो मैंने ऐसा कोई नही किया कि जरूर बना देंगे लेकिन

मैंने इस तकलीफ को महसूस किया था । इस बात पर हम पूरा ध्यान देंगे ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि क्या उन गांवों को वाटर वर्कस देने में प्रायरिटी देंगे, जहां स्टेट के अन्दर मेले लगते हैं?

श्रीमती शारदा रानी : अध्यक्ष महोदय, मेले लगने वाला कोई क्राइटेरिया नहीं है । चौधरी पीर चन्द स्पीकर साहब, मेरे हलके के गांव बोबुआ, हसनगड, और लितानी में खारा पानी है, और भी कई गांव हैं । कग मन्त्री महोदया बताएंगी कि इन गांवों में भी वाटर सप्लाई स्कीम की कोई प्रपोजल है?

श्रीमती शारदा रानी : अगर यहां सचमुच में खारा पानी होगा, तो अध्यक्ष महोदय, जरूर कंसीडर करेंगे ।

श्री प्रेम सुख दास सरसा : में खारा पानी है और बैनिफिशयरी शेयर देने के लिए तैयार हैं । क्या मन्त्री महोदया सरला को कसीडर करने के लिए तैयार हैं?

श्रीमती शारदा रानी : कर लेंगे, लेकिन बहुत जल्दी नहीं ।

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, बात ऐसी है कि हरियाणा प्रदेश में तकरीबन 6731 गांव हैं और इन में ढाणियां मिला दी जाएं, तो 7 हजार के करीब गाव बन जाते हैं । अब तक

1967– 88 के बाद 1152.58 लाख रुपए खर्च करके 713 गौवों को पानी दिया जा चुका है । इन सात हजार गांवों में से, अध्यक्ष महोदय, हरियाणा प्रदेश में 4180 गांव ऐसे हैं, जहां पीने के पानी की तकलीफ है और बैकिश वाटर है । इन सारे विलिजिज को पानी पहुंचाने के लिए कम से कम 76 50 करोड़ रुपया चाहिए । चाहते तो हम हैं कि इन सब गांवों में पानी दिया जाए लेकिन यह बात बिल्कुल ठीक है कि प्राथमिकता उन गांवों को देंगे जहां पानी खारी होगा, वैकिश वाटर होगा । सब गांवों में पानी पहुंचाने के लिए जितने फण्डज चाहिएं, उतने हमारे पास नहीं हैं । ज्यों–ज्यो फण्डज उपलब्ध होते जाएंगे, हम यह सुविधा देते चले जाएंगे ।

Sainik Rest House

***1581. Chaudhri Phul Singh Kataria :** Will the Chief Minister be pleased to state the time by which the construction of Sainik Rest House at Jhajjar in District Rohtak is likely to be completed and the details of facilities likely to be provided for the military personnel in the said Rest House ?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : राज्य के सैनिक विश्राम गुह हरियाणा युद्धोत्तर सेवाएं पुनर्निर्माण निधि संगठन के प्रशासनाधीन हैं । यह संगठन एक गैर सरकारी निकाय है और प्रशासन समिति के नियन्त्रणाधीन है । इस समिति के अध्यक्ष राज्यपाल हैं । अतः सरकार विधान सभा के इस तारांकित प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ है ।

2 किन्तु यदि माननीय सदस्य जानना चाहें, तो राज्यपाल के सचिव से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं । राज्यपाल के सचिव युद्धोत्तर सेवाएं पुननिर्माण निधि के भी सचिव हैं । वह आवश्यक सूचना सहर्ष दे देंगे ।

Mr. Speaker : The question hour is over.

तारांकित प्रश्नों के लिखित उत्तर

Requirement of Electricity

***1442. Chaudhri Dal Singh :** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state—

(a) the total units of electricity required in the State during **the** year 1974-75 ;

(b) the actual total units of electricity received from different sources during the year 1974-75; and

(c) the losses of electricity during 1974-75 in the State and the financial loss suffered by the Haryana State Electricity Board as a result thereof ?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) :

(क), (ख) व (न) वर्ष 1974–7 5 में बोर्ड ने अपनी 2718 मिलियन यूनिट्स की आवश्यकता के विरुद्ध लगभग 1633 मिलियन यूनिट्स बिजली विभिन्न स्रोतों से प्राप्त की । न्यूनता के फलस्वरूप बोर्ड को कोई आर्थिक क्षति नहीं हुई ।

Amount earmarked and spent for the Social Welfare Schemes

***1411 Chaudhri Ram Lal Wadhwa :** Will the Minister for Excise and Taxation be pleased to state—

(a) the amount earmarked and spent, separately, for different Social Welfare Schemes together with the names thereof for the years 1974-75 and 1975-76 (to-date), separately; and

(b) whether the amount has been allocated and spent fer each district; if so, the amount so allocated and spent district-wise, separately ?

Excise and Taxation Minister (Shri Shyam Chand):

(a) A statement showing the names of the schemes together with the amount earmarked and spent during the years 1974-75 and 1975-76 is laid on the Table of the House.

(b) Allocation of funds is made scheme-wise and not District-wise.

Statement showing the budget position of the Social Welfare Department, Haryana for the years.1974-75 and 1975-76

(Rs. in lakhs)

S.No.	Name of the Scheme	Budget grant and expenditure												Remarks
		1974-75						1975-76						
		Non-Plan		Plan		Total		Non-Plan		Plan		Total		
		Bud. grant (Revised)	Actual	Bud. grant (Revised)	Actual	Bud. grant (Revised)	Actual	Bud. grant	Actual (upto 10/75)	Bud. grant	Actual (upto 10/75)	Bud. grant	Actual (upto 10/75)	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1.	(a) Training Centre for the Adult Blind,	1.49	1.47	-	-	1.49	1.47	1.58	1.10	-	-	1.58	1.10	

	Sonepat.												
	(b) Production Unit in Training Centre for the Adult Blind, Sonepat.	0.02	0.02	-	-	0.02	0.02	0.15	0.01	-	-	0.15	0.01
2.	(a) Govt. Institute for the Blind, Panipat.	2.06	2.06	-	-	2.06	2.06	2.33	1.30	-	-	2.33	1.30
	(b) Braille Library, Panipat.	0.11	0.11	-	-	0.11	0.11	0.10	0.06	-	-	0.10	0.6
3.	Scholarships to Physically Handicapped.	0.45	0.36	0.10	0.09	0.55	0.45	0.56	-	0.10	-	0.66	- Applications for grant of scholarships are under consideratio

													n
4.	Sake Council, Chandimandir.	1.00	1.00	-	-	1.00	1.00	1.00	1.00	-	-	2.00	1.00
5.	Home for Destitute Women and Widows (Karnal.Rohtak & Faridabad)	0.73	0.68	0.6	0.06	0.79	0.74	0.81	0.41	0.40	0.04	1.21	0.45
6.	Family & Child Welfare Projects(Nilokheri, Sohna, Karnal, Pundri & Fatehabad).	3.00	3.00	-	-	3.00	3.00	4.00	2.00	-	-	4.00	2.00
7.	Children Village, Chhchhrauli	0.20	0.20	-	-	0.20	0.20	0.20	-	0.14	-	0.35	- Lump sum amount will be given as grant-in-aid

8.	Foster Care Service Scheme	0.56	0.50	0.10	0.06	0.66	0.56	0.59	0.22	0.15	0.04	0.74	0.26
9.	Crash Nutrition Pro-gramme(being operated in 13 towns)	1.15	1.11	7.43	7.41	8.58	8.52	8.30	3.10	-	-	8.13	3.10
10.	Home for Aged and Infirm, Panipat.	0.85	0.83	-	-	0.85	0.83	0.94	0.56	-	-	0.94	0.56
11.	(a) State after care Home Madhuban.	0.84	0.83	-	-	0.84	0.83	1.25	0.56	-	-	1.25	0.56
	(b) Production Unit in State after Care Home, Madhuban	0.56	0.53		-	0.56	0.53	.0.72	0.20	-	-	0.72	0.20
12.	Continuance of State	-	-	-	-	-	-	0.55	-	-	-	0.55	-

	Orphanage,Madhuban												
13.	(Certified Institute Panipat).	0.66	0.64	Anti Beggary Programme 0.03	0.03	0.69	0.67	1.60	0.52	0.50	0.05	2.10	0.57	
14.	Grant-in-aid to Har- yana State Social Wel- fare Advisory Board (for Headquarter Staff)	0.56	0.56	-	-	0.56	0.56	0.50	-	-	-	0.50	-	Lump sum amount will be given as grant-in-aid
15.	Grant-in-aid to Voluntary Organisations.	4.64	4.63	1.48	1.40	6.12	6.03	2.15	2.09	1.35	0.92	3.50	3.01	

16.	Special School, Madhuban.	0.69	0.64	0.16	0.16	0.85	0.80	0.80	0.80	0.84	0.86	0.60	0.60
17.	Old Age Pension Scheme.	17.38	17.40	-	-	117.38	17.40	17.19	9.01	-	-	17.19	9.01
18.	Grant-in-aid to Indira Holiday Home Society,Chandigarh.	0.28	0.28	0.10	0.10	0.38	0.38	0.28	-	0.10	-	0.38	-
19.	Direction and Administration Programme.	1.58	1.46	1.10	1.08	1.68	1.54	1.67	1.05	1.15	1.08	1.82	1.06
20.	Relief Organisation, (Mahila Ashram Karnal, Infirmary Rohtak, Kus-turba Seva	12.06	11.88	-	-	12.06	11.88	13.86	7.31	-	-	13.86	7.31

Sadan, Faridabad and Head Quarter staff.												
Total	50.87	50.19	9.56	9.39	60.43	59.58	60.96	31.04	3.70	1.12	64.66	32.16

Mini Secretariat at Kurukshetra

***1519. Shri Om ParkashGarg :**Will the Minister for Revenue be pleased to state the time by which a Mini-Secretariat is likely to be constructed at Kurukshetra ?

राजस्व मन्त्री (पंडित चिरंजी लाल शर्मा): मिनि–सचिवालय कुरुक्षेत्र का निर्माण कार्य चालू वित्तीय वर्ष (1975– 76) मैं आरम्भ कर दिया गया है ।

Income to Haryana Roadways

***1443. Chaudhri Dal Singh :**Will the Minister for Development be pleased to state—

(a) the total income accrued to Haryana Roadways during the year 1974-75; and

(b) the total number of Buses with Haryana Roadways as on 31-3-1973 and 31-3-1975, separately ?

परिवहन मन्त्री (श्री के ० एल ० पोसवाल) :

(क) 20.44 करोड़ रुपए ।

(ख) क्रमशः 1388 व 1602.

Dispensaries and Health Centres in the State

***1414. Chaudhri Ram LalWadhwa:** Will the Minister for Industries be pleased to state—

(a) the total number of Dispensaries and Health Centres in the State which were without doctors as on 31st

March, 1975, separately ;

(b) the total number of Dispensaries and Health Centres out those referred to in part (a) above which were without doctors for the last three years, two years and one year, separately; and

(c) the number of additional doctors required to make up the deficiency in the aforesaid Dispensaries and Health Centres, separately ?

उद्योग मन्त्री (श्री हरपाल सिंह) :

(क) 3 1–3– 75 को कोई भी प्रा० स्वा० केन्द्र बिना डाक्टर के नही था 31–3–75 को 19 डिस्पैसरियां बिना डाक्टरों के थीं ।

(ख) उपरोक्त 19 डिस्पैंसरियों में से 9 डिस्पैंसरियां 2–3 वर्ष और एक डिस्पैसरी एक वर्ष बिना डाक्टर के रही है ।

(ग) कोई नहीं ।

अध्यक्ष द्वारा घोषणा

Mr. Speaker : Hon'ble Members, I have received a message from the Senior Superintendent of Police, Rohtak, which reads as under :-

"ShriHar Swamp, M.L.A., bailed out on 20-1-1976 by S.D.M. Rohtak, in case under section 107/151 Cr. P.C. against a surety of Rs. 10,000. Next hearing is fixed on 3-2-1976."

Mr. Speaker : I have received a message from the Senior Superintendent of Police, Rohtak, which reads as under :-

`ShriHarSwarup , M.L.A., arrested on 20-1-1976 in case FIR No. 37, dated 20-1-1976 under section 33(3)/43 DISIR Police Station City Rohtak."

गैर–सरकारी संकल्प

शिक्षा पद्धति में सुधार लाने सम्बन्धी (पुनरारम्भ)

Mr. Speaker : Discussion on resolution.

The Hon. Member, Shri Ram Dhari Gaur, was in posse sion of the House when it adjourned last time. He may please resume his speech.

15.00 बजे

श्री राम धारी गौड़ (गोहाना) आदरणीय अध्यक्ष महोदय । मेरे साथी श्री गुलाटी जी ने जो प्रस्ताव हाउस में रखा है यह बहुत ही अहम प्रस्ताव है । उन्होंने इस प्रस्ताव में कहा है हाउस शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के लिए रिकमैंड करे कि यह शिक्षा प्रणाली ठीक नहीं है दूसरी अपनायी जाए । आप जानते हैं कि मौजूदा शिक्षा प्रणाली, मौजूदा तरीका तालीम बहुत अच्छा नहीं है । यह समाज के लिए माफिक नहीं है । हमारा सामाजिक ढांचा जो पुरानी परम्परा से चला आ रहा था, उसमें काफी कमियां आ गई हैं । आप जानते हैं कि देहातों में जहां अनपढ़ लोग रहते हैं,

इस मौजूदा तालीम का उन पर बहुत ज्यादा अच्छा असर नहीं हुआ है । हमारा सामाजिक ढांचा मजबूत नहीं हुआ है । पहले आपस में एक दूसरे का साथ दे ते थे, पहले पंचायत के ढंग से फैसले होते थे और उनका आपस में तालमेल होता था, लेकिन ज्यों–ज्यों इस तालीम का विस्तार होता गया । ये मगरबी तालीम । मगरबी सिवलाइजेशन हम पर हावी होत गई और शिक्षा का ढांचा बदलता गया । आप देखिए, देहातों के अन्दर कितना सहयोग है । फर्क कैरों एक गरीब आदमी है उसके बैल कमजोर हों और अपना ईख नहीं बीज सकता हो तो उसके बराबर का आदमी उसका हाथ बंटाता है । यह बात शहरों में नहीं है । इसी कारण से आजकल देहातों में कुछ कमी आ गई है । तो शिक्षा का मतलब यह है कि हम अपने बच्चों में वह चीज पैदा करें, वह क्वालिटी पैदा करें कि जो समाज के लिए मुफीद साबित हो सकती है । अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि जब बच्चा पैदा होता है तो कुछ गुण उसमें छुपे हुए होते हैं तो शिक्षा का मतलब यह है कि जो गुण छुपे हुए हैं, उनका विकास करे और कुछ गुण वे किताबें पढ़कर या अपने गुरु से सम्पर्क करके प्राप्त करे ।

अध्यक्ष महोदय, हम जिस देश में पैदा हुए हैं, उस देश की पुरानी परम्पराओं को, इतिहास को खोलें तो उनमें लिखा हुआ है कि इंसान खाली खाने–पीने के लिए पैदा नहीं हुआ है, बल्कि वह जिस समाज में पैदा हुआ है उसको यह देखना है कि उसने अपने समाज के लिए क्या कुछ किया है । हमारी पुरानी किताबों

में यह नहीं है कि वह समाज के लिए बोझा बन जाए, उनमें तो लिखा हुआ है कि समाज के असासा बने । एक अंग्रेज कवि ने कहा है–

He prayth well who loveth well

Both men, birds and beasts.

वही आदमी अच्छा है जो खाली इंसान से ही नहीं बल्कि पशु से भी प्यार करे । इकबाल ने भी कहा है

खुदा के बन्दे तो हैं हजारों, फिरते हैं वनों में मारे–मारे ।

मैं उनका बन्दा बनूंगा, जिन्हें खुदा के बन्दों से प्यार होगा । ।

यह तालीम ही है जो हमें यह सिखाती है । अध्यक्ष महोदय, एक कवि ने और कहा है––

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को,

वरना तांत के लिए कुछ कम न थे करने को ब्यान ।

खाने के लिए तो पशु भी हैं, लेकिन इंसान ही हैं जो दूसरे के दर्द को जानते हैं । अध्यक्ष महोदय, जो यह मगरबी तालीम है, उसका साया जब से हम पर पड़ा है, उस दर्द को जानना बन्द हो गया है, इंसान में इतनी सैलफिशनैस आ गई,

इतनी सैल्फ सीकिंग आ गई जिसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता । आप शहरों में देखिए किसी के यहां मौत हो जाए तो कन्धा लगाने के लिए वहां आदमी नहीं मिलेगा, बल्कि उसको गाड़ी लेने आएंगी, शहर मै कोई किसी का हाथ नहीं बंटाता । किसी पर कोई आपत्ति आ गई तो उसकी कोई सहायता करने वाला नहीं मिलता । यदि किसी के पड़ोस में कोई बीमार पडा हो तो उसको पूछने तक नहीं जाएंगे, तो मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि स्कूलो के अन्दर समाज सेवा की तालीम दी जाए ताकि हम पुरानी सम्यता को यहां पर ला सकें । अध्यक्ष महोदय, आप पुराने जमाने को देखिए, पहले हमारे यहां गुरुकुल होते थे उनमें जो गुरु और शिष्य का सम्बन्ध होता था, वह अब नहीं रहा है । अलामा इकबाल ने कहा है–

थे वह भी दिन खिदमते उस्ताद के एवज,

दिल चाहता था हदीय दिल पेश कीजिए ।

बदला जमाना ऐसा कि लडका पशज सबक,

कहा है मास्टर से कि बिल पेश कीजिए ।।

पहले गुरु अपने चेले पर जान देते थे जो भी उनके पास गुण होते थे, उनमें कूट–कूट कर भर देते थे । उस टाईम पर चेले गुरु का इतना सम्मान करते थे कि वे उनको अपने पिता से भी ऊंचा समझते थे लेकिन आज आप देखते हैं कि जब स्कूल या कालेजिज में कोई उस्ताद या प्रोफैसर नहीं आता है, छुट्टी चला

जाता है तो बच्चे उसका कार्टून बनाते हैं, उसका मजाक उड़ाते हैं, उसकी चोर निकालते हैं । तो इस प्र कार से गुरु और शिष्य का सम्बन्ध खत्म होता जा रहा है।

अलामा इकबाल ने ऐसा क्यों कहा । क्योंकि स्ट्डैन्ट ऐसा समझता है कि मैं फीस देता हूं और इस फीस में से इस उस्ताद को तनख्वाह मिलती है । पहले आश्रमों में कोई फीस नहीं होती थी, बल्कि वहाँ पर सेवा–भाव से काम चलता था । शिष्य गुरु की सेवा करते थे और गुरु भी उसको अपनी जान से भी अजीज समझता था और उसको लायक बनाने की कोशिश करता था । अलामा इकबाल इसी ढंग से एक जगह यह कहता है

तालीम मगरबी है बहुत जरूरत आफरिन

पहला सबक है बैठ के कालेज में मार डींग ।

यह बात हमारी सम्यता में फिट नहीं आती क्योंकि हिन्दुस्तान ऋषियों–मुनियों का देश है और यहां का इखलाक बहुत ऊंचा रहा है । यह मैटीरियलिजम को घटिया समझते रहे हैं, जबकि उनकी तहजीब मैटीरियलिजम की है । रूहानी दुनियां से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है । आप देखिए कि जब हिन्दुस्तान का कोई भाई दूसरे म्उल्क में जाता है तो वह कहते हैं 'क्या आपको योगा आता है?' आप यह देखिए कि वे मुल्क कितने धनी देश हैं । अमरीका कितना एडवासड है और वहां पर कितनी ज्यादा तालीम है, लेकिन उनको मन की शान्ति नहीं है । कोई भी हिन्दुस्तानी

चाहे कैसा भी वहां पहुंच जाए तो वे यह समझते हैं कि वह हमें– शान्ति देगा, शान्ति का सबक पढाएगा । इससे आप देखिए कि चाहे वे कितना ही आगे बढ गए लेकिन उनमें मन की अशान्ति है । जैसे कि मैंने पहले बताया था कि यह जो मगरबी तालीम या अंग्रेजी तालीम थी यह किस मकसद के लिए बनाई गई थी, उस समय दफतरों में बाबुओं कीजरूरत होती थी, उसको पूरा करने के लिए यह तालीम बनाई गई थी । वह पद्धति वह तरीकाए तालीम अभी तक भी बदला नहीं है, हालांकि उसमें गा–बगाह कुछ थोडे–बहुत परिवर्तन होते रहे है । उसका ढांचा अब भी वही है । इसमें इखलाकी तालीम कम है और बाबू पैदा करने के सिवाय कुछ नहीं करती । इसमें हालांकि इतने मजबून होते हैं और इतने किस्म काई किताबें होती हैं, लेकिन उनमें अध्यात्मिक तालीम का तो अंश भी नहीं है । यह जो मादरी तालीम है, यह अधूरी होती है । प्रकृति के मुत्ताल्लिक भी हमारे ऋषि– मुनियों ने बहुत रिसर्च की । उन्हेंने यहां तक रिसर्च की कि जो मौजूदा साइंटिस्टस हैं, वे भी वहां तक नहीं पहूंच सके । लेकिन एक तालीम से ही गाड़ी नहीं चलती है । यह जो प्राकृतिक और अध्यात्मिक तालीम है, इसके बारे में भीं सोचा जाए । आप जानते हैं कि जैसे तुक गाडी के दो पहिए होते हैं और वह दोनों पहियों से ही चलती है । अगर एक पहिया तेज चलने लग जारा और दूसरा टूट जाए तो उससे काम चलता नहीं है । अध्यक्ष महोदय, मैं आपको महर्षि पतंजली के आश्रम– के बारे में बतानों चाहता हूं, जिसके बारे में कुछ ज्ञान मैंने प्राप्त किया है । वह अपने बच्चों को 5 यम, 5

नियम बताते थे और उन्हीं से वह बच्चा काबिल होकर निकलता था । लेकिन आज हमारे स्कूलों में न वह 5 यम सिखाए जाते हैं और न वह 5 नियम सिखाए जाते हैं । सदन के आनरेबल मैंबर कहेंगे कि ये यम क्या हैं, ये नियम क्या हैं । यह यम और नियम अनुशासन से सम्बन्धित हैं । बन जो बोते हैं यह सामाजिक अनुशासन होता है जिससे कि समाज के अन्दर अनुशासन आता है । यह पांच यम हैं सत्य, अहिंसा, असतें, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य । सत्य के बारे में आप जानते हैं कि आज अगर हम सडक पर किसी से बात करें तो हमें यह पता नहीं लगता कि आदमी जो बात कर रहा है, वह सत्य है या असत्य, असल है या नकल । जो चीज हम खाते हैं हमें उसका भी पता नहीं कि वह असल है या नकल है । तो सच्चाई तो अब कोसों दूर भागती जा रही है । यह तो केवल स्कूलों में ही बच्चों में इनकलकेट की जा सकती है । दूसरी चीज अहिंसा है । अब लोगों में न वह प्यार है और न दया है । अहिंसा के बारे में तो यहां तक कहा 'गया है कि किसी का मन दुखाना भी अहिंसा में शामिल है इसलिए हम किसी का मन न दुखाए और मारना तो बहुत बड़ी बात है । आजकल क्या होता है । अगर एक आदमी कुत्ते के सामने भी गिर जाए, तो वह उसे छोड़ देता है लेकिन अगर एक इन्सान दूसरे के सामने लेट भी जाए तो वह छोड़ता नहीं है जब तक कि उसका गुस्सा पूरा न हो जाए । आप देखिए कि हमारा कितना पतन हो गया है, एक पशु तो माफी दे देता है लेकिन इन्सान हिंसात्मक होता जा रहा है और अहिंसा से कोसों दूर होता जा रहा है । तीसरा यम है

ब्रह्मचर्य । आप जानते हैं कि पहले जितने काबिल आदमी हुए हैं, तकरीबन सभी ब्रह्मचारी थे । महात्मा गांधी ने देश को ऊंचा उठाया, उन्होंने भी ब्रह्मचर्य का पालन किया । सुभाष बाबू भी ब्रह्मचारी थे । और भी जितने महापुरुष दयानन्द जी जैसे हुए हैं, तकरीबन सभी ब्रह्मचारी थे । (इस समय सभापतियों की सूचि में से एक सदस्य चौधरी ईश्वर सिंह पदासीन हुए) सबने ब्रह्मचर्य का पालन किया । असतें–चोरी नहीं करना । अपरिग्रह–दूसरों का कमाया न समेटना । आजकल क्या होता है । आदमी घर से निकलता है लेकिन काम कोई नहीं करता । वह यह चाहता है कि दूसरों का समेट लूं । आज हमारी आवश्यकताएं बहुत बढ़ गई हैं । हम समाज में, कालेजों में और स्कूलों में यह देखते हैं कि वहां बच्चों को सादगी नहीं सिखाते । उन्हें अपनी आवश्यकताएं कम करने की बात नहीं कहते । उनकी इच्छाएं बढ़ती जाती हैं । इसका नतीजा क्या होता है? स्कूलों और कालेजों का जो. नया तबका है, वह अधूरी सी पढ़ाई करके फैशन सीख जाता हैऔर थोडे बहुत नए सांइटिफिक तरीके सीख जाता है और काम धन्धा वह करता नहीं और न ही वह जानता है । वह क्या करता सफेद कपड़े बनवा लिए, इधर घूमा, उधर घूमा, यह किया, वह किया अपना काम निकालता है क्योंकि उसको काम धन्धा कोई आता नहीं । नेक कमाई वह नहीं करता, काम धन्धा वह सीखता नहीं । आपने भी देखा होगा और आपके पास भी ऐसे आदमी आते होंगे जो सिफ' चापलूसी करते हैं । कोई व्यक्ति उनसे यह पूछे कि आप क्या काम करते हैं । वह कहता है । जी समाज सेवक हूं । वह

समाज सेवा क्या है? वह यह है कि इसकी चुगली, उसकी चुगली और किसी की तारीफ । मैं यह समझता हूं कि यह जो चापलूस आदमी होते हैं, वे समाज के लिए एक कंकर के समान हैं, समाज के लिए सबसे बड़ा घुन हैं । वह समाज कें लिए एक बीमारी होते हैं । उनको देखकर दूसरे यह कहते हैं कि भई फलां आदमी है, उस को काम धन्धा नहीं लेकिन उसकी खूब चलती है, खूब ऐश करता है । ऐसे लोगों की देखम देखी यह बीमारी फैलती जा रही है । इसलिए चेयरमैन साहब, हमें स्कूलों से ही ऐसी शिक्षा देनी चाहिए और ऐसी आदत डालनी चाहिए ताकि जब वह स्कूलों से निकलें, तो उनको कोई न कोई काम धन्धा आता हो जिससे कि वह अपनी जीविका कमा सकें, अपना रहन–सहन ऊंचा कर सकें और कोई न कोई काम धन्धा करके अपना पेट पाल सकें । यह नहीं है कि क्रेमिंग करके थोड़ा बहुत बोलना सीखकर कोरे के कोरे निकलकर समाज के बच्चे बन जाएं और इस प्रकार से देश और समाज को नुक्सान पहुंचे । चेयरमैन साहब, आप जानते हैं कि हम क्यों पैदा होते हैं । सवाल यह उठता है कि इन्सान का जन्म लेने के बाद हमें क्या करना है । तालीम हमें यह सिखाती है कि हम अपने जीवन को सुखी बनाएं, सुखी कैसे बन सकता है? कृष्ण भगवान ने गीता में कहा है कि हम इच्छाओं को कम करें, उससे मन को शांति होगी और जहां शांति होगी, सुख वहीं होगा । शांति नहीं होगी तो मन के अन्दर तूफान उठते रहेंगे और आप जानते हैं कि अगर तूफान के अन्दर कोई नाव फंस जाए तो वह पार नहीं हो सकती । वह बीच में ही फंस जाएगी । नाव को

तूफान से निकालना बहुत कठिन हो जाता है । शांति न होने से हमारे मन में तूफान उठते रहते हैं । अगर हम तूफान को सबसाइड कर दें, उसको कम कर दें तो यह जीवन की नैया बहुत आसानी से समूथली पार हो जाएगी । चेयरमैन साहब एक और बात है हम यह देखे कि जो तरीकाए तालीम है, वह हमको एतमादी और खुददारी सिखाती है या नहीं । आप देखें कि जितने बड़े आदमी स्कूलों से पढ़कर निकले वे खूददार थे । इकबाल ने कहा भी है रू–

तू अगर खुददार है, मनतकसे शाकी न हो,

ऐन दरिया में हबाब आसा नगु पैमाना कर ।

जब हमारी प्रधान मन्त्री कहती हैं कि कितना ही धनी मुल्क हो, कितना ही अपने आप को बडा समझता हो, हम किसी के सामने झुकेंगे नहीं । वे जानती हैं कि वही जिन्दा रह सकता है जो किसी के आगे झुकता नहीं है । चेयरमैन साहब, यह जीवात्मा अमर है, एक जिस्म को छोड़कर किसी और जिस्म मेंचली जाएगी लेकिन अगर कोई आदमी इस पेट के लिए या इस जिस्म के लिए अपने आराम के लिए गिर गया है किसी के आगे झुक जाता है, उसमें खुददारी की भावना खत्म हो जाती है । मैं समझता हूं कि जब खुददारी की भावना खत्म हो जाती है तो वह आदमी भी खत्म हो जाता है । यह चीज स्कूल की शिक्षा में सिखाई जा सकती है । ऐसी किताबैं। में हों जिनके अन्दर बड़े आदमियों की जीवनियां

हों, जिन्होंने देश के लिए समाज के लिए बलिदान दिया हो । यह नहीं होना चाहिए कि उल्टी–सीधी कहानियां पढ़ाई जाएं जिससे जीवन में पतन आए या यूरोप की बातें पढ़ाई जाएं जो हमारे जीवन में पतन करने वाली हों । चेयरमन साहब, आप जानते हैं कि हमारे स्कूलों में जब कभी हम जाते हैं तो लिखा होता है Honesty is the best policy लेकिन मैं कहता हूं कि Honesty is the highest virtue" दुकानदार ऐसा लिख देने से समझता हए कि वह ज्यादा कमाएगा यह उनकी चाल है, हमारे इंडियन कल्चर में उसको पालिसी नहीं कहते उसको वरचू कहते हैं । यह हमारी पुरानी बातें देखनी होंगी । चेयरमैन साहब, आप जानते हैं कि स्कूलों में डिगनिटी आफ लेबर नहीं सिखाई जाती । जो बच्चे स्कूलों में पढ़ते हैं अगर उनको किसी काम के लिए कहा जाए तो वे उससे कतराते हैं । वे समझते हैं कि यह तो मजदूरों वाला काम हो गया । हम फलां के बच्चे हैं, हम कालिज में पढ़ते हैं । हमको छोटा काम नहीं करना चाहिए । आज हम देखते हें कि अगर कोई बढ़ई का लड़का है और वह स्कूल में जाने लगता है तो अपने काम धन्धे से नफरत करने लग जाता है । वह सोचता है कि मेरा बाप पुराना आदमी है । एक लुहार का बच्चा जब स्कूल जाने लग जाता है तो वह लुहार के काम से नफरत करने लग जाता है और उसका विचार हो जाता है कि यह जो लोहे का काम है यह तो अनपढ़ आदमी का काम है । एक किसान का बच्चा खेतीबाड़ी के काम से नफरत करने लग जाता है । मोची का बच्चा अगर पढ जाता हैतो वह सोचता है कि मैं जूते का काम क्यों करूं

। मेरा कहना यही है कि डिगनिटी आफ लेबर स्कूल में होनी चाहिए । चेयरमैन साहब, आप देखे कि आज बाटा, जिसके जूते विदेशों तक में जाते हैं वह मोची का बेटा नहीं है लेकिन वह आज अरबों रुपया जूते बनाने के काम में कमा रहा है । आज टाटा जो है वह लुहार का बेटा नहीं है लेकिन लुहार का सारा काम उसके हाथ में है और वह बहुत रुपया कमा रहा है । एक कुम्हार जो बर्तन बनाता था अपने चाक पर बैठकर, अगर आज उसका लड़का पडा है तो वह कभी भी बर्तन बनाना पसन्द नहीं करता लेकिन बाबा किसी कुम्हार का लड़का नहीं है लेकिन बर्तन बनाने का उसका काम है और अरबों रुपया वह कमा रहा है । आप जानते हैं कि हमारे ऊपर मगरबी तहजीब का असर है लेकिन हमने उनकी बुरी बातें ही सीखीं हैं, अच्छी कोई बात नहीं अपनाई । आपको पता होगा कि इंग्लैण्ड में कोई कुली नहीं मिलता । जो भाई जाते हैं वे अपना सामान खुद उठाकर स्टेशन से बाहर ले जाते हैं । एक हिन्दुस्तानी वहां चला गया, उसको सामान उठाने की आदत नहीं थी, जब वह रेल से उतरा तो कुली की तलाश करने लगा लेकिन कोई कुली नहीं मिला । वह काफी परेशान था । थोड़ी देर के बाद एक आदमी आया और कहने लगा कि आप परेशान मालूम देते हैं, तो उस हिन्दुस्तानी ने कहा कि मेरे पास सामान है और कुली नहीं मिल रहा है । उसने कहा कि एक बैग मैं उठा लेता हूं और दो तुम उठा लो और उसे स्टेशन से बाहर कर दिया । जाते वक्त उसने हिन्दुस्तानी को अपना कार्ड दिखाया । उसमें लिखा था कि वह वहां का बहुत बड़ा लार्ड था । यहां तो

यह हालत है कि अगर किसी की अच्छी आमदनी होने लगे तो उसे अगर पेशाब भी जाना हो तो वह कार में जाएगा लेकिन इंग्लैड में उस बड़े आदमी ने उस हिन्दुस्तानी का हाथ बटाया, उसकी परेशानी को दूर किया ।

चेयरमैन साहब, यह है डिगनिटी आफ लेबर । लेकिन हमारे बच्चे अपने हाथ से काम नहीं करना चाहते । उनके अन्दर मेहनत करने की भावना नहीं है । इसलिए स्कूल में एक घंटा ऐसा होना चाहिए कि जिसमें हरेक बच्चे को मैनुअल काम, हाथ से काम करने की आदत डाली जाए । जैसा कि मेंने उस दिन बताया था कि हमारी शिक्षा जॉब ओरियनटिड होनी चाहिए । अगर शिक्षा ऐसी होगी, तभी हमारे बच्चे जब स्कूल से निकालेगें तो उनमें इतना कांफिडैसं होगा कि वे नौकरी दें? पीछे नहीं भागेगे—बल्कि अपने हाथ से काम करने में फख्र महसूस करेंगे । खुद—एतमादी और खुददारी उसी में आती है जिसमें हाथ से काम करने की हिम्मत होती है ।

वह यह उम्मीद रखता है कि कोई —आदमी काश करे और उसका पेट पाले, वह गर्दन ऊपर करके भी खडा नहीं हो सकता । चेयरमैन साहब, 'मेरा मतलब है कि जब विद्यार्थी, बच्चे अपने हाथों से काम करना जान जाएंगे तो उनमें खुददारी आ जाएगी, भरोसा सा पैदा हो जाएगा । मैंने अभी बताया कि धार्मिक शिक्षा हमारे लिए बहुत जरूरी है । हमारे कुछ गुरुकुलों में तो ऐसी शिक्षा है लेकिन स्कूलों में, कालेजों में धार्मिक शिक्षा का

नामोनिशान नहीं है । हमारा धर्म ऐसा है जो कि हमें समाज में रहना सिखाता है, देश पर मरना सिखाता है, हमें देश के प्रति अपना कर्त्तव्य याद दिलाता है, देश, समाज व कौम के लिए सेवा करना सिखाता है । पुराने वक्तों की बात को आप ले लीजिए कि जव कोई व्यक्ति बुरा काम करता था तो लोग कहते थे कि तुम्हें पाप लगेगा, लेकिन आजकल इन्सान पका लिखा है, वह इस पाप वाप वाली बातों में नहीं पड़ता और यह कहता है कि देख लूंगा क्या होगा? जो उसका डर था वह निकल गया, अब लोग देखते हैं कि कहां से कितना फायदा होता है, मेरा कहने का मतलब यह है कि पहले वक्तों में लोग हर काम को करना न करना अपना धर्म समझते थे लेकिन आजकल धर्म वाली कोई बात नहीं रह गई है । आज लोग दोस्ती वहां करते हैं जहां से फायदा होता है, जहां से कोई फायदा न हुआ वहां से दूर भाग लिए । यह सब इसलिए कि उस आदमी को धार्मिक शिक्षा का कोई ज्ञान नहीं है । धर्म कहता है कि सब जीवात्मा एक हैं और हम लोग इसका अंश हैं अगर ये बातें इंसान में आ जाएं कि सब भगवान के अंश हैं, अगर ऐसी तालीम मिल जाए तो सभी लोगों में आपस में नफरत की बातें निकल जाएगी, बल्कि. लोग एक दूसरे के दुख–सुख में एक दूसरे की मदद करेंगे । भगवान उनसे खुश होता है, चेयरमैन साहब, जो भगवान के बन्दों से प्यार करते हैं । आपने भी बताया था कि जीव दरखतों में भी हैं, भगवान ने कुछ ऐसे दन्त बनाएं हैं जिनसे दरखत सारी बातें मालूम कर लेते हैं । हमारे वेद भी यही कहते हैं कि दरखतों में जीव हैं और कर्मो के अनुसार उनका जन्म हो

जाता है,'' तो कुछ जीवात्माएं दरखतों की शक्ल में पैदा हो जाती हैं और जिन लोगों के बुरे कर्म होते हैं वे पशु वगैरह की योनी में पड़ जाते हैं लेकिन यह जो हमारा इन्सानी जीवन है, यह बड़ी डिफिकल्टी से मिलता है, इसको हमें यूं ही नहीं जो देना चाहिए ।

चेयरमैन साहब, अच्छा जीवन, अच्छी शिक्षा हमें कहां से मिल सकती है? यह हमें मिल सकती है अच्छे गुरु से । अच्छे गुरु ही वह अनमोल सिद्धान्त बताते हैं जिन से आदमी के मन में जमी मैल और जो तूफान उठते हैं उन्हें दूर किया जा सकता है, पयूरीफाई किया जा सकता है । वैसे भगवान और इंसान में कोई फर्क नहीं रहा, परन्तु हम खुद ही अपने मन के शीशे को अपने कर्मों. से ही मैला कर लेते हैं और न ही हम भगवान को याद करते हैं । यह तभी हो सकता है, जबकि एक इंसान में अच्छे गुण विद्यमान हों, और अच्छी शिक्षा हो ।

चेयरमैन साहब, आपको पता होगा कि पुराने जमाने में जितने ऋर्षि मुनि हुआ करते थे, उनके चेले–चांटे कितने सीधे सादे होते थे, एक ही लंगोटी में रहते थे और अपने हाथों से खाना पकाते थे, लेकिन आज का लड़का जब तक कि टाई वगैरह न लगे, जूते पालिश न हों, तब तक वह स्कूल नहीं जाएगा और कहेगा कि हमारे टीचर कहेंगे कि तेरे जूते पालिश नहीं हुए । सो उनमें और आज के विद्यार्थियों में कितना अन्तर है?

चेयरमैन साहब, आजकल हमारे साईसदान यह डींगे मारते हैं कि हम चांद पर चले गए, हमने यह कमाल कर दिखाया, इतने महीनों में, सालों में हमने यह कर दिखाया लेकिन हमारे वेद शास्त्रों में यह बताते हैं, उनमें ऐसे यन्त्रों का जिक्र है जिनसे तीन दिन में चांद पर होकर वापिस भी आया जा सकता है । ऐसी नौकाए हैं जिनसे तुम समुद्र में होकर वापिस आ जाओ, ये सारी बाते वेदों में वर्णित हैं । लेकिन आज अपोलो के ऊपर देखिए कितना पैसा खर्च हो गया । इतना पैसा आजकल के वक्त में किसी गरीब मुल्क के पास नहीं है । वे म्उल्क धनी हैं, उनकें पास हर तरह के साधन हैं जिनसे वे इस किस्म की चीजे बना सकते हैं । हमारे देश में तोएक लंगोटी वाले आदमी थे जिनके पास कुछ नहीं होता था–– (घंटी) –चेयरमैन साहब, एक करमंडल के सिवा कुछ नहीं होता था । लेकिन अब इनको चाहिए कि कोई ऐसी शिक्षा लाएं जिससे हमारी पुरानी सम्यता, पुरानी खूबियां और पुराने गुण बच्चों में आ सकें । ये जो मौजूदा चकाचौंध करने वाले मगरबी तजरुबे हैं अगर इन तजरुबों को हम छोड़ दें, तो ठीक है । हमें हुन पर डिपैड नहीं करना चाहिए और ज्यों ज्यों हम इन पर डिपैडं करेंगे, उतना ही हमारा पतन होगा । आज आप समाज में किसी आदमी को देखें, किसी के चेहरे पर रौनक या खुशी नहीं है, वह बड़ा परेशान है । इसका कारण एक है कि जितने हम एडवांस होते गए, मर्ज बहुता गया ज्यों–ज्यों दवा की तो इसको खत्म कैसे किया जा सकता है? वह पुरानी सम्यता, वह पुराना प्रेम और वह सामाजिक तालीम जब तक हमारे स्कूलों में बच्चों को

नहीं पढायी जाएगी तब तक यह मर्ज कम होने वाला नहीं है । पहले समाज में तुक आदमी फैसला कर देता था और उसको स्वीकार कर लिया जाता था लेकिन आज हमने कानून का सहारा ले लिया है । आज, न इखलाक का और न छोटे–बड़े का आदर है । तो यह कानून का सहारा किसने चलाया? यह मगरबी सभ्यता ने चलाया । तो चेयरमैन साहब, मैं चौधरी माडू सिंह जी से रिक्वैस्ट करूंगा कि वे इस मौजूदा शिक्षा प्रणाली को ठीक करें । आज जब हम किसी पढ़े लिखे से पुरानी सम्यता की बात करते हैं तो वह कहता है कि यह तो पुराने लोगों की बातें हैं । तो यह तो आज के पढे लिखे लोगों की हालत है । पहले देहात में 30–40 आदमी चौपाल में इकटठे होकर बैठते थे और प्यार से एक दूसरे से बोलते थे लेकिन आज किसी को दूसरे से बात करने की दो मिनट की भी फुरसत नहीं है, आज तो हर एक की मसजद न्यारी–न्यारी है, कोई इकट्ठा बैठकर बात नहीं करता । अब तो उन लोगों में भी सियासत पहुंच चुकी है जो सियासत से कोसों टूर थे । पहले एक आपस में प्रेम था, प्यार था, एक दूसरे के दुख तकलीफ में दर्द बंटाते थे लेकिन आज अगर किसी का बैल बीमार हो जाए और ईख पेलना बाकी रह जाए तो कोई दूसरा उसकी सहायता के लिए नहीं जाएगा । पहले अगर किसी की बुआई रह जाती थी तो दूसरा आदमी उसकी मदद कर देता था लेकिन आज ऐसी मदद के लिए कोई बीस रुपए से कम दिहाडी नहीं लेता । तो अब हम पैसे का हिसाब करने लग गए हैं, जो पहले नहीं होता था, बल्कि पहले तो आदमी की नियत का हिसाब होता था । तो

इन कारणों से आज इखलाकी तौर पर हमारे में वह पुरानी बात नहीं रही हे । चेयरमैन साहब, आपने घंटी बजा दी है इसलिए मुझे बैठना पड़ेगा वरना यह मजबूरन तो एक बहुत बढ़िया मजबूरन है और इस पर काफी बोलने के लिए गुँजाइश है । क्योंकि मेरे और भाई भी बोलना चाहेंगे इसलिए मैं इतना ही कह करं अपना स्थान लेता हूं ।

चौधरी रिजक राम (राई) : चेयरमैन साहब आज जो सदन के सामने प्रस्ताव है, और जिस पर पिछले हफ्ते भी बहस हुई थी इसका मजबून बहुत ही अहम है और वह यह कि जो आजकल की तालीम हैउसमें क्या तब्दीली की जाए ताकि प्रान्त के लिए, देश के लिए उससे पूरा लाभ पहुंच सके । चेयरमैन साहब, पिछले मौके पर आपने बहुत अच्छी तरह से इस बारे में बातें बताई थीं । आपका भाषण होने के बाद कोई शब्द कहने की गुंजाइश नहीं है क्योंकि आपने कोई ऐसा पहलू नहीं छोड़ा जिस पर रोशनी न डाली हो, फिर भी थोड़े से समय में मैं अपने विचार रखना चाहता हूं । मुझे ऐसा ख्याल है कि जो बातें मैं आपकी विसातत से इस सदन के सामने रखूंगा, उनको शायद मन्त्री महोदय बहुत मुश्किल से मानेंगे । फिर भी मैं जुर्रत करता हूं कि कुछ बातें कहू । सवाल यह है कि शिक्षा की जो प्रणाली आज है उसमें क्या परिवर्तन किए जाए । देश के आजाद होने के बाद पांच कमिशन इस मसले को सुलझाने के लिए बैठाए गए और उनमें एक–एक योग्य, एजुकेशनिस्ट आदमी थे जैसे सर्व– पली डाक्टर राधा कृ

ष्णता जैसी हस्तियां उन कमीशनों में थीं और आखिरी कमिशन कोठारी साहब का था । हुन सब की तजवीजें आती रहीं और उन तजवीजों के मुताबिक कुछ तरमीमें भी शिक्षा प्रणाली में की गयीं । कभी चार जमातों की प्राइमरी रखी गई और कभी पांच की कर दी गई. इसी तरह कभी मिडल स्कूल की परीक्षा रख दी और कभी उड़ा दी, कभी दसवीं के बाद दो साल बाद एफ० ए० और उसके दो साल बाद बी० ए० कर दी गई और अब हायर सैकेण्ड्री करने के बाद तीन साल में बी०ए० होती है । इसके अलावा समैस्टर सिस्टम और कौरसपौडैंस कोर्सिज जारी किए गए यानी तरह तरह की तब्दीलिया आई, लेकिन आज हम इन तब्दीलियों के बावजुद भी ऐसा महसूस करते हैं कि ये तब्दीलिया नाकाफी हैं, उनसे जो हम सुधार चाहते थे वह नहीं हुआ और जो लक्ष्य शिक्षा का होना चाहिए था वह पूरा नहीं हुआ । इसमें कोई सन्देह नहीं कि जो भी कमिशन आए, मैंने उनकी रिपोर्टस पढी छंद जिनमें कि इस बात पर काफी जोर दिया गया कि जहां तक हो प्राइमरी की शिक्षा यूनिवर्सल कर दी जाए । सभी बच्चे जो एक खास उमर के अन्दर हैं, उनको लाजमी तौर पर पढ़ाया जाए और स्टेट उनको की तालीम दे लेकिन हर कमिशन ने यह जोर दिया कि यूनिवर्सिटी की एजुकेशन रिसट्रिक्टड होनी चाहिए । चेयरमैन साहब, आपने भी इसके बारे में कहा, आपका कालेज चलाने में काफी तजरुबा रहा है और कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी से भी आपका सम्बन्ध है । लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि आज कालेज की एजुकेशन और यूनिवर्सिटी की एजुकेशन देश में इतनी फैल चुकी है जिसकी कि

इतनी आवश्यकता नहीं थी । रिपोर्टस में आया है कि देश में हफ्ते में दो सौ की औसत से कालेज खुलते रहे हैं । हमारे अपने प्रान्त में भी बहुत खुले हैं । हमारे प्रान्त में 1967 में करीब 40 कालेज थे और आज 110 या 114 के करीब कालेज हैं और जहां 25 हजार के करीब स्टूडैटंस कालेजों में पढ़ते थे, वहां आज 78 या 80 हजार के करीब लड़के–लड़कियां कालेजों में पढ़ती हैं । सवाल यह पैदा होता है कि यह जो तालीम का इतना फैलाव हुआ है, इसके कारण क्या हैं और दूसरी बात यह कि क्या इस फैलाव का पूरा फायदा पहुंचा है या नहीं । इसके कारण तो कई हैं, जैसे कि पहले बताया गया कि प्राइमरी तक यूनिवर्सल एजुकेशन का लक्ष्य बनाया गया और इससे बहुत बड़ी तादाद में प्राइमरी स्कूलों में बच्चे गए । कुछ ड्राप आउट भी हुए और कहते हैं कि शायद 64 या 58 परसैन्ट ड्राप आउट हुए । तो खैर जो भी बच्चे प्राइमरी पास करने के बाद निकले, वे आठवीं में आ गए और फिर दसवीं में गए और उसके बाद कालेज में दाखल हुए क्योंकि उनको मुलाजमित मिली नहीं और बेकार बैठने की बजाय आगे पडते रहे । हुस तरह से जो नीचे का प्रैशर था, उसकी वजह से यूनिवर्सिटी एजुकेशन कम होने की बजाय फैलती गई, और भी कारण है और वह यह कि मुक्त तालीम देते हैं । जहां तक मुक्त तालीम देने का सवाल है, फीस माफ करके या वजीफे देकर यह उन बच्चों को देना जायज है, मुनासिब है जो गरीब घरों के हैं, हरिजनों और बैकवर्ड क्लासिज के हैं क्योंकि वे लोग सदियों से पिछडे हुए हैं, इसलिए उनको समाज में बराबर लाना है लेकिन एक बात मैं समझ

नहीं पाया और मेरा इस बात पर हमेशा से एतराज चला आता है कि कहा जाता है और कांग्रेस मैनिफैस्टो में भी यह कहा गया है कि हाई स्कूल तक सब के लिए तालीम मुक्त करेंगे । कम से कम मैं इससे सहमत नहीं हो सका । एक तरफ तो हम गरीब हैं, एक दो और अढाई किल्ले के मालिक हैं, मामूली मुलाजिम हैं और दूसरे मेहनत कश लोग हैं और हम पर कितने ही टैक्सिज हाउसटैक्स, प्रापर्टी 'टैक्स, पानी बिजली टैक्स, जमीन पर टैक्स और उन पर कई किस्म के सरचार्ज दूसरी तरफ यह बात है कि उस टैक्स के पैसे से गरीब लोगों की मदद करने की बजाय कारों, कोठियों, फैक्ट्रियों मिलो वालों के बच्चों को मुक्त तालीम दे रहे हें.

तुक सदस्य : अमीरों के तो पब्लिक स्कूलों में पढ़ते हैं ।

चौधरी रिजक राम : यह ठीक है कि बहुत सारे अमीरों के बच्चे पब्लिक स्कूलों में पढ़ते हैं लेकिन अगर वे सरकारी आर्डिनरी स्कूलों में दाखिल हो जाएं तो उनको मनाही नहीं है । वे दाखिल होते हैं तो उनको मुक्त तालीम वहां पर मिलती है । स्कूलों में तो फीस माफ कर रखी है और स्कूल टाइम के बाद वे लखपति वालदेन के बच्चे सौ दो सौ रुपए की टयूशन रखकर पढ़ते हैं । जैसे कि हेंने पहले भी कहा है कि आपने आप्न तक ऐसा फैसला नहीं लिया कि जो किसान हैं, मार्जनल फारमर्ज हैं, एक दो किल्ले के मालिक है, उनके बच्चों से कालेज तक या

उससे आगे तक भी फीस नहीं लेगे, लेकिन अमीर लोगों की फीस माफ कर रखी है । मुनासिब तो यह है कि गरीब लोगों को कालेज तक मुक्त तालीम दें और इसे कम्पन्सेट करने के लिए अमीरों से वहां पर दुगुनी तिगुनी फीस लें । अमीर तो पचास रुपए से भी ज्यादा फीस दे सकते हैं, क्योंकि जो स्कूल टाइम के बाद सौ दो सौ रुपए महावार की टयूशन रख सकते हैं और रखते है, उनसे अगर ज्यादा फीस ले ली जाए तो बुरी बात नहीं और इस तरह अगर गरीब को रियायत मिल जाए तो ठीक है । तो मैं अर्ज कर रहा था कि कई फैक्टर्ज हैं जिनसे स्कूल और कालेज की तालीम में न सिफ एक्सपैंशन हुई, बल्कि अगर मैं यह कह कि तालीम में ऐक्सप्लोजन हुआ है तो गलत नहीं होगा । राज्यपाल महोदय और वित्त मन्त्री के अभिभाषणों में हमने पडा और उसमें उन्होंने माना है । लिखा है कि हरियाणा बनने के बाद इतनी तादाद बच्चों की स्कूलों, कालेजों में बड़ी है, लेकिन इससे हमें कोई खुशी नहीं होती है क्योंकि जहां तालीम इतनी फैली, उसके साथ–साथ अनएम्प्लायमैंट भी ज्यादा तेजी के साथ हरियाणा मे फैल गई । जब राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा चल रही थी तो मुख्य मन्त्री महोदय ने फरमाया था कि हम सभी पडे लिखे लोगों को रोजगार नहीं दे सकते, कोई भी नहीं दे सकता ऐसा विचार उन्होंने प्रकट किया । तो फिर इतनी भारी तालीम में एक्सपैंशन करने की क्या हैरत थी? आज गरीब घरों के लड़के बोए. पास करके, एमए. पास करके घरों में बेकार बैठे हैं और परेशान हैं और उनके मां बाप भी परेशान हैं कि नौकरी मिलती

नही और घर का काम करने के काबिल वे रहे नहीं ह इस बारे में मैं देश की 197 2– 73 की फिर्ग्ज देख रहा था तो मैं हैरान हो गया कि अढाई लाख के करीब साईस ग्रेजुएटस देश में बेकार बैठे हैं । हमारे प्रान्त में 1972– 73 के आंकडों के अनुसार 53 हजार मैट्रिक पास और अन्डर ग्रेजुएट्स 19 हजार और 18 हजार लिव रजिस्ट्रों पर हैं जो बेकार बैठे हैं । ये फिर्ग्ज भी असली नहीं हैं क्योंकि जिन्होंने नाम लिखवाए हैं उनके ही ये फिर्ग्ज हैं । इनके अलावा बहुत सारे पढ़े लिखे ऐसे बेकार हैं जिन्होंने नाम दर्ज नहीं कराया और दूसरे ऐक्स सर्विसमैन वगैरा भी हैं । फिर ऐग्रीकल्चर के डिग्री होलडर्ज, डिप्लोमा होलडर्ज, आईटीआई. वगैरह पास लड़के बेकार फिर रहे हैं । सवाल पैदा होता है कि ये हालात जब देश मैं हैं कि बेकारों की फौज की फौज फिर रही है तो फिर भी क्यों इतने स्कूल कालेज खोले जा रहे हैं । यहां बजट पर बोलते हुए बहुत तरफ से मांग आई कि मेरे गांव का स्कूल अपग्रेड कर दो और मेरे गांव में नया स्कूल खोल दो । क्या इन हालात में यह मुनासिब है कि हम स्कूल अपग्रेड करें और नए स्कूल और कालेज खोलते जाएं? मैं समझता हू कि ऐसा करना पैसा जाया करने वाली बा त है । अभी मैंने बजट में देखा कि कालका में कालेज की बिल्डिग के लिए पैसा रखा गया है जोकि जनरल एजुकेशन का कालेज है, टैक्नीकल नहीं है । इसी तरह से बहादुरगढ़ के कालेज के लिए भी रुपया रखा गया है । मैं पूछना चाहता हूं कि कारनका में न कालेज की बिल्डिग बुश, न प्लेग्राउंड है, न साईस की लैबोरैटरी है और न कोई साइंस का सामान है ।

तो ऐसे कालेज में तालीम क्या दी जा सकेगी जहां पर कोई फैसिलिटी नहीं है । फिर कालका से दस मील के फासले पर चण्डीगढ में एजुकेशन का सैन्टर है, बढिया से बढ़िया कालेज हैं, शानदार लाइब्रेरीज हैं, लैबारेटरीज हैं और दूसरी सब चीजें हैं, बसें चलती हैं अच्छे से अच्छे प्रोफैसर्ज, टीचर्ज हैं और यूनिवर्सिटी का सारा इंतजाम है । महज पोलिटीकल बेसिज पर और किसी एमएलए को खुश करने के लिए कालका में जबकि उसके दस मील पर इतनी फैसिलिटीज हैं, कालेज खोल देना जिसके लिए जमीन एक्वायर कर रहे हैं और लाखों रु पए खर्च कर रहे हैं, कोई अकलमन्दी की बात नहीं, सही बात नहीं जो जायज कही जा सके । बहादुरगढ़ में भी ऐसे ही है । आप बेशक लाखों रुपए इनके लिए दे दो, आप मालिक हैं, लेकिन निष्पक्ष रूप से मैं कहता हूं कि बहादुरगढ़ देहली से 12/14 मील है और वहां को बसें टेरने चलती हैं, इसलिए आप क्यों देहली का फायदा नहीं उठाते और पैसा नहीं बचाते ।

एक आवाज : देहली से बच्चे सोनीपत पढ़ने के लिए आते हैं ।

चौधरी रिजक राम : मैं जिस बात को जिस भावना से कह रहा हूं उसे समझने की कोशिश करें, लेकिन हो सकता है मेरे कहने में फर्क हो और मैं आपको समझा नहीं पा रहा हूं, जो आप ऐसा कहते हैं । मेरे कहने का मतलब यह है कि जब आपके पास हजारों की तादाद में बीए. और एमए. पास लड़के बेकार फिर रहे

हैं तो फिर भी आप क्यों ये नए कालेज खोल रहे हैं जवकि पहले पढ़े हुए बेरोजगार हैं और आप उनको काम नहीं दे सकते और जो कि देश और समाज पर बर्डन हैं, मसला हैं । मैं समझता हूं कि जितने मैंबरान हम यहां पर हैं इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता है कि आज हमारे हलकों में सबसे ज्यादा गम्भीर मसला पढ़े लिखे बेरोजगार लड़कों का है । जब हम जाते हैं तो वे हमारे आगे पीछे फिरते हैं कि हमें नौकरी दिलाओ । वे भी क्या करें, परेशान हैं । तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि ये जो बेरोजगार लोग पढ़ लिख कर बैठे हैं, घरों में उनको तो हम रोजगार दे नहीं सके हैं लेकिन नए कालेज खोलते जा रहे हैं ।

16.00 बजे ।

नए कालेज खोलने का क्या फायदा है? क्यों इनकी एक्सटैंशन की तरफ जाते हैं? आपको मालूम है, पंडित जी फरमा रहे थे और चेयरमैन साहब, आपने भी महसूस किया होगा कालेजों और यूनिवर्सिटीज में पूरी फैसिलिटीज नहीं हैं । यूनिवर्सिटीज और कालेज वैलएक्विप्ड होने चाहिएं । पंडित जवाहर लाल नेहरू कहा करते थे कि हमारा देश आजाद हो गया है और अब आजाद होने के बाद हमें इस एजुकेशन सिस्टम को तब्दील करने की जरूरत है । थोड़ा सा तब्दील हुआ है, कहीं समैस्टर सिस्टम हो गया, कहीं कुछ हो गया लेकिन इसमें कोई खास तब्दीली अभी तक नहीं आई । बेरोजगारी बहुत हो गई है । इस सिस्टम से इतने ग्रेजुएट्स पैदा हो गए हैं, मास्टर आफ आर्टस और साईस के

लड़के इंजीनियर्ज इतने. बेकार बैठे हैं कि उनको कोई धन्धा नहीं मिलता । – हम यह नहीं चाहते कि लडकों को आर्ट की नालेज हो, सिर्फ टीचिंग की नालेज हो और प्रैक्टिकल कुछ न कर सकें । ऐसी ट्रेनिंग दो, जिससे आदमी अपनी प्रोडक्टिव एफिशिएंसी को बढ़ा सकें । जैसे कारीगर हैं, आर्टिर्जन हैं, जुलाहे हैं और मशीनरी का काम करने वाले हैं, इनको ट्रेनिंग दी जाए ताकि वे अपनी आमदनी बड़ा सकें । कोई लड़का जो स्कूल में पढ़ता है या कालेज में पढ़ता है वह इस किस्म की ट्रैनिग हासिल करे ताकि वह जिन्दगी में कामयाब हो सके । तालीम का मतलब, जहां तक मैं समझता हूं यह है कि लड़का अच्छी तरह से कमाने लग जाए और उसमें कमाने कीशक्ति बढ़ सके, उसकी प्रोडक्टिव एफिशिएंशी बढ़ सके, एजुकेशन प्रोडक्टिव हो । यह हैतालीम का लक्ष्य जो हमें देनी चाहिए । वह वक्त गया जब शिक्षा के खर्च को हम उपभोगका खर्च समझते थे । हम समझते थे कि यह कन्जैम्पशन का खर्च है, चाहे इससे रिटर्न होया न हो, यह तो पुरानी बातें हैं । पुराने वक्तों में हम समझते थे कि एजुकेशन तो खर्चकरने का साधन है जिससे स्टेट्स बढ़ सकता है, दर्जा बढ़ सकता है । आजकल भीकुछ लड़कियां ऐसी हैं जो ऐसा सोचती है कि अगर पढ़ लिख गई, तो रिश्ता अच्छी जगह होजाएगा । मैटरीमोनियल के प्वांयट आफ व्यू से शिक्षा हासिल करती हैं । मैं समझता हूंआज कोई भी मां बाप ऐसे नहीं हैं जो अपने बच्चों का स्टेट्स बढ़ाने के लिए स्कूलोंऔर कालेजों में भेजते हों । आज सब के सामने एक ही नजरिया है कि उनकी आमदनीबढ़ जाए, प्रोडक्टिव कपैसिटी बढ़

जाए और घर में सहारा हो जाए । आज इकोनोमिक रिटर्नलेने के लिहाज से एजुकेशन पर खर्च करते हैं, वैसे नहीं करते । शिक्षा पर जो खर्च होता है,उसकी रिटर्न सबसे ज्यादा है । शिक्षा पर जो भी इनवैस्टमेंट होती है, उसकी रिटर्न इनवैस्टमैट की निस्बत ज्यादा है । आप कारखाना लगाएं लाखों करोड़ों रुपया लगेगा, लेकिनउसकी आमदनी इतनी नहीं है आप एजुकेशन पर खर्च करके एक लड़के को इंजीनियरिंगपास करवाते हैं, उस पर मुश्किल से तीस हजार, चालीस हजार या पचास हजार रुपया खर्चहोगा । उसने घर में जो काम करना है उसको भी अगर शामिल कर लिया जाए तो भीएक लाख रुपए से ज्यादा उस लड़के पर खर्च नहीं होगा । जो खर्च आप एजुकेशन पर करतेहो उसकी इकोनोमिक रिटर्न क्या है । ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसी मतलब के लिएकिसी एमएलए. को खुश करने के लिए कोई कालेज या हाई स्कूल खोल दिया जाए ।आप यह देखे' कि जो पैसा एजुकेशन पर खर्च कर रहे हैं उसकी रिटर्न ठीक है या नहीं ।एजुकेशन की सोशल रिटर्न है इस बात को मानना पड़ेगा और वह उसी हालत में मुमकिनहै अगर लड़का पढ लिखकर रोजगार पर लग जाए, समाज के लिए रिटर्न क्या है, यह आपनेअन्यने भाषण में फरमाया था कि शिक्षा से समाज को बड़ा भारी फायदा पहुंचा है । मैंसमझता हूं पढ़े–लिखे लोग, शिक्षा की वजह से नौजवान लडके लड़कियां जातिवाद केबैरियर को, कास्ट के बैरियर को तोड़ते हैं जो देश में बहुत बड़ी बीमारी है । पढ़े लिखेलोग जो इनफर्मेशन देते हैं, चिट्ठी लिखते हैं, तार देते हैं, उस पर जो खर्चा होता है,

वह कोईखर्चा नहीं होता, लेकिन इसके मुकाबले में बड़ा भारी फायदा होता है । डाक्टर समाज में काम करता है, इससे बडा भारी फायदा है । वह फैमिली प्लानिंग का काम करता है इसलिए कि उसकी आमदनी बढ़ जाए । आमदनी बढ़ाने के मकसद से फैमिली प्लानिंग के काम मेंसुविधा मिलती है, इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है । आज हमें फैमिली प्लानिंग करने मेंकितनी ताकत लग रही है, हर एक अफसर इस काम में लगा है, दूसरे वर्कर भी इसकाम में लगे हैं । आप देखें, कितना खर्च हो रहा है, लेकिन फिर भी हमारी आबादी घटनेमेंनहीं आती, अढाई परसैट के करीब बढ़ रही है और डैथ–रेट कम है । एक बात खास' तौर पर कहना चाहता हूं कि जहां स्टेट में और काम हो रहे हैं वहां शिक्षा भी ज्यादा से ज्यादा दें । जो पडे–लिखे लड़के हैं उनकी मैरिजेबल एज बहुत बढ़ चुकी है और ये पढ़े–लिखे लड़के फैमिली प्लानिंग को ज्यादा समझते हैं, यह सोशल रिटर्न है । एक बात और खासतौर से कहना चाहता हूं, शिक्षा मन्त्री महोदय से आशा करता हूं और प्रार्थना भी करता हूं कि जो बातें मैं अर्ज करना चाहता हूं उनको गौर से देखें कि उनमें वजन है या नहीं । आज एक बात देखने की है कि हमारा स्टैण्डर्ड आफ एजुकेशन, क्वालिटी आफ एजुकेशन दिन– ब–दिन गिर रहा है, चाहे स्कूलों की एजुकेशन हो, चाहे कालेजों की एजुफेशन हो । आप मैट्रिक के इम्तिहान से अन्दाजा लगा लें चाहे पब्लिक सर्विस कगीशन की रिपोर्ट को देख लें, रिपोर्ट इतनी डैमेजिंग है कि हमें पढकर शर्म आती है । रिजल्ट ठीक नहीं है । स्कूल है लेकिन उनमें साईस

की लैबोरेटरी नहीं है, अगर लैबोरेटरी है तो उस में सामान नहीं है । ठीक है, हमारे पास पैसा भी इतना नहीं है । यह मैं मानता हूं कि तालीम का स्टैण्डर्ड बनाने के लिए पैसा जरूरी चीज है, फर्स्ट परायरिटी पैसा है । शुरू से हम देखते हैं, चौथी प्लान पूरी हो चुकी है, पांचवी लागू है । अगर सैन्ट्रल गवर्नमैंट पैसा दे तब कुछ न कुछ हो सकता है । प्लानिंग कमीशन जो फण्ड एलोकेट करता है, उसके मुताबिक टोटल एमाउंट का पांच या साढ़े पांच परसैन्ट से ज्यादा एजुकेशन को नहीं मिलता । इसके इलावा चेयरमैन साहब, हम दो तीन बातें देखते हैं कि प्राइमरी एजुकेशन को, यूनिवर्सल एजुकेशन को ज्यादा फैलाने की कोशिश करते हैं । इसमें एक–एक टीचर के स्कूल हैं या दो दो टीचर के स्कूल हैं । गवर्नमैंट ने कुछ दिन हुए फैसला किया था कि जहां 250 लड़कों की स्ट्रैंथ हो वहां बी०ए०बी०टी० या अच्छा क्वालिफाइड टीचर लगाएंगे । लगाते भी रहे. लेकिन ज्यादातर स्कूल ऐसे है जिनमें एक–एक या दो–दो टीचर हैं, प्राइमरी क्लासो के अन्दर । आज के जमाने में एक टीचर या दो टीचर रखने का कोई आइडिया नहीं है । एक या दो टीचर के स्कूल न रखें, यह ठीक नहीं है । एक टीचर कभी न कभी कोई बीमार हो जाता है या गैरहाजिर हो जाता हए, इससे बच्चों का नुक्सान होता है । एक टीचर के ऊपर आप एजुकेशन की बुनियाद नहीं बना सकते । चेयरमैन साहब, आपका एजुकेशन से बहुत ज्यादा सम्बन्ध रहा है । आपने पड़ा होगा कि चाईना में रैवोल्यूशन आया था । जिस वक्त पार्टी कायम हुई और गवर्नमैंट बनी तो जितने एक टीचर के स्कूल

थे, सब बन्द कर दिए । ईस्ट जर्मनी की हिस्ट्री पढ़ी है, वहां भी एक–एक टीचर के स्कूल बन्द कर दिए । इनको अमालगामेट करके कम से कम मिडल स्टैण्डर्ड के स्कूल रखें, वहां पर बीए., एम ए० पास टीचर्ज रखें, साईंस टीचर्क रखें । लाइब्रेरी बनाएं । आज हम देखते हैं कि कितने ही हमारे टीचर्ज बी०ए० पास हैं, एम०ए० पास हैं, बेसिक पास को तो छोड़ दें, उनकी तो पता नहीं, कितनी तादाद है । आज बेसिक पास टीचर को तो दस्तखत भी नहीं करने आते हैं जो बी०ए० पास हैं, उनको दरखास्त तक नहीं लिखनी आती है । मिनिस्टर साहब के पास दरखास्तें आती होंगीं उनको सारा पता है कि एक फिकरा भी सही नहीं लिख सकते हें । ग्रामर की तो कितनी ही गलतियां करते हैं । जब टीचर्ज की यह हालत हो तो स्टूडैन्टस को क्या पढाएंगे । टीचर्ज में कोई काबलियत नहीं है । एक–एक टीचर स्कूलों में दे रखा है जिसका नतीजा यह है कि हरियाणा में एजुकेशन का स्तर बिल्कुल नीचे गया, ऊंचा नहीँ उठा है । आज चेयरमैन साहब, . हरियाणा को ऊंचा उठाना है तो अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी एजुकेशन देकर दूसरे सूबों के मुकाबले में अपने बच्चों को तैयार करें । अगर हम अच्छी शिक्षा अपने बच्चों को नहीं दे सकते तो अनप्रोडैक्टिव एलीमेंट पैदा करने का कोई फायदा नहीं है । ऐसी शिक्षा देकर हम नौजवानों की जिन्दगी खराब करें, उसका कोई फायदा नहीं है । चौधरी माडू सिंह ने ठीक फरमाया कि अमीरों के बच्चे पब्लिक स्कूलों में पढ़ते हैं, उनका मुकाबला हमारे बच्चे नहीं कर सकते । मैं उनकी इस बात को मानता हूं ।

हमारे देश के अन्दर पांच कमिशन मुकर्रर हुए हैं और भी कितने ही काबिल आदमी एजुकेशन के महकमे में हुए हें । प्लानिंग कमिशन में भी बड़े योग्य आदमी बैठे हैं । अब सवाल तो यह है कि एजुकेशन में सुधार क्यों नहीं हुआ? अंग्रेज इस बात की तालीम देते थे कि उनको कलक मिल सकें । उनको तो दफतरों में काम करने के लिए हिन्दु– स्तानी लोगों की जरूरत थी और उसी लिमिट तक उन्होंने तालीम दी । आज भी जो शहरों में कारखानेदार अमीर आदमी हैं, जिनके हाथ में शक्ति है, जो देश की नीति निर्धारित करते हैं वे योजना भवन में बैठकर इस बात का ख्याल नहीं रखते कि देहात के गरीब आदमी या शहर में बसने वाले गरीब आदमी का स्तर ऊंचा हो । मैं तो यह कहूंगा कि इससे ज्यादा बे–इन्साफी कोई हो नहीं सकती, जहां अन–इक्वैलिटी आफ एजुकेशन हो, अन–इक्वैलिटी आफ अपरव्यूनिटी हो । कम्पीटीशन के लिए तो बड़ी बड़ी जगह हैं । बराबर की तालीम हासिल किए बिना वे गरीबों के बच्चे कम्पीटीशन में आ नहीं सकते । जो बच्चा गांव में पढ़ा है, गांव में ही पैदा हुआ है, वह कम्पीटीशन में नहीं आ सकता । जो लोग शहर में रहते हैं और अमीर आदमी हैं, उनके मां बाप भी पढ़े हुए होते हैं । वे अपने तीन साल के बच्चे को नर्सरी स्कूल में दाखिल कर देते हैं और फिर पब्लिक स्कूल में दाखिल कर देते हें । इस तरह से वे उसकी शिक्षा पर 500– 700 रुपए महीने तक खर्च करते है । जिस दिन से पैदा होता है, उसी दिन से उसको शिक्षा मिलनी शुरू हो जाती है, क्योंकि वे सैल्फ एजुकेटिड होते हैं । जब भी

वह बोलना शुरू करता है तो वह अंग्रेजी में डैडी और मम्मी कहता है । उस बच्चे में कोई शर्म नहीं होती, झिझक नहीं होती, बड़े हौसले से बोलता है । दूसरी तरफ एक देहात में पैदा हुआ लड़का उसका क्या मुकाबिला कर सकता है । वह बेचारा सुबह से शाम तक डंगरों को पानी पिलाता है, कभी बुजुर्गों का हुक्का भरता है, कभी खेत में काम करता है तो उसका मुकाबिला उन अमीर घरों के लड़कों से कैसे कराया जा सकता है जो पैदा होते ही पढ़ने लग जाते हैं । अमीर बच्चों की तालीम उनके मुकाबिले में बहुत मंहगी है । उनके मां बाप 500–700 रुपए माहवार खर्च कर सकते हैं, वे विलायत और दूसरे मुल्कों में भी शिक्षा दिलाने के लिए भेज सकते हैं ।

जितनी भी बड़ी–बड़ी सर्विसिज हैं, चाहे वे आईएएस. की हैं, चाहे आई०पी०एस० की हैं, उन सारी पोस्टों पर इन्हीं लोगों का कच्चा है । ये वही लोग हैं जिन्होंने अंग्रेजों के वक्त में भी कुछ ताकत हासिल कर ली थी । अंग्रेजी पढ़ाई जाने के बारे में जब मैकाले की रिक्मैंडेशन आई तो वहां पर ये कुछ लोग आगे आए, मुसलमान इतने नहीं आए जिन्होंने अंग्रेजी पढ़नी शुरू कर दी । जिन लोगों ने अंग्रेजी पढनी शुरू की, उन्हीं लोगों के जमशेदपुर में टैक्सटाईल और जूट मिल्ज लगे । जब देश के आजाद होने का वक्त आया तो

उस वक्त 10 फीसदी लोग ऐसे थे जो बहुत आगे बढ़ चुके थे पैसे के लिहाज से भी और तालीम के लिहाज से भी ।

हरियाणा में तो किसी को कोई चांस ही नहीं मिला । हरियाणा में तो शिक्षा की पहली पीढ़ी चौधरी माडू सिंह और हमारे साथी ही हैं । इससे पहले कोई पीढ़ी नहीं थी जिन्हेंने अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण की हो । अगर कोई चिट्ठी पढवानी हो तो मास्टर या पटवारी के पास पढवाने के लिए जाते थे । कई कई मील पढवाने के लिए जाना पड़ता था । तो आप यह सोचें कि हम उनका कैसे मुकाबिला कर सकते हैं? आज हमारे सामने प्रमुख सवाल तो यह है कि हम क्या तरीका अपनाए जिससे हमारे बच्चे काबिल बनें और उन अमीरों के बच्चों का मुकाबिला करे । हमें तो अपनी सारी ताकत बजाए नए स्कूल खोलने, नए स्कूल अपग्रेड करने के अच्छी शिक्षा दिलाने पर लगानी चाहिए ।

मैं तो हैरान हूं, यही पर चौधरी पोकर राम जी बैठे हुए हैं, वे सोनीपत अक्तूबर के महीने में ग्रीविनसिज कमेटी में गए थे । उस वक्त यह सवाल डी०ई०ओ० साहब से पूछा गया था कि बताओ आपके यहां कितने साईंस मास्टर, मैथेमैटिक टीचर्ज और इंगलिश टीचर्ज की कमी है । केवल तीन चार महीने इम्तहानों के रहते हैं उस वक्त यह पूछा जा रहा है कि कितने टीचर्ज की कमी है । यह तो गवर्नमैंट की हालत है, सरकारी स्कूलों में टीचर्ज नही, फिर आप बताओ ये लड़के उन लड़कों का कैसे मुकाबला कर सकते हैं? तो मैं चौधरी माड़ सिंह से जानना चाहता हूं कि क्या वे बच्चे इस प्रान्त की इकोनोमी और जरूरियात को इस शिक्षा पद्धति से पूरा कर देंगे? वे लडके इस देश में कम्पीटीशन में नहीं आ सकते

हैं । वे किसी भी फील्ड में उन अमीर लोगों के बच्चों के मुकाबिले में नहीं ठहर सकते । तो आज सबसे पहले प्रमुख बात यह है कि किस तरह से हम उन लडकों को आगे लाएं? मैं चौधरी माडू सिंह जी, जिनका सम्बन्ध एजु– केशन से है, गुरुकुलों से है, स्कूलों और कालेजों से है और वे देहात के गरीब आदमियों के साथ हमदर्दी रखते हैं, उनसे प्रार्थना करूंगा कि वे सारी ताकत इस बात में लगा दें कि देहात में या शहर में बसने वाले गरीब बच्चे को अच्छी तालीम दें ताकि वे भी दस–पांच या बीस साल में बराबरी की सतह पर आएं ।

मैं सरकार की तवज्जोह एक बात की ओर दिलाना चाहता हुं कि जो फार्मल एजुकेशन है, प्री–प्राइमरी एजुकेशन है, यह देहातों में लागू होनी चाहिए । जैसे तीन साल के बच्चे कों शहरों में नर्सरी स्कूलों में भेजना शुरू कर देते हैं, वैसे ही हमें भी देहातों के अन्दर प्री–प्राइमरी स्कूल खोलने चाहिएं ताकि तीन साल का बच्चा होते ही पढ़ना शुरू कर दे, जिस प्रकार से कि शहरों के बच्चे पढ्ने लग जाते हैं । हम मैट्रन आयाज के लिएटेरनिंग स्कूल खोलें, उनको सरकारी खर्चे पर ट्रेंड किया जाए । अगर हरियाणा प्रान्त को सयुद्ध करना है, उन्नत करना है तो एक एक टीचर वाले जितने भी स्कूल हैं, इनको इकट्ठा कर दिया जाए । आप नक्शा मंगवा कर, पडताल करें जिन गांवों में ऐसे स्कूल हैं, जो आपस में चार फली न के फासले पर हैं, उनको इकट्ठा करके मिडल स्कूल बना दिया जाए ।

प्री–प्राइमरी स्कूलों के बारे में फिर अर्ज करूंगा कि वे जरूर खोले जाने चाहिए, लेकिन तालीम के स्तर को जरूर ऊंचा करे । जो इन स्कूलों में मैट्रन और आयाज लगाई जाएं, वे उन बच्चों के लिए दूध, खिलौने और कुछ खाने पीने का इंतजाम भी करे और उनको तालीम भी दें ताकि उन बच्चों की क्वालिटी ऊंची हो ।

मैं खुद वकील हूं और चौधरी माडू सिंह जी भी वकील हैं और भी हमारे सदन के साथी वकील हैं, मैं बगैर किसी झिझक के यह बात कहता हूं कि अच्छे से अच्छा पढे लिखे हमारे जो आदमी हैं, उनका किसी भी लैगवेज पर कमाँड नहीं है । न हिन्दी पर पूरा कमाँड है, न उर्दू पर और न ही अंग्रेजी पर है । मुझे याद है हुक बाबू जगजीवन राम जी वकील होते थे । डी०सी० साहब के यहां केस था । वे अदालत में गए, तो उन्होंने बहस करने से पहले फरमाया कि कौनसी लैंगवेज में बहस करूं अंग्रेजी में या उर्दु में । एस. प्रताप डिप्टी कमीश्नर थे, वह कहने लगे कि यह तो आप खुद देखो । "Make your own choice But I warn your that once you begin in one language, I won't allow you to shift to other language or inter mix words of one language with other language." वे कहने लगे कि यह काम तो मुश्किल है? मेरे ख्याल में बहुत थोड़े से आदमी ऐसे होंगे, जो अंग्रेजी में बोलना शुरू करके आखिर तक अंग्रेजी में बहस करते हैं । वे साहिबान भी जिनकी बीस–बीस साल की प्रैज्टिस हो जाती है, ऐसे नहीं कि हिन्दी में बोलना शुरू कर दें तो आखिर तक हिन्दी में ही

बोलते रहें । उनको बीच में अंग्रेजी मिलानी पडेगी या फिर उर्दू –मिलानी पड़ेगी । तो यह तो हमारी हालत है । मैं यह अर्ज कर रहा था कि यह तो हमारा स्टैडर्ड आफ एजुकेशन है, अगर हम अपने बच्चों को कम्पीटीशन में खड़ा करना चाहते हैं तो हमें अपनी सारी ताकत स्टैण्डर्ड बढ़ाने की ओर लगानी चाहिए बजाय इसके कि हम एजुकेशन यने एक्सपैंड करके उसकी एक्सपलायटेशन करें और बेकार आदमियों की तादाद बढ़ाएं । हम क्वालिटी पर जोर दें । एजुकेशन के स्टैण्डर्ड को बढ़ाने पर जोर दिया जाए, तब हम उससे कुछ– हासिल कर सकते हैं । चेयरमैन साहब,एक बात और मैं कहना चाहता हूं । मीडियम आफ इंस्ट्रक्शन के बारे में बड़ी कर्न्टोवर्सी है । पण्डित रामधारी जी हाथी फरमा रहे थे कि मगरबी तहजीब ने इस देश का बेडा गर्क कर दिया है । यह एक ऐसी चीज है जिस पर मुख्तलिफ राय हो सकती हैं । मैं यह समझता हूं कि किसी समय हमारे देश की सभ्यता बहुत ऊंची थी, लेकिन उस पर मुसलमानों का और अंग्रेजों का भी साया पड़ा । कभी हम मुसलमानी तहजीब के असर में आए और कभी अंग्रेजी तहजीब के असर में पड़े, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन एक बात मैं कहता हूं कि लैग्वेज की वजह से हमारी सभ्यता बेकार हो, मैं नहीं मानता । इस वक्त एक दूसरा प्रश्न जो हमारे सामने है और मैं यहां पर आपकी विसातत से मन्त्री महोदय को विचार के लिए रखना चाहता हूं, वह यह है कि वह कौन सी लैग्वेज हो जिसमें हम शिक्षा दे । निस्संस्देह हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है और हमने हिन्दी को पूरा महत्व देना है । हमारी राष्ट्र–

भाषा जितनी तरक्की करेगी, उतनी ही हमारी भी इज्जत बढ़ेगी, हमारा मान भी बढ़ेगा । हरेक देश ने अपनी भाषा से गेन भी किया है और हमने भी करना है, लेकिन इसके अलावा एक बात हमें आज के वक्त में और माननी चाहिए । जैसे यू ०पी ० है, हरियाणा है, राजस्थान है, बिहार है आरे दूसरे कुछ ऐसे सूबे हैं जो हिन्दी को राष्ट्रभाषा के तौर पर भी और रीजनल लैंग्वेज के तौर पर भी मानते हैं । इसके अलावा दूसरे लोग हैं जो हिन्दी को अपनाने के लिए तैयार नहीं हैं । कोई कहता है तामिल जो है वह भी हिन्दी जितनी जरूरी है और कोई कहता है कि मलायालम और दूसरी रीजनल लैग्वेज भी हिन्दी जितनी जरूरी है । तो इस तरह की कन्ट्रोवर्सी है । आखिर यह कन्ट्रोवर्सी है क्या? यह कन्ट्रोवर्सी इस बात की है कि साउथ में जितने भी भाई हैं, वे यह कहते हैं कि अगर हिन्दी को इस वक्त मीडियम आफ इंस्ट्रक्शन मान लिया गया तो सरकारी नौकरियों में और दूसरी नौकरियों में उनके लड़के–लड़कियों को पूरा मौका नहीं मिलेगा । मेरा कहने का मतलब यह है कि लैग्वेज की जो कन्ट्रोवर्सी है, वह जोब्ज के बारे में है, एम्प्लायमैंट के बारे में है । कन्ट्रोवर्सी यह है कि कौन सी लैग्वेज से रोजगार ज्यादा से ज्यादा मिले । आज इस बात पर पूरे देश में तकरार है वरना हिन्दी को हम कब का अपना लेते । साउथ के लोगों ने इसे इसलिए नहीं माना क्योंकि अगर हिन्दी अपनाई गई तो यू ०गई० हरियाणा, बिहार वगैरह नजदीक नहीं फटकने देंगे । चुनाचे अंग्रेजी देश में चल रही है और मेरा अपना यह विश्वास है, मन्त्री महोदय तो इस बात से सहमत नहीं होंगे

कि अंग्रेजी इस देश में जारी रहेगी । अंग्रेजो को आप निकाल नहीं पाएंगे, खत्म नहीं कर पाएंगे यह मेरा विश्वास है । रशिया में जिस वक्त जार की हकूमत थी तो वहां पर भी अंग्रेजी प्रचलित थी । जार ने इसे खत्म करने की कोशिश की और बाई डिक्री यानी बाई आर्डर यह कर दिया कि अंग्रेजी कोई नहीं पडेगा, लेकिन अंग्रेजी वही पढ़ी गई । मेरा कहने का मतलब यह है कि अंग्रेजी कोई हुक्म या आदेश से खत्म होने वाली नहीं है । जो लैंग्वेज हम देखते हैं जिससे कि इकोनोमी की जो नीडज हैं वह भी पूरी हों और जिस को पढ्ने से हम पूरा प्रौफिट भी उठा सकें, वह अंग्रेजी ही है । (इस समय सभापतियों की सूची में से एक सदस्य श्री निहाल सिंह पदासीन हुए) । बहुत से भाई मुझसे सहमत नहीं होंगे, और यह कहेंगे कि यह तो मुनाफाबाजी की बात करते हैं, इसमें अपने राष्ट्रीय हित की भावना नहीं है । लेकिन मैं यह अज' करना चाहता हूं कि मेरा भी और चौधरी माडू सिंह जी का भी सम्बन्ध गुरुकुलों से रहा है और उसमें पंजाब से, दिल्ली से और बिहार से बड़े–बड़े आर्य समाज के नेता आकर भाषण देते रहे हैं और यह उस समय की बात है जिस समय कि देश आजाद भी नहीं हुआ था । हिन्दी और संस्कृत के बारे में बड़े व्याख्यान होते थे लेकिन देखने में यह आया है कि उनके जितने भी बच्चे थे, लड़के थे, कोई भी गुरुकुलों में हिन्दी नहीं पड़ता था, बल्कि एम०ए० पास की विलायत से या दूसरे देखों से अच्छी से अच्छी डिग्री हासिल करते थे और आज वे हकूमत पर छाए हुए हैं । अब आप इस देश की इकोनोमी की नीड्क को देखिए । पहले

सर्विसिज को ही ले लिया जाए । एड– मिनिस्ट्रेटिव सर्विसिज, जितनी भी सरकारी दफ्तरों में हे, चाहे यहां हैं, चाहे सैन्टर में हैं या दूसरी जगहों पर हैं, चाहे इंडस्ट्री में हैं या बिजनैस में हैं, उनके लिए क्या आप यह कह सकते है कि जब तक उनको अंग्रेजी की प्रोफीशिऐसी न हो, अंग्रेजी की पूरी वाकफियत न हो, उनके लिए कोई स्कोप है? फारेन कन्ट्रीज की सर्विसिज में और सरकारी दफ्तरों में कहीं स्कोप है? कितने ही ऐसे कारखाने हैं जिन्हें रिप्रेजैटेटिव चाहिएं, सेल्जमैन चाहिएं, दूसरे लोग चाहिए, क्या वे खप सकते हैं । आप कहीं भी चले जाओ, कहीं स्कोप नहीं है । आज देश की इकोनोमी की जरूरत बिल्कुल तबदील हो चुकी है । आज अगर आप मेन पावर प्लानिंग करें । यह हिसाब लगाएं कि कहां–कहां किस–किस क्षेत्र में किस–किस तरह के आदमियों की जरूरत है तो आप देखेंगे कि ज्यादातर अपने देश में भी और बाहर भी ऐसे लड़के और लड़– कियो की जरूरत है जो अंग्रेजी में पूरी तरह से माहिर हों । इसलिए मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि जहां हम हिन्दी को महत्व देकर जितनी उसकी उन्नति कर सकें, हम करें, वहां अगर अंग्रेजी को इस स्टेज पर हम निगलैक्ट करेंगे, उसको कम महत्व देंगे तो उससे इतना भारी नुक्सान हमारे प्रान्त को होगा कि जिसको हम बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे । मध्य प्रदेश ने थोड़ा अर्सा हुआ, अंग्रेजी को हटा दिया था । यहां हमारे प्रान्त में भी इसी तरह की एक तजवीज थी कि अंग्रेजी को आप्शनल कर दिया जाए ताकि जिसकी तबीयत करे वह दंसवी तक पढ़े जिसकी तबीयत करे वह इससे आगे बढ़े । मैं यह कह रहा

था क मध्य प्रदेश ने कुछ अर्सा हुआ अंग्रेजी को हटा दिया था लेकिन उनको वह रिवाईज करना पड़ा । अगर यहां पर भी ऐसी बात कर दी गई कि जिससे अंग्रेजी आप्शनल बन जाए या उसकी तरफ हमने कम ख्याल रखा, तो हम और भी ज्यादा पिछड़ जाएंगे । आज हमारा कुछ भी हिस्सा देश की नौकरियों में नही है । आप देखे हमारी इकोनोमी है क्या? चेयरमैन साहब, थोड़ा सा टाईम और लेकर मैं खत्म कर रहा हूं । मैं यह कह रहा था कि हमारी इकोनोमी है क्या? ऊपर से लेकर नीचे तक सैडल सर्विसिज हैं, स्टेट की सर्विसिज हैं, पब्लिक एंटरप्राइजिज हैं, इतने बिजनैस एंटरप्राइजिज हैं, विदेशों में इम्पोर्ट एक्सपोर्ट के काम हैं, हमारी विदेशों में एम्बैसीज हैं । इनके अलावा और भी कितने ही अदायरे हैं, उनकी जरूरत की तरफ आप देखें । आप इसी नतीजे पर पहुंचेंगे कि इस वक्त मीडियम आफ इंस्ट्रक्शन अंग्रेजी रखना जरूरी है । आगे टाईम आएगा जब हम कुछ सोच सकते हैं । आहिस्ता–आहिस्ता देश के हालात बदलेंगे लेकिन फिर भी बदले हुए हालात में भी अंग्रेजी को हमें साथ रखना पड़ेगा, इसमें मुझे कोई सन्देह नजर नहीं पड़ता । रूस का मुल्क है, जापान का मुल्क है, यूरोपियन देशों को आप देखे उन्होंने अंग्रेजी को छोड़ा नहीं है, उन्होंने रखा हुआ है, बल्कि अपने देश की इकानामिक नीडज को देखते हुए कई जगह जर्मनी भाषा के स्कूल खोले हुए हैं । मैक्समूलर स्कूल हैं । ये ऐसे स्कूल हैं जहां पर मीडियम आफ इंखक्शन्क जर्मन है । ऐसे स्कूल देश में आठ हैं । पूना, कलकत्ता, बम्बई, आगरा, दिल्ली आदि आठ जगहों में ये

इंस्टीच्यूशन्ज चल रहे छैं । जिनमें जर्मन भाषा मीडियम आफ इंस्ट्रक्शन हैं और वहां पर लाजमी तौर पर जर्मनी भाषा पास करनी पड़ती है ताकि पास करने के बाद वे दूसरे देशों में रोजगार ले सके । आज लोग कहते हैं कि वाइट कालर जौब के लिए पढ़ाई नहीं करनी चाहिए । मैं इससे सहमत नहीं हू । अगर वाइट कालर जाब के लिए पढ़ाई न हो तो कश हवन सन्ध्या के लिए पढाई हो । हवन सन्ध्या शिक्षा नही है । पढाई पर जो आप खर्च करते हैं उसमें आप यह देखे कि प्रोडक्टिव एफिशिऐंसी कितनी बड़ी है । शिक्षा पर खर्च किए हुए एक–एक पैसे से रिटर्न होनी चाहिए । आज जरूरत इस बात की है कि हम देखें कि हमारी जरूरत क्या है । चौधरी साहब, मैं बड़ी नम्रता के साथ आपसे प्रार्थना करना चाहता हूं कि बेरोजगारी हटाने के लिए आपको कदम उठाने चाहिए और इस तरफ आपको गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए । स्कूल अपग्रोडंग करने की बजाय, नयू कालेज और हाई स्कूल खोलने की बजाय आप देखें कि हमारी इकनामिक नीड्ज क्या हैं और फयूचर में आज से दस पन्द्रह साल बाद क्या–क्या आवश्यकताएं पैदा होने वाली हैं । आपको देखना चाहिए कि कितने लड़के बीए. चाहिएं, कितने हाई स्कूल चाहिएं, कितने इंजीनियर्ज चाहिएं, कितने डाक्टर्ज चाहिएं, एग्रीकल्चर के कितने लड़के चाहिए, कितने बिजनैस के चाहिएं, कितने पब्लिक ऐंटरप्राइजिज में चाहिए, कितने सेल्जमैन चाहिएं । यह सारी बात हम असैस करें और असैसमैंट करने के बाद उसकेमुताबिक इंस्टीच्यूशन्ज के बारे में गौर करें । जरूरत के मुताबिक डिफैटं

क्वालिफिकेशन्ज के जितने आदमी चाहिएं, उसी कैपेसिटी के इंस्टीच्यूशन्ज खोलें । अगर हम इसी तरह से कालेज और स्कूल खोलते चले जाएंगे, स्कूलों की अपग्रेडिंग करते चले जाएंगे, तो इसका नतीजा यह होगा कि बेरोजगारी बढ़ती चली जाएगी । आज का नौजवान बहुत निराश है । आज उसके सामने डिग्रियों की कोई अहमियत नहीं है । आपने देखा होगा कि बहुत सी जगहों पर जब नौजवानों को डिग्रियां बांटी गईं! तो उन्होंने डिग्रियां फाड़कर फैक दीं क्योंकि वे जानते हैं कि इनसे कोई फायदा होने वाला नहीं है । मैं चाहता हूं कि मुल्क की इका– नामी की नीडज को देखते हुए फयूचर और प्रैजेंट की रिक्वायरमैंट्स को देखते हुए, उसके मुताबिक एजुकेशन का स्प्रेड–ओवर हो । चौधरी साहब, मैं आपको मुबारिकबाद दूंगा कि इस प्रकार एजुकेशन का स्प्रैड–ओवर करने के बाद हरेक डिग्री के लिए आप गारन्टी दें' स्टेट की तरफ से कि आपको नौकरी दी जाएगी । आप आर्यसमाज के गुरुकुलों में हवन और संध्या सिखाकर प्रान्त का भला नहीं कर सकते । अगर आपने मुकाबले में हरियाणा को कोई जगह दिलवानी है, तो आप थोड़ा प्रोग्रैसिव एटीच्यूड अपनाएं । आप कोई बोल्ड डिसिजन ले– (व्यवधान) –– । चेयरमैन साहब, आप यू.ए.आर. को लें । मैंनै उसकी हिस्टरी पढ़ी है । आप हैरान होंगे यह सुनकर कि जब लड़कों को डिग्रियां दीं तो साथ ही उनको अप्वायंटमैंट लैटर भी दे दिए । मैं कहता हूं कि आप चाहे यह थोड़े से क्षेत्र में करें, लेकिन करके अवश्य देखें । आज यहां पर कोई भी स्वियोरिटी सर्विस की नहीं है । अगर आप यरूनहीं कर

सकते तो कम से कम जिस लड़के को ग्रेजुएट तक पढ़ाते हैं, उसको अनएम्प्लायमैंट पैंशन ही दे दें । आप जरा देखे कि बेरोजगारी की वजह से उनमें कितनी निराशा फैली हुई है । आप गांवों में जाते हैं, वहां पर लड़के कहते हैं कि हमें रोजगार दो । चेयरमैन साहब, मैंने ये दों–चार बातें कहीं हैं । मैं पहले ही कह रहा था कि जो मैं कहना चाहता हूं वह अजीब बातें लगेगी, लेकिन फिर भी मैं कह देता हूं । चेयरमैन साहब, मैं दो बातें खासकर मन्त्री महोदय से कहना चाहता हूं कि एक तो यह कि जो अमीर घरों के लड़के हैं आप उनकी फीस माफ न कर की ऐजुकेशन का जो फैसला है उसको मन्सूख करें । अमीर घरों के लड़कों से तो आप ज्यादा से ज्यादा फीस लें । अमीर घरों के लडके तो दो सौ, चार सौ रुपया टयूशन तक दे देते हैं । उनकी फीस आप माफ करें यह कोई जस्टीफिकेशन नहीं है । आप प्री–प्राइमरी स्कूल देहातों में खोलें । ये स्कूल आप ब्लॉकवाइज खोलें । मैं तो कहता हूं किए इस नए साल में ही यह काम शुरू करें । ट्रेनिंग के स्कूल खोलें और साथ ही टीचर्ज की अच्छे टेरनिग पर जोर दें । आज जो सबसे बड़ा कारण एजुकेशन के स्टैण्डर्ड गिरने का है, वह यह है कि टीचर्ज का स्टैण्डर्ड. नहीं है । मैं ज्यादा कन्ट्रोवर्सी में नहीं पड़ता, लेकिन आज डिसग्रेन्टल्ड टीचर हैं और फेस्ट्रेटिड स्टूडैन्ट है––(व्यवधान) –– । आप ऐसा वातावरण पैदा करे जिससे यह चीज दूर हो जाए । मैं आपका बहुत धन्यवादी होऊंगा बल्कि मैं सारे टीचर्ज को कहूंगा कि चौधरी माडू सिंह के फोटो के सामने रोज नमस्कार किया करो और जहां वह मिल जाएं, तो

उनके पैरों को हाथ लगाया करो । आपने तीन साल पहले 4० हजार लड़कों से दरखास्तें मांग लीं कि आपको जे०बी० टी0 टीचर्ज लगाएंगे और उनसे आपने एक दो लाख रुपया ले लिया और आज तकउनका रिजल्ट अनाउंस नहीं किया । चेयरमैन साहब, मैं आपकी मारफत कहना चाहता हूं कि एस०एस०एस० बोर्ड ने रिजल्ट आउट कर दिया, लिस्ट बनाकर बी०डी०पी०ओज० को भेज दी, लेकिन इन्होंने सिक्रेट इंस्ट्रक्शन्ज इशु करके वह लिस्ट वापिस मंगवा ली और आज उन बातों को काफी दिन बीत गए

Education Minister (ShriMaru Singh Malik) : Wrong, wrong. This

is wrong.

Chaudhri Rizaq Ram : This is as correct as light of the day. आप इनक्वायरी करा लो, मैं इसके लिए तैयार हूं । वह रिजल्ट अभी तक अनाउंस नहीं हुआ है । मैं हर सजा भुगतने के लिए. तैयार हूं । चेयरमैन साहब, इसमें कोई बहस की बात नहीं है और न मैं बहस में पड़ना चाहता हूं । हमको चाहिए कि हम पक्षपात से ऊपर उठकर हर चीज को देखें । जिस चीज से स्टेट की इकानामी एडवांस हो सकती है, वह बात करें । हम उसमें पूरा सहयोग देंगे । आप इसे प्रेसिटीज का इशू न बनाएं । आज यह बात सब मानते हैं कि टीचर्ज का स्टैण्डर्ड बहुत लो है । जेबीटी. टीचर्ज जो हाई स्कूल में हैं, वे लड़कों को नहीं पढ़ा सकते ।

चेयरमैन साहब, जो बी.एड. टीचर्ज हैं, ग्रेजुएट्स हैं, जो कि ऐप्लीकेशन तक भी नहीं लिख सकते, चौधरी साहब, आपने बताया कि उनके एक एक सैन्टैसं में दस दस गल्तियां होती हैं । तो चेयरमैन साहब, आप ही बताए कि अगर इस तरह की एजुकेशन हमारे देश में होगी, तो हमारा देश कैसे प्रगति कर सकता है?

चेयरमैन : चौधरी साहब, राई स्कूल के बारे में भी आपने कुछ बताना था?

चौधरी रिजक राम : हां, याद आया, चेयरमैन साहब आपका इसके लिए बहुत– बहुत धन्यवाद, आपने मुझे याद दिला दिया । चेयरमैन साहब, राई में दो स्कूल हैं, एक स्पोर्ट्स – का और एक दूसरा है । वहां पर मैरिट्स पर एडमिशन होती हैं । वहां पर ऐसे लड़कों को दाखिला मिलता है, जो नर्सरी स्कूलों में पडते हों, आप इस बात की पड़ताल कर सकते हैं, लेकिन जो हमारे देहातों में स्कूल हैं, जिन पर स्टेट का काफी रुपया खर्च किया जा रहा है, उनकी तरफ सरकार का कोई खास ध्यान नहीं है, उन से लोगों को कोई खास फायदा नहीं हो रहा है । इसलिए मेरा यह सुझाव है कि जैसे स्कूल आपने राई वगैरह में खोल रखे हैं, ऐसे स्कूल ब्लाक लेवल पर भी होने चाहिएं । एजुकेशन का स्टैण्डर्ड यकसां नहीं है, यकसां होना चाहिए, क्योंकि शिक्षा का जो फायदा लोगों को पहुंचना चाहिए था, वह पहुंचा नहीं है ।

चेयरमैन साहब, जो लड़का प्राइमरी से हाई, हाई से कालेज में दाखिल हो, उसके लिए जो नया एजुकेशन का सिस्टम 10+2+3 का कई जगहों पर लागू किया गया है, कि दस साल की तालीम के बाद दो साल बच्चे का तजरुबा किया जाए कि क्या वह बच्चा कालेज या युनिवर्सिटी की तालीम में ठीक चल सकता है कि नहीं । ऐसा सिस्टम महाराष्ट्र में और दूसरी कई जगहों पर तजरुबे के तौर पर लागू किया गया है । महाराष्ट्र ने तो इसके लिए एक एक्सपर्ट कमेटी भी बनाई है, जो यह देखती है कि बच्चा ठीक चल सकता है कि नहीं, लेकिन चेयरमैन साहब, इसमें भी काफी गड़बड हो रही है ।

चेयरमैन साहब, एक बात कहना चाहता हूं कि जहां हम कालेजों और स्कूलों में तालीम देते हैं, वहां सबसे पहले हमें फंक्शनल और वोकेशनल एजुकेशन दी जानी चाहिए । कई जगहों पर स्कूलों के साथ फार्मज हैं और कुछ ऐसी जगहों पर स्कूल हैं, जिनके पास आई. टी.आई. और बड़े–बड़े कारखाने हैं और फिर देहातों में भी फार्म काफी हैं, जिनसे विद्यार्थियों को काफी सुविधा मिल सकती है । लड़कों को इस प्रकार की टैक्नीकल शिक्षा इस तरह के इंस्टी– च्यूशन्ज से भी साथ–साथ मिल सकती है । जैसे चाईना में है । उन्होंने ऐसा तजरुबा किया है कि स्कूल की तालीम के बाद बच्चे को दो सारन के लिए किसी फैक्ट्री में या कारखानों में, खेतों में, ट्रेनिंग दी जाए, शिक्षा दी जाए । अब सब से बड़ा प्रश्न हमारे सामने यह है कि जो लड़के स्कूल में या

कालेज में से पढ़ कर निकलते हैं, उनका आइडैटीटी आफ टेलैन्ट ऐंड एप्टीच्चूड किधर है, हम यह देखें कि लड़के की रूचि किस काम की तरफ जा रही है हमें उस लड़के को उसी तरफ ही लगाना चाहिए लेकिन किसी को उसके लक्षय का पता नहीं है कि वह क्या करना चाहता है, उसका दिमाग किधर जा रहा है । कुछ ही माता–पिता गांवों में पढे–लिखे हैं जो कि यह डिटरमिन नहीं कर सकते कि बच्चे की रूचि किस तरफ है । गांवों में बच्चों को गाइड करने वाला कोई नहीं होता, वहां के बच्चे बीए. कर लेते हैं, नौकरी न मिली तो एमए. कर ली, फिर कोई काम धन्धा न मिला, तो ला कर ली, इसका कारण यह हे कि कोई भी उस बच्चे की रूचि को नहीं समझ सकता कि उस बच्चे की रूचि किधर है, बच्चे की रूचि तो सिर्फ एक टीचर ही समझ सकता है, अगर कोई इंस्ट्रूमैट या मशीनरी है, जो यह अन्दाजा लगा सकती है कि बच्चा क्या–क्या चाहता है, तो वह है टीचर । सो मैं अपने एजुकेशन मिनिस्टर साहब का ध्यान इस तरफ दिलाऊगा कि टीचर्क की ट्रांसफर्ज. की पालिसी में थोडी सी नजरसानी रखें और एक टीचर को ज्यादा से ज्यादा अर्से के लिए एक ही जगह पर रखें, ताकि वह बच्चों के रुझान को अच्छी तरह सेरू समझ सके कि बच्चा किस तरफ जाना चाहता है, किस काम की तरफ बच्चे की रूचि है, लेकिन आज तक यही नीति चली आ रही है कि एक टीचर को बहुत जल्दी बदल कर दूसरी जगह भेज दिया जाता है । चेयरमैन साहब, आप को पता है कि प्राइवेट स्कूलों में 30– 35 साल लगातार टीचर एक ही जगह पर काम करते रहते हैं, चौधरी साहब

प्रेसीडैटं अब भी हैं, उनको पता है कि वहां पर जैसे जाट स्कूल वगैरह हैं, टीचर्ज की ट्रांसफर न हीं होती और ऐसा होने पर ही एक टीचर बच्चे को काफी अच्छी तरह से समझ सकता है । इसलिए मेरी तजवीज है कि एक टीचर को एक ही स्कूल में काफी अर्से 'के लिए रहना चाहिए जिसमे कि वह बच्चे को समझ सके कि उसका ध्यान किस तरफ है, आया वह इंडस्ट्रीज की तरफ जाना चाहता है, इंजीनियरिंग की तरफ जाना चाहता है या कि खेती का काम करना चाहता है । अतः बच्चों की रूचि देखकर उसे उसी के मुताबिक काम सीखने का मौका देना चाहिए ।

चेयरमैन साहब, हमारे यहां पर एजुकेशन का इंटैगरेटिड सिस्टम है । आज हम देख रहे हैं कि सर्जीकल सैंटर तो डायरैक्टर टैक्नीकल एजुकेशन के अन्डर है, आईटीआई. के लिए अलग डायरैक्टर हैं और ड़ी. पी. आई. अलग, इनमें आपस में कों–आर्डिनेशन नहीहै । ये सभी चीजें एक ही डिपार्टमैंट के अन्डर होनी चाहिएं । हम अपने लड़कों को टैक्नीकल काम के लिए ऊपर कैसे ला सकते हैं, अब यह यूक अहम काम हमारे सामने है । द्रुम बच्चों को काबिल बनाने के लिए ऊंची से ऊंची शिक्षा देते हैं कि हमारे बच्चे बड़े आदमी बनें, बड़े इंजीनियर बनें, लेकिन शिक्षा के साथ–साथ बच्चे के अन्दर टैक्नीकल चीजों का भी ज्ञान होना चाहिए, केवल बड़ी से बड़ी तालीम ही आदमी को बड़ा इंजीनियर, बड़ा आदमी नहीं बना देती । मैं आपको बताता है कि हमने अमेरिका से बड़े–बड़े इंजीनियर भाखडा डैम बनवाने के लिए

बुलाए, लेकिन वे बिल्कुल अनपढ थे, लेकिन वे अपने तजरुबे के तौर पर, अपनी टैक्नीकल शिक्षा के तौर पर विश्व के सबसे बड़े डैमों में से एक के निर्माता बने । इसलिए स्कुलो या कालेज की पढ़ाई भी इतनी जरूरी नहीं है, जितनी कि टैक्नीकल शिक्षा । जैसे पंडित रामधारी गौड़ जी ने कहा था कि हम लुहार, जुलाहे और दूसरे छोटे धन्धे करने वारनों को काम देंगे, जिससे उनको हुनर मिल सके, लेकिन आज वे बेकार हो चुके हैं, क्योंकि टैरक्टर्ज हो गए हैं, टचूबवैल्ज हो गए हैं, इस वजह से लुहार, जुलाहे और दूसरे छोटे धन्धे करने वालों का काम बन्द हो चुका है । उनको हम ऐसी ट्रेनिंग दें, जिससे कि वे ट्रेक्टरों की मुरम्मत कर सकें या दूसरे टैक्नीकल काम कर सकें. इसलिए उनको हमें वर्कशॉप्स में ऐसी ट्रेनिंग देती चाहिए । इन शब्दों के साथ मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया ।

17.00 बजे

चौधरी मेहर चन्द (बडोपल): चेयरमैन साहब, यह चेंज इन सिस्टम आफ एजुकेशन का जो रैजोल्यूशन है, इसके ऊपर इस हाउस में कई दफा बहस हो चुकी है, लेकिन मैं यह महसूस करता हूं कि हम एक भी कदम आगे नहीं बढ़ सके हैं । मैं यह कहे बगैर नहीं रह सकता कि हमारी पालिसी यह है कि दिल कहां, आवाज कहां, नगमा कहां और साज कहां । मैं ऐसा महसूस करता हूं कि हमारा दिल कहां है, आवाज कहां है, नगमा कहां है, और

साज कहां है । तो यह बात ऐसी नहीं होनी चाहिए । जिस वक्त इस रैजोल्यूशन पर बहस शुरू हुई, 1 5 तारीख को तो मूवर आफ दि रैजोल्यूशन का हाल भी यही था जो मैंने अर्ज किया है, वे भी इसमें डैविएट कर गए, उनको एक ही टयून याद रही । चेंज इन एजुकेशन सिस्टम पर बहस नहीं दुई । लेकिन मैं चौधरी ईश्वर सिंह जी को दाद देता हूं कि उन्हेंने कंक्रीट प्रपोजल्ज भी दीं कि एजुकेशन के सिस्टम में किस तरह से चेंज लाई जा सक्रूती है । चौधरी रिजक राम जी ने भी फरमाया कि कालेज खोलने से या स्कूल खोलने से एजुकेशन में कुछ हासिल नहीं हुआ । मैं उनकी इस बात से सहमत नहीं हू । लेकिन उनकी एक बात से मैं सहमत हूं कि एजुकेशन ऐसी हो जिससे अन एम्प्लायमैंट न फैचे, आज की एजुकेशन अन–एम्प्लायमैंट के लिए रिसपांसिबल है । मैं दावे से कह सकता हूं कि यदि खो सिलसिला जारी रहा, तो इलैक्शन्ज भी लड़ने मुश्किल हो जाएंगे । लेकिन मैं इस बात से एग्री नहीं करता कि एजुकेशन होनी नहीं चाहिए, एजुकेशन जरूर होनी चाहिए लेकिन एजुकेशन वह होनी चाहिए जिससे कि हमारे बच्चे कुछ हुनर सीख सकें । आज की तालीम तो वाकई मैं बेकारी फैला रही है । एक बात चौधरी रिकक राम जी ने और कही कि जो हमारे टीचर्ज हैं, उनका स्टैण्डर्ड अच्छा नहीं है और उन्होंने जेबीटी. टीचर्ज का भी जिक्र किया । कम से कम जेबीटी. टीचर्ज के सम्बन्ध में तो मैं उनसे सहमत हूं कि वाकई उनमे मैजोरिटी ऐसी है जो लैटर तक नहीं लिख सकते, तो ऐसे टीचर बच्चों को क्या पढाएने? हमारे वक्त में जो टीचर्ज होते थे, हमें आज तक भी उन

गुरुओं की याद है कि वे किस तरह बच्चों को प्यार किया करते थे और कितनी अच्छी एजु– केशन देते थे । उनका एक स्टैण्डर्ड था । लेकिन आज का स्टैण्डर्ड यह है कि abble in politics & nothing beyond that जो अबलगा दिया वह यही कहता है कि मेरे से अच्छा कोई नहीं है । तो ऐसे ख्यालात नहीं होने चाहिए । टीचर का रुख बच्चों के प्रति वहीं होना चाहिए, जो एक गुरु का होता है । लेकिन हमने वह चीज इंट्रोयूडस नहीं की, जिससे बच्चों के अन्दर देशभक्ति की भावना पैदा हो बच्चों को ऐसी तालीम दी जानी चाहिए, जिससे उनके अन्दर देशभक्ति के जज– बात पैदा हों । क्रैक्टर बिल्डिग में जिससे मदद मिले, वह तालीम आज नहीं है बल्कि वह तो इससे दूर है । आज वाकई टीचर को यह पता नहीं है कि क्रैक्टर बिल्डिग कैसे होता है, बच्चों में देश भक्ति के जजबात कैसे पैदा किए जा सकते हैं और इसके अलावा हैल्थ की तरफ भी कोई तवज्जोह नहीं है । वे बच्चों को बता नहीं सकते कि सेहत वन ध्यान कैसे रखना है । इसके अलावा एक बात मैं और कह सकता हूं कि हरियाणा में फीमेल एजुकेशन की तरफ कम ध्यान है और यह एजुकेशन ऐसी है जिसके साथ होम साईंस भी लिंक होनी चाहिए जिससे बच्चों को यह सिखाया जा सके कि किस तरह से घर को चलाते हैं । हमारे हरियाणा में जैसे मैं पहले अर्ज कर चुका हूं फीमेल एजुकेशन की कमी है और इसी वजह से आप देहातों में चरने जाएं तो वहां आपको घरों की सफाई कम मिलेगी । कई दफा ऐसा होता है कि शहर से किसी बड़े आदमी ने गांव जाना हो तो गांव वाले सोचते है कि कि ऐसे

नौकर को बुलाया जाए, जो अच्छा खाना बना सके, तो अगर हमारा ध्यान फीमेल एजुकेशन की तरफ हो तो ऐसी प्रोब्लमज को हमारे गांव की लड़कियां हल कर सकती हैं और जिस दिन ऐसा हो जाएगा, तो हमारा स्टैण्डर्ड और भी ऊंचा हो जाएगा । हमारी एजुकेशन में जो दोष हैं, इसके लिए मैं चौधरी माडू सिंह जी को तो दोष नहीं देता क्योंकि यह हमारी खुश किस्मती है कि वे एजुकेशन मिनिस्टर हैं और बदकिस्मती इसलिए है कि उनको कंडैम किया जाता है तो इन्होंने क्या कसूर कर दिया । यह तो वही लार्ड मैकाले का सिस्टम है जो मुद्दतों से चला आ रहा है, वही चल रहा है, कोई चेंज नहीं की गई । मैं एजुकेशन मिनिस्टर को एक ही बात कहना चाहता हूं कि शमा बरदार हैं । कुछ तो समझाओ—ए—शमा बरदारो, क्या यही कुछ इनकलाब ला रहे हो? तो उनको चाहिए कि एजुकेशन का स्टैण्डर्ड ऊंचा हो, एजुकेशन में हुन्नर इंट्रोडघूस किया जाए । मैं यह नहीं कहता कि बच्चे को दूसरी या तीसरी क्लास में ही लोड कर दो लेकिन उसको शिक्षा में हुन्नर सिखाया जाना चाहिए ताकि वह किसी न किसी दस्तकारी का भी काम कर सके । मैं इस बात को नहीँ मानता कि आज के एफ.ए., बीए. लड़के को चिट्ठी लिखनी नहीं आती । हां, दसवीं पास जो है वह तो पढ़ा न पढ़ा के बराबर है, लेकिन बीए. के बारे में यह बात नहीं कहनी चाहिए, उसको कुछ तो आता ही है, लेकिन जैसी वे एक्सपैक्टेशन करते हैं, कि उनके टाइम जितना हो, वह नहीं हो सकता । हमारे पहले जो बुजुर्ग थे, जो आठवीं पास थे, उनकी जो लैंग्वेज थी, या उनका जो नजरिया था, वह आज हमारे

अन्दर नहीं है क्योंकि एजुकेशन का स्टैण्डर्ड दिन–ब–दिन लो होता गया । चेयरमैन साहब, एक बात और है कि हायर एजुकेशन सबके लिए अलाउ नहीं होनी चाहिए । हायर एजुकेशन के लिए ब्राइट स्टूडैन्ट्स चुनने चाहिए, और बाइट स्टूडैन्ट्स जो हैं, उनको भी इररिस्पैक्टिव आफ कास्ट और क्रीड चुनना चाहिए, और उनको सिर्फ स्कालरशिप ही न देकर, उनका सारा एक्सपैडीचर गवर्नमैंट को देना चाहिए । वे नेशन की वैल्थ हैं । पता नहीं कल को वह क्या चमत्कार करके दिखा दें । लेकिन आज हमारा नकरिया यह है कि हम सबको कहते हैं कि दसवीं पास कर लो और नौकरी कर लेना और अगर नौकरी न मिले तो फिर कहते हैं कि अच्छा बी० ए० कर लो बी. ए. में जाकर होश आता है कि बीए. करना तो बेसूद है, इंजीनियर बना लो, लेकिन इ जीनियरिंग में भी कामयाबी नहींहोती, क्योंकि जिसने बी०ए0 तक कुछ नहीं किया, वह इजीनियरिंग में क्या करेगा । समझता हूं कि स्कूल एजुकेशन के बाद बच्चे का ऐप्टीच्यूड टैस्ट होना चाहिए और जो लड़का उस टैस्ट में पास हो उसे उस टैस्ट के मुताबिक सब्जैक्ट्स हायर एजुकेशन में अलाट होने चाहिएं और ऐसे बच्चों को हायर एजुकेशन में जाने के लिए एन्क्रेज करना चाहिए, बाकी जो रह जाएं उनको दस्तकारी और हुनर की ट्रेनिंग दी जाए । गर्वनमैंट ने साधन तो बहुत दे रखे हैं लेकिन लोग आईटीआई. और पोलिटैक्निक की ट्रेनिंग लेकर नौकरियों के पीछे भागते हैं और इतनी नौकरियां कहां से दी जा सकती हैं? इस बारे में मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि इन टैकनी कल अदासे में दाखिला देने

से पहले यह कंडीशन रखी जाए कि लड़के नौकरियों के भरोसे दाखला न लें बल्कि ट्रेनिंग लेने के बाद अपनी वर्कशाप्स खोलें । गवर्नमैंट भी अपनी वर्कशाप्स खोले, चाहे नो प्राफिट नो लॉस पर उनको चलाए, जिनमें वहां पढ़ कर आए लड़के काम करें। इस तरह से एक तो लोगों को रोजगार मिल जाएगा और गवर्नमैंट को भी उससे कुछ न कुछ आमदनी ही होगी, अगर आमदनी न भी हो तो भी बेरोजगारी तो दूर होगी ही । आजकल तालीम का मकसद यही रह गया है कि तालीम हासिल करो और कहीं न कहीं बाबू बन जाओ या और कोई नौकरी तलाश कर लो । मैं कहता हूं कि मौजूदा सरकार तो क्या हजारों सरकारें भी आ जाए, इस तरह से नौकरियां देने से बेरोजगारी नहीं दूर हो सकती । अपोजीशन के भाई नुक्ताचीनी करते हैं लेकिन इनकी गवर्नमैंट भी एक दफा आ चुकी है, इन्होंने क्या तीर मार लिए । आईंदा इनकी सरकार कभी आएगी ही नहीं और कभी आ भी गई तो ये भी नौकरियां नहीं दे पाएंगे । यह किसी के बस की बात नहीं है । तो मेरा इस बारे में सुझाव यह है कि एक तो सरकार वर्कशाप्स खोले, जहां पर बच्चे काम करें दूसरे ये जो प्राइवेट फैक्ट्रियां हैं, जिनके मालिक मिनिस्टरों के आसपास फिरते रहते हैं, कि फलां कोटा दो फलां लाइसेंस दो, उनको कहा जाए कि उनको ये कोटे लाइसैसं तब मिलेंगे, अगर वे जो बच्चे तालीम हासिल करके आते हैं, उनको एम्लायमैंट देंगे । अब तो यह हो रहा है कि जो इन फैक्ट्रियों के डायरैक्टर वगैरा बने हैं और बनते हैं वे सारे चाचु ताउ, मामू फूफा लगाए जाते हैं औरों को नौकरी ही नहीं देते हैं । यह

तरीका गलत है । इन आसामियों पर मैरिट पर लेना चाहिए और गवर्नमैंट को चाहिए कि वहां वह दखल दे और उनको कहे कि उनको मैरिट पर वहां पर एम्प्लायमैंट देनी पडेगी । मैं चेंज आफ एजुकेशन पैटर्न पर ज्यादा नहीं बोलूंगा क्योंकि मेरा दिल भरा हुआ है । मैं भी एक दफा इस हाउस में ऐसे प्रस्ताव का मूवर था, जिस पर काफी बहस हुई थो, लेकिन बात वही की वहीं हए, कुछ हुआ नहों है । जब मैं दिहात में जाता हूं तो अनपढ़ लोग भी पूछते हैं कि आप इस सिस्टम आफ एजुकेशन को क्यों नहीं बदलते हैं और यह पढ़े लिखे बच्चों की पलटने कहां जाएंगीं चौधरी रिजक राम जी की एक बात की मैं ताइद करता हूं कि किसी भी गांव में जाओ, वहां फलाक आफ शीप की तरह पढ़े लिखे बच्चे पिरते मिलेगे, जो नैव रि यों की तलाश में हैं । वे इतने निराश हैं कि कहते हैं कि अब की दफा चुनाव के मैदान में आओ, फिर देख लेंगे । एक बात और चौधरी साहब ने कही, जिससे मैं सहमत नहीं हूं । यह दूसरी बात हए कि सरकार उसके लिए खुद तैयार नहीं है क्योंकि फाइनैंसिज की कमी है । वह कहते हैं कि स्कूलों की अपग्रेडिंग न हो, अगर अपग्रेडिंग नहीं होगी, तो फिर यह तालीम कहां से मिलेगी और क्या हम फिर अनपढता लाना चाहते हैं । होना यह चाहिए कि हायरएजुकेशन के सिस्टम में चेंज लानी चाहिए टैलैन्ट्रिड बच्चों को आगे हायर एजुकेशन के लिए कालेजों में जाने देना चाहिए और शिक्षा का स्तरऐसा हो कि अच्छे से अच्छे डाक्टर, बेहतरीन इन्जिनीयर और टीचर प्रोफैसर बनें और जो नीचे के लेवल के बच्चे हैं, उनको

वोकेशनल टेरनिंग देकर इस काबिल बनाया जाए कि वे अपने पांव पर खड़े होकर अपनी रोटी कमा सकें । एक बात और है कि हमारे बच्चों में डिगनिटी आफ लेबर नहीं है । हमारे टाइम में और बात थी । आजकल तो स्कूल में किसी बच्चे को कोई टीचर किसी काम के लिए नहीं कह सकता, पानी की बाल्टी तक नही मंगा सकता लेकिन हमारे वक्त में हमने सब कुछ किया । इतना सेवा भाव था हमारे अन्दर कि हम टीचर को सही मायनों में गुरु समझते थे और इस नाते सेवा करते थे । मेरे कहने का मतलब यह है कि हमारे अन्दर डिगनिटी आफ लेबर होनी चाहिए । जब मैं पोलिटिक्स में नहीं पड़ा था, उससे पहले मैं सर्विस में था और मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि मैंने ज्यादा सर्विस हिन्दुस्तानियों के नीचे नहीं करी है, फारेन रुलर्क के नीचे करी है और इस नाते में दावे के साथ कह सकता हूं कि उन फारेनरुलर्ज के अन्दर डिगनिटी आफ लेबर थी, जो कि इण्डियन अफसरों के अन्दर नहीं है । अगर किसी अग्रेज अफ सर की कार रास्ते में खराब हो जाती थी, तो वह कार की मुरम्मत खुद कर लेता था और वह नहीं देखता था कि वह साहब हैं, उसकी पैंट की कीज खराब हो जाएगी, फौरन कार खोलकर ठीक कर लेता था । उनको कार के एक–एक पुरजे का पता होता था लेकिन आज के अफसरों को देख लें, उनको पता नहीं कि कार का इंजन कैसा होता है और जिसे पता भी हो, वह इंजन को खोलना अपनी तौहीन समझता है, क्योंकि उसमें डिगनिटी आफ लेबर नहीं है । मैंने देखा है कि वे खुद जूते पालिश करते थे और हम यह देखकर हैरान होते थे,

लेकिन आज घरों में बच्चे जूते को पालिश करना तौहीन समझते हैं और मोची को ढूंढते हैं । देखने को तो ये छोटी–छोटी बाते हैं, लेकिन इनसे करैक्टर बनता है और इसके बनने से नेशन मजबूत बनती है । मैं सलेबस तो सजैस्ट नहीं कर सकता, क्योंकि यह एजुकेशनिस्ट्स का काम है, लेकिन मैं मन्त्री महोदय से और एजुकेशनिस्ट्स से अर्ज करूंगा कि जो बातें मैंने कहीं हैं, इनको स्कूलों, कालेजों में इंट्रोडपूस किया जाए । चौधरी ईश्वर सिंह जी प्रिंसिपल रह चुके हैं । उन्होने भी अपने तजरुबे से कई बातें बताई हैं । मैंने तो किसी को पढ़ाया नहीं । हां, जब नौकरी नहीं मिली थीं, तो तीन महीने तक बच्चों को पढ़ाया था पता नहों गलत पढ़ाया था या सहो पढ़ाया था लेकिन 25 रुपए माहवार की पढ़ाने की नौकरी जरूर की थी । 25 रुपए का टीचर पढ़ा भी क्या सकता था, किसी बच्चे को थप्पड़ मार दिए, तो उसकी मां ने कह दिया अब के उसके बच्चे को मारा तो देख लूगा और फिर मैंने नौकरी छोड़ दी –(हंसी) –खैर मेरे कहने का मतलब यह है कि एजुकेशनिस्ट्स को इस मसले पर गौर करना चाहिए ।

चौधरी साहब ने एक बात कही और वह छउ इंगलिश लैंवेज की बात । बि सी हद तक मैं उन से इत्तफाक करता हूं । जहां अंग्रेज हमें गुलामी दे गए हैं, क्लर्की दे गए हैं, वहां मैं एक चीज जरूर कहूंगा कि वे हमे इंगलिश लैंग्वेज दे गए हैं । मैं यह नही कहता कि मैं हिन्दी के विरुद्ध हूं । मैं नैलनल लैंवेज का सबसे ज्यादा हिमायती' हूं, नैशनल लैवज को अडाप्ट करना चाहता

हूं । हमें आनी चाहिए, कम से कम कुछ न कुछ शब्द तो बोलने चाहिए, लेकिन इसके साथ ही साथ मैं यह भी कहूंगा कि अगर हिन्दुस्तान के अन्दर अंग्रेजी न होती, तो हमारा तामिलनाडु से कोई लिंक नहों था, तमिलनाडु तो क्या किसी दूसरे स्टेट के साथ हमारा कोई लिंक नहीं था । अगर लिंक है तो सिर्फ यही था कि वे हमारी हिन्दी लैंवेज को अडॉप्ट कर लेते, लेकिन वह तब था, अगर वे अडॉप्ट कर लेते, जैसे हरियाणा ने हिन्दी को अडाप्ट कर रखा है । आप पड़ौसी राज्य को देख लीजिए । हमें अनपढ़ बना रखा है । चेयरमैन साहब, पंजाब के बीच से गुजर कर हमें जाना पड़ता है, हमें बड़ी दिक्कत होती है । मैं कभी किसी सब्जैक्ट में फेल नहीं हुआ, लेकिन सिर्फ एक जबान थी, जिसमें फेल होता था और वह थी पंजाबी । आम तौर पर मैं पटियाला से होता हुआ नहीं जाता, क्योकि वहां पर हर बोर्ड पंजाबी में लिखा हुआ –उई । हरियाणा की भाषा हिन्दी है और पंजाबी को रीजनल लैंग्वेज के तौर पर रखा है, क्योंकि हम दूसरी लैंग्वेजिज को एन्करेज करते हैं और पंजाब को भी इसी तरह दूसरी लैग्वेकिज को एन्करेज करना चाहिए, लेकिन मैं देखता हूं । वहां हिन्दी का नामोनिशान मिटा दिया । कोई बोर्ड, जनरल इनफमेंशन की कोई चीज हिन्दी में नहीं मिलेगी । यह बस कहां जाएगी, यह रोड कहां जाएगी, दूसरे आदमियों को पता नही लगता कि कहां जाएगी । ऐसा क्यों है? यह नैशनेलिजमे को एनकरेज करने की बात नहीं है, इससे भेदभाव पैदा होता छउ । हरियाणा स्टेट के अन्दर ऐसी भावना नहीं है । हमने कोई आदमी किसी को कहता हुआ नहीं देखा कि

तुमने पंजाबी लैंग्वेज क्यों ली है । एक बात हरियाणा के अन्दर जरूर है कि वे समझते हैं कि हिन्दी हमारी नैशनल लैग्वेज है, इसको एकरेज करना है और इसको एन– करेज करने के लिए प्रयत्न भी करते हैं । लेकिन इसके साथ ही साथ मैं यूक बात जरूर कहूंगा, मैं इस बात से सहमत हूं कि अंग्रेजी का नामोनिशान नहीं लिटन्ग चाहिए, यह होनी चाहिए । यह इण्डिया में ही नहों बल्कि दूसरे मुल्कों के साथ सम्पर्क रखने के लिए निहायत जरूरी है । जो भाई यह कहते हैं कि इसको मिटा दो If or one do not agree with it यह मेरा अपना नजरिया है । मैं यह नहीं कहता कि मेरा प्यार हिन्दी से नहीं है । मैं इंगलिश की निस्वत हिन्दी को ज्यादा प्यार करता हूं, लेकिन बच्चों को यह कहना कि अंग्रेजी का 'कक्का' न सीखो, यह गलत बात है । हां, एक बात कर लीजिए कि सैन्ट्रल गवर्नमैंट के जितने टैस्ट होते हैं, उनसे अंग्रेजी बिल्कुल उड़ा दो । जो अंग्रेजी पढ़े लिखे होते हैं, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि उन्हीं में से ज्यादातर कैंडीडेट्स आई.ए. एस. के एग्जाम में सफल होते हैंय वे नहीं आते जिन के पास महज आर्ट सब्जैक्ट होता है । अंग्रेजी के इलावा या वो आते हैं जिन के पास साईस सब्जैक्ट होता है । साईंस सब्जैक्ट बड़ा बेहतरीन सब्जैक्ट है, इसकी तरफ हमें ज्यादा ध्यान देना चाहिए, साईंस हमारी अच्छी होनी चाहिए । कई लोग पूछते हैं कि साहब, ये क्या हैं, वे कहते हैं कि एम.एस.सी. हैं । किस चीज की एम.एस. सी. हैं, तो कहते हैं कि साहब, फिजिक्स के एमएससी. हैं । ये जो फिजिक्स के, बांटनी के एम.एस.सी. हैं, इन में से बिरले ही

कंडीडेट्स होते हैं, जिन्होंने कोई खोज की हो, कोई इनवैन्शन की हो, सांईस की कोई खास नालेज नहीं रखते, सिवाय इसके कि उनके पास एम.एस.सी. की डिग्री है, बुकिश नालेज है, प्रैक्टिकल नालेज की कोई चीज नहीं है । बुकिश नालेज रखने वाले कुछ नौजवान इसका खास नालेज समझते हैं । आजकल के बच्चे हमें समझते हैं कि ये दकियानूसी आदमी हैं पुराने जमाने के ख्यालात रखते हैं, ठीक है हमारी नालेज कुछ भी हो, लेकिन हम यह अच्छी तरह समझते हैं कि प्रैक्टिकल नालेज निहायत जरूरी है । आप किसी स्टेट के पालिटिशियन को ले लीजिए । बेहतरीन पालिटीशियन वह है जिसके पास प्रैक्टिकल एक्सपीरिएंस है । महज पी.एच.डी. की डिग्री देका किमी आदमी को अगररू मुख्य मन्नी के पद पर बैठा दिया जाए, जिसके पास कोई तजरुबा न हो, तो वह क्या करेगा कई कई बार इस हाउस में चर्चा हुआ है और लोग कहते हैं कि चौधरी बसी लाल बेहतरीन मुख्य मन्त्री हैं । बे क्यों कहते हैं क्या वे पी.एच.डी. हैं इसलिए नहीं, उनके पास तजरुबा है, इसलिए कहते हैं ।

चेयरमैन : वे पी.एच.डी. भी हैं (हंसी) ।

चौधरी मेहर चन्द : वे पी.एच.डी. नहीं है, अगर आप उनको पी.एच.डी. की डिग्री दिलवा दें, तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी–(व्यवधान) – । मैं तालीम के लिहाज से कह रहा हूं, पी. एच.डी. जरूरी नहीं, तजरुबा जरुरी है, तजरुवे में कड़े हुए हैं ।

इनको यह भी पता है कि गरीब का दर्द क्या होता है । इन्होंने गुरबत देखी

यह बात शिक्षा में आनी चाहिए । सत्य बोलें धर्म पर चले । जब हम इस बात को लेकर चलेंगे, तो हमारी एक तरह से रीढ़ की हड्डी मजबूत हो जाएगी और हमारे बच्चों में अच्छी बाते आएंगीं, जो बच्चा सच बोलता है, वह निडर होता है । जिस बच्चे में. कोई खोट होता है, वह सच नहीं बोल सकता । वह निडर होकर नहीं बोल सकता, डरपोक बनेगा,. कभी स्वावलम्बी नहीं बन सकता । जो सच्चा होता है, वह निडर होता है । अगर किसी इंसान को स्वावलम्बी बनाना है तो उसमें सच्चाई पैदा करनी पड़ेगी, निडरता पैदा करनी पडेगी, तभी वह स्वावलम्बी बन सकता है ।

मेरा कहने का मतलब यह है कि हमारी शिक्षा की बुनियाद धर्म पर होनी चाहिए और शिक्षा भी ऐसे धर्म की जिससे हुन शिक्षा को रूढिवाद में न डालें, बल्कि उसके अन्दर आधुनिक तौर पर परिवर्तन लाएं । अन्य मैं पाश्चात्य शिक्षा के बारे में

आपको बताना चाहता हूं । आप विदेशों मेंजाकर देखिए । वहां पर मैंने खुद जाकर यह देखा है कि – वहां पर छोटे– छोटे बच्चों को जैसे लकड़ी का काम है, बिजली का काम है, यह करना आता है।, वह हर छोटे–छोटे काम को जानते हैं । वहां पर छोटे–छोटे काम करने वाला कारीगर नहीं मिलता । वहां पर पोर्टर नहीं मिलता, इलैक्ट्रिशियन नहीं मिलता और अगर मिलता है तो बहुत मंहगे दाम पर मिलता है । वहां पर अनस्किल्ड लेबर की कमी है, सैमी–स्किल्ड लैबर की कमी है । वहां पर इसके लिए बहुत पैसा देना पड़ता है । लिहाजा हर घर में लडका–लड़की इन् कामों को समझते हैं और जानते हैं । जो इन कामों को जानते हैं वे इन की इज्जत भी करते. हैं, जिसे हम डिगनिटी आफ लेबर कहते हैं । वे बच्चे बढ़ई का भी काम करते हैं और इलैक्ट्रिशियन का भी काम करते हैं, अपने घर में भी करते हैं और अपने दूसरों' के यहां मदद के लिए भी करते हैं । इससे उनमें डिगनिटी पैदा होती है । आप जानते हैं यह कहा जाता है Work is workship' वे काम को गान देते हैं । मैं चाहता हूं कि यी भावना बच्चों के अन्दर शिक्षा के दौरान पैदा की जाय । एक तरफ तो उनको स्वावलम्बी बनाया जाए और दूसरी तरफ उनमें डिगनिटी आफ लैबर पैदा की जाए । इससे जितने भी हमारे देश के बच्चे आगे आएंगे उनमें डिगनिटी पैदा होगी और इससे देश का इम्मेज ऊंचा हो सकेगा । इससे वे आपस में मिल–जुलकर सामाजिक तरीके से समाज की कुरीतिंयो कां दूर करने में अग्रसर होंगे और हमारे देश के लिए एक स्तम्भ स बित होंगे और देश की एकता बनाए रखने

में सहायक होंगे । आप जानते हैं our country is a country of diversity हमारा देश 14 भाषओ का देश है. यहां पर कितनी ही जात पात है, यहां पर कितने ही खान पान हैं और कितने ही विचार हैं । ऐसे देश को एक सूत्र में बांधने का शिक्षा ही एक मात्र माध्यम है । जो पंजाब वाले हैं, वे हरियाणवी सीखें, जो हरियाणा वाले हैं वे पंजाबी 'सीखें, जो दक्षिण वाले हैं, वे उत्तर की भाषा. सीखें, और जो उत्तर वाले हैं, वे दक्षिण की भाषा सीखें । देश में और आपस में इन्टैग्रेशन पैदा करने के लिए ऐसा करना चाहिए । हम एक दूसरे की भाषा की ताईद करें । अगर हमने राष्ट्रीय, आर्थिक, सामाजिक और सियासी तरीके से ऊंचा उठना है, तो हमें 'शिक्षा पद्धति के अन्दर यह बात लानी पड़ेगी । जो 10, 2 और 3 वाली नई. बात आई है, मैं इसको नहीं समझ पाया । तीनों कमीशन्ज ने काफी सोच–विचार कर और सूझ–बुझ से है, इनको यह पता है कि आजादी की क्या कीमत है, कैसे ली जाती है । कई भगई जिन्होंने कोई तजरुबा नहीं किया, वे कहते हैं कि आजादी क्या चीज है, वे आजादी को कुछ नहीं समझते । आजादी की कीमत उन से पूछो, जिन्हेंने मुसीबतें सही हैं । मेरे कहने का मतलब यह है कि एजुकेशन के अन्दर प्रैक्टिकल चीज होनी चाहिए, जब तक यह नहीं होगी, तब तक एजुकेशन का स्टैडर्ड ऊंचा नहीं हो सकता । जब तक ए० बी० सी० पढ़ते रहेंगे, अ, इ, उ, पढ़ते रहेंगे, तब तक कोई कामयाबी नहीं होगी । मैं ज्यादा नहीं कहूंगा, शुरु में यह रैजोल्यूशन मैंने ही मूव किया था, उस वक्त मैंने बहुत कुछ कहा था और बडे–बडे एजुकेशनिस्ट्स की एग्कम्पल्ज भी

कोट की थी, उन कोटेशन्ज को मैं रिपीट नहीं करना चाहता । सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि एजुकेशन में प्रैक्टिकल चीज लाएं, दस्तकारी लाएं, कैरैक्टर बिल्डिग, नैशनल स्पिरिट की एजुकेशन दें, नैशनल सोंग्ज सिखाए, हैल्थ मेन्टेन करने की शिक्ष दें, इन चीजों की प्रैक्टिकल नालेज होनी चाहिए । जहां तक हैल्य का ताल्लुक है, हम हाउस में जिक्र कर रहे थे, हमारे बच्चे दूसरे मुल्कों के बच्चो के मुकाबने में गेम्ज में पीछे रह जाते हैं । ऑलम्पिक गेम्ज होती हैं, जिस मुल्क के बच्चे खेलने में अच्छे होते हैं, उन को इनाम दिया जाता है । क्या हमारे बच्चे इनाम नहीं ले सकते? ले सकते हैं, लेकिन उनकी हैल्थ की तरफ थोड़ा ध्यान देने की जरूरत है । हैल्थ को प्रैक्टिकल नालेज होनी चाहिए, स्कूलों और कालेजों में एग्रीकल्चर को इंट्रोडचूस कर लें, लेकिन शुरु में नहीं, पांचवीं जमात के बाद शुरु कर दें । चेयरमैन साहब, मैं आपका शुकिया अदा करता हूं जो आपने मुझे टाईम दिया । आखिर में मैं एक बात कहूंगा, मैं बड़ी गलती करता अगर न कहता । मुझे वक्त पर याद आ गया । मैं एक बात ग्रजुकेशन मिनिस्टर साहब से कहूंगा । जिन बातो के उन्होंने यहां वायदे किए हैं, एजुकेशन सिस्टम में चेंज करने के वे पूरे करें । जहां तक स्कुलों को अपग्रेड करने का सम्बन्ध है, दे भी करें, एरउकेशन को आगे बढाओ और फैलाओ । बिल्कुल बन्द करके इनिट्रेट क्यों बनाया जाय, अब वे कग से कम 19– 20 बोल नो सकते हें, उनको कुछ बोलना तो आता है, कुछ न कुछ तो आता है । इसलिए जो अब शिक्षा चल रही है, जब तक चेंज न हो जाए,

चलनी चाहिए । मैं अपने चीफ मिनिस्टर साहब से एक बात कहूंगा कि जिस तरह हरियाणा कें पहले चीफ मिनिस्टर चौधरी बंसी लाल जी हरियाणा में डिवैल्पमैंट के मामले में, विकास के मामले में, इरीगेशन के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ गए हैं, उसी तरह से उनको अपना नाम बाबस्ता कर देना चाहिए कि उनके टाईम में हरियाणा में चेंज हुन सिस्टम आफ एजुकेशन हुआ । इनका नाम भी हिस्टरी मे लिखा जाएगा और इस बात को भूलेंगे नहीं ।

श्री गिरीश चन्द्र जोशी (यमुना नगर) : चेयरमैन साहब, मुझे खुशी है कि आपने मुझे बोलने के लिए टाईम दिया । पिछले सप्ताह भी और आज के दिन भी शिक्षा पद्धति में चेंज लाने के लिए इस रैजोल्यूशन पर विचार हो रहा है । सबसे पहले तो हमें यह सोचना एं कि हमारी मौजूदा शिक्षा पद्धति क्या है, और इसको कैसे बदलें? सदियों पहले हम क्या थे और क्या हमारी शिक्षा पद्धति थी? अंग्रेजों ने देश को गुलाम बनाया और हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति को चेंज किया । हमारा देश बड़े–बड़े गुरुओं का देश रहा है । हमारे धर्म शास्त्रों में कहा जाता है–

''गुरु खह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः

गुरु साक्षात् परम ब्रह्म तस्म थी गुरवे नमः''

पुराने जमाने में हम अपने गुरुओं को भगवान का रूप देते थे, लेकिन जहां गुरु का इतना मान होता था, वहां गुरु भी अपने शिष्यों का मान रखते थे । उनका भविष्य उनके हाथ में

होता था । बरतानी शिक्षा लार्ड मैकाले के आने के बाद हुई । लार्ड मैकाले काफी होशियार और काबिल व्यक्ति था । उस वक्त वे हमारे देश में शासक के बतौर आए थे । उन्होंने किस तरह से हमारे देश को गुलाम बनाए रखा, वह है हमारी शिक्षा की रूप रेखा, जिसका जहरीला असर आज तक भी नहीं गया है ।

सबसे पहले तो देश की आजादी का सवाल हुया और आजादी के बाद तुरन्तही हमारे देश के प्रधान मच्छी ने राधाकृष्णन कमीशन बनाया, जो यूनिवर्सिटी एजुकेशन के सिलसिले में 1948 में बना था । राधाकृष्णन हमारे देश के बहुत बड़े शिक्षा शास्त्री थे । वे हमारे देश में ही नहीं, विदेशों में भी बड़े शिक्षा शास्त्री माने जाते थे । उन्होंने विलायत के अन्दर भी पढ़ाया । वे इण्डियन फिलासफी आफ कल्चर के मास्टर थे । इंग्लैण्ड में उनकी बहुत बड़ी धाक थी । बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के वाइस–चांसलर भी रहे । अं भी वहीं पर पढ़ा हूं । राधाकृष्णन कमीशन के बाद मुदालियर कमीशन सन् 1952 में सैकिन्डरी ऐजुकेशन के सिलसिले में आया । उसके बाद सन् 1964 में स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने कोठारी कमीशन बनाया, जिसकी टर्म आफ रैफ्रेस काफी सौड थी । उसकी रिकमैन्डेशन के आधार पर थ्री इयर्ज डिग्री कोर्स और हायर सैकेण्डरी एजुकेशन सिस्टम आया । रीजनल लैंग्वेज को भी शिक्षा का माध्यम रखा गया । समझने की बात तो यह है कि शिक्षा की पद्धति को हरियाणा सरकार नहीं बदल सकती । शिक्षा पद्धति को चेंज करना केन्द्रीय सरकार का

कार्य है । सैन्टर का सब्जैक्ट है । जो भी पालिसी बनानी है, वह सैन्टर गवर्नमैंट ने बनानी है । हमारा देश 14 भाषाओं का देश है । जिस देश की 14 भाषाएं हों, उसमें शिक्षा का क्या सिद्धान्त हो, सिर्फ हरियाणा का ख्याल रखकर कोई पालिसी नहीं बनाई जा सकती है, बल्कि सारे देश का विचार रखते हुए कोई पालिसी बनायी जा सकती है । शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे राष्ट्रीयता की भावना पैदा हो, और अर्थशास्त्र के बतौर शिक्षा का बहुत बड़ा स्थान है । मैं इसलिए कहता हूं कि आजकल जो मौजूदा शिक्षा चल रही है, अगर इसमें तबदीली लाएं, तो बहुत सारे हायर सैकेण्ड्री और डरी ईयर्ज डिग्री कोर्स में तबदीली लानी पड़ेगी । अब जो लिक्षा का नया सिस्टम आ रहा है, 10+2+3 वह अभी हमारे यहां लागू नहीं हुआ है ।देहली में हो चुका है । यह है हायर एजुकेशन, एजूकेशन एजुकेशन औंर लोअर एजुकेशन । सवाल तो यह है कि ये सारी एजुकेशन किस तरह से हों, क्या शिक्षा पद्धति बनाई जाए? हरियाणा के अन्दर क्षिक्षा की काफी तरक्की हुई है, जिसके आंकड़े मेरे पास हैं ।

सन् 1967–68 में हरियाणा में 4346 प्राइमरी स्कूल थे और सन् 1974–75 में 59,129 हो गए । हायर सैकेण्ड्री स्कूल 1967– 68 में 713 थे और सन् 1974–75 में 1 1०1 हो गए । कालेज पहले 48 थे और अब 110 हो गए हैं । इसी तरह से प्राइमरो और स्कूल कालेजों के छात्रों की संख्या 1967– 68 में 12. 48 लाख थी लेकिन 1974–7 5 में 17. 43 लाख हो गई ।

टीचर्ज की संख्या 35, 358 थी, लेकिन अब 50, 439 हो चुकी है । यह जो मैंने आंकड़े दिए हैं, इनसे साबित होता है कि हरियाणा में 1967 से लेकर 1974–75 तक स्कूल, कालेजिज और अध्यापकों में काफी वृद्धि हुई है तो शिक्षा में भी काफी बढ़ौतरी हुई होगी । अब सवाल यह है कि शिक्षा किस प्रकार से दी जाए, यह खाली सरकार पर मुनहसर नहीं होता है, कुछ हम लोगों पर भी मुनहसर होता है । हमें अपने प्रान्त की आर्थिक व्यवस्था को भी बढ़ाना हए । हमें आर्थिक न्याय और सामाजिक समा– नता भी देनी है, जिसका लक्ष्य समाजवाद जै । हमारे गर्व साहब ने भी अपने अभिभाषण में कहा है कि सब को समान चीजें मिलें । यही सही मानों में समाजवाद है । अगर हमें हरेक को आर्थिक न्याय देना है, तो हरेक को शिक्षा लेने का मौका मिले और शिक्षा लेने केबाद वह रोजगार का हकदार बने, लेकिन यह तभी हो सकता कुए जब हम इस तरह की शिक्षा दें कि बच्चे अपने कोस्वावलम्बी बनाएं, अपने चारों तरफ उत्थान करें, अपने अन्दर गुण औदा करें, इनसटिव क्रिएटिव इनसटिंक्ट पैदा करें, जिसको बुनियाद नौकरी की तरफ न रहे । वे खुद. के लिए तो रोजगार के जराय पैदा कर सकते हैं, साथ में दूसरों को भी नौकरी दे सकते हैं । आज जरूरत सैल्फ एम्प्लायमैंट की है । शिक्षा की पद्धति प्रोडक्टिव पद्धति होनी चाहिए । आज हमारी आर्थिक व्यवस्था को देखा जाए, तो यह मानना पड़ेगा कि हमारे देश में कितने परसैंट प्रोडक्टिव मैन पावरहै, जिस देश में प्रोडक्टिव मैनं पावर ज्यादा परसैन्ट होती है, उसी देश की अर्थ अर्थवस्था सुदृढ़ होती है । अन–प्रोडक्टिव

व्यक्ति आज हमारे देश में नहीं चल सकता । फाइनैंस मिनिस्टर साहब ने भी अपनी स्पीच में साफ कहा हैकिप्रोडक्टिव एक्सपैंडीचर करना है और प्रोडक्टिव अदायरे को प्रायरिटी देनी है । इसी तरह से शिक्षा के लिए भी काफी अनुदान रखा गया है, लेकिन एस्टेबलिशमैंट के खर्चे हैं, टीचर्ज के खचे हैं, उनको भी सुदृढ़ता से देखने की उरूरू रत है ।

शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन लाने के लिए काफी साथियों ने चर्चा की है, लेकिन एक बात जरूर रखना चाहता हूं और साफ कर देना चाहता हूं कि शिक्षा और सियासत के क्षेत्र में धर्म का पचड़ा नहीं होना चाहिए । अगर हम धर्म की रंगत लेकर शिक्षा और सिसायत में आएं, तो दोनों बातें चौपट हो जाती हैं । ऐसी बात होनी चाहिए कि शिक्षा और सियासत में धर्म की बुनियाद होनी चाहिए. । शिक्षा के अन्दर धर्म को बेस बनाते हैं तो उनके अन्दर नैतिकता पैदा करती है, उनके चरित्र का उत्थान करतीहै, उनके अन्दर सच्चाई की भावना पैदा करती है । जैसा कि एक– श्लोक के अन्दर कहा है –

सत्यम वदा धर्मम चरुः

स्वाध्यायाम मा प्रमदः

यह बात शिक्षा में आनी चाहिए । सत्य बोलें धर्म पर चले । जब हम इस बात को लेकर चलेंगे, तो हमारी एक तरह से रीढ़ की हड्डी मजबूत हो जाएगी और हमारे बच्चों में अच्छी बाते

आएंगीं, जो बच्चा सच बोलता है, वह निडर होता है । जिस बच्चे में. कोई खोट होता है, वह सच नहीं बोल सकता । वह निडर होकर नहीं बोल सकता, डरपोक बनेगा,. कभी स्वावलम्बी नहीं बन सकता । जो सच्चा होता है, वह निडर होता है । अगर किसी इंसान को स्वावलम्बी बनाना है तो उसमें सच्चाई पैदा करनी पड़ेगी, निडरता पैदा करनी पडेगी, तभी वह स्वावलम्बी बन सकता है ।

मेरा कहने का मतलब यह है कि हमारी शिक्षा की बुनियाद धर्म पर होनी चाहिए और शिक्षा भी ऐसे धर्म की जिससे हुन शिक्षा को रूढिवाद में न डालें, बल्कि उसके अन्दर आधुनिक तौर पर परिवर्तन लाएं । अन्य मैं पाश्चात्य शिक्षा के बारे में आपको बताना चाहता हूं । आप विदेशों मेंजाकर देखिए । वहां पर मैंने खुद जाकर यह देखा है कि – वहां पर छोटे– छोटे बच्चों को जैसे लकड़ी का काम है, बिजली का काम है, यह करना आता है।, वह हर छोटे–छोटे काम को जानते हैं । वहां पर छोटे–छोटे काम करने वाला कारीगर नहीं मिलता । वहां पर पोर्टर नहीं मिलता, इलैक्ट्रिशियन नहीं मिलता और अगर मिलता है तो बहुत मंहगे दाम पर मिलता है । वहां पर अनस्किल्ड लेबर की कमी है, सैमी–स्किल्ड लैबर की कमी है । वहां पर इसके लिए बहुत पैसा देना पड़ता है । लिहाजा हर घर में लडका–लड़की इन् कामों को समझते हैं और जानते हैं । जो इन कामों को जानते हैं वे इन की इज्जत भी करते. हैं, जिसे हम डिगनिटी आफ लेबर

कहते हैं । वे बच्चे बढ़ई का भी काम करते हैं और इलैक्ट्रिशियन का भी काम करते हैं, अपने घर में भी करते हैं और अपने दूसरों' के यहां मदद के लिए भी करते हैं । इससे उनमें डिगनिटी पैदा होती है । आप जानते हैं यह कहा जाता है Work is workship वे काम को गान देते हैं । मैं चाहता हूं कि यी भावना बच्चों के अन्दर शिक्षा के दौरान पैदा की जाय । एक तरफ तो उनको स्वावलम्बी बनाया जाए और दूसरी तरफ उनमें डिगनिटी आफ लैबर पैदा की जाए । इससे जितने भी हमारे देश के बच्चे आगे आएंगे उनमें डिगनिटी पैदा होगी और इससे देश का इम्मेज ऊंचा हो सकेगा । इससे वे आपस में मिल–जुलकर सामाजिक तरीके से समाज की कुरीतिंयो कां दूर करने में अग्रसर होंगे और हमारे देश के लिए एक स्तम्भ स बित होंगे और देश की एकता बनाए रखने में सहायक होंगे । आप जानते हैं our country is a country of diversity हमारा देश 14 भाषओ का देश है. यहां पर कितनी ही जात पात है, यहां पर कितने ही खान पान हैं और कितने ही विचार हैं । ऐसे देश को एक सूत्र में बांधने का शिक्षा ही एक मात्र माध्यम है । जो पंजाब वाले हैं, वे हरियाणवी सीखें, जो हरियाणा वाले हैं वे पंजाबी 'सीखें, जो दक्षिण वाले हैं, वे उत्तर की भाषा. सीखें, और जो उत्तर वाले हैं, वे दक्षिण की भाषा सीखें । देश में और आपस में इन्टैग्रेशन पैदा करने के लिए ऐसा करना चाहिए । हम एक दूसरे की भाषा की ताईद करें । अगर हमने राष्ट्रीय, आर्थिक, सामाजिक और सियासी तरीके से ऊंचा उठना है, तो हमें 'शिक्षा पद्धति के अन्दर यह बात लानी पड़ेगी । जो 10,

2 और 3 वाली नई. बात आई है, मैं इसको नहीं समझ पाया । तीनों कमीशन्ज ने काफी सोच–विचार कर और सूझ–बुझ से अपनी रिकमैन्डेशनज दी हैं । गांधी जी जो थे, वे बेसिक एजुकेशन की बात करते थे और मौडल एजुकेशन की बात करते थे । मैं इस बारे में एक बात जरूर महसूस करता हूं कि छोटे बच्चे की उमर ऐसी होती है कि उसको नर्सरी तक तो खुला छोड़ देना चाहिए । उस पर कोई दबाव नहीं पड़ना चाहिए । वह प्रकृति से खुद–ब–खुद सीखकर अपनी असली कपल बनाने की कोशिश करे, लेकिन उसको थोड़ा सा बचाव में रखा जाए । उसके बाद प्रइमरी, मिडल में जब बच्चा आता है तो वह एक दूसरे को पहचानने लगता है, उसका ज्ञान दोहरा होने लगता है । पहले तो उसका अकेला ज्ञान है, उसको भले–बुरे का कोई ज्ञान नहों है, लेकिन जब वह आगे बढ़ता है तो उसका ज्ञान दोहरा हो जाता है वह विवेकशील हो जाता है । वह यह महसूस करने लग जाता है कि यह बुरा है और यह अच्छा है । इस स्टेज पर उसको यह चीजे बतानी पड़ेगी । उसके विवेक को मजबूत करना पड़ेगा, उसके विवेक को शारपन करना पड़ेगा और सही तरीके से तेज करना पड़ेगा । लेकिन इस शिक्षा को देने की जिम्मेदारी शिक्षकों के ऊपर है । यह जो कोठारी कमीशन ने रिपोर्ट दी है, उसमें उन्होंने शिक्षकों के लिए रिफैशर कोर्स भी रखा है । लेकिन सवाल यह है कि उन शिक्षकों का कोर्स किस ढंग से होना चाहिए, शिक्षक किस स्तर के कैसे होने चाहिए उनकी जिम्मेवारी क्या होनी चाहिए, जहां पर बच्चे पढ़ते हैं, उन जगहों का वातावरण क्या होना चाहिए और

इसके साथ ही उनको क्या सहूलियतें होनी चाहिएं, यह सारी चीजे देखने की सख्त जरूरत है! इन सब चीजों की बुनियाद पैसा है और इसके लिए ज्यादा से ज्यादा पैसा कहां से आए, यह भी देखने की बात है । जिस तरह हम और मामलों में प्रायरिटीज देते हैं और हरियाणा सरकार ने अब इरीगेशन ऐंड पावर कोप्रायरिटी दी हुई है, उसी तरह से इसके लिए भीकोई नकोई प्रायरिटी फिक्स कन्नी पड़ेगी, इसके बिना काम नहीं चल सकता । लेकिन बगैर पैसे के भी हम कुछ सुधार ला सकते हैं । शिक्षा के मामले में करूरी उपायों को हमने नजर अन्दाज नहीं करना है । अगर हम शिक्षा को ऐसी स्तर पर लाकर खडा कर देंगे, तो हम आर्थिक तौर पर क्तौ उठ सकते हैं । मैं यह भी महसूस करता हूं कि इससे हमारे बहुत लोग प्रोडक्टिव मै न पावर की शक्ल में खड़े हो सकते हैं चाहे वह दस्तकारी की शक्ल में हो, चाहे देहात में छोटी–छोटी फैक्ट्रीज की शक्ल में हों, चाहे वहू नौकरीपेशा की शक्ल में हौं, चाहे वहतिजारत पैदा करने बालों की शक्ल में हों । इस तरह से हम सैल्फ एम्प्लायमैंट पैदा करके अपनी अर्थ व्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं । इससे हमारे जराये बढ़ते हैं, जिससे हमारी प्रोडक्शन बढ्ती है और हमारी इकोनोमी री–जनरेट होती है और हम आगे को बढ़ते हैं । यह एक बहुत बडी चीज है. जो द्रुम शिक्षा के जरि।! कर सकते हैं । शिक्षा के बारे में जो मेरा सोचने का नजरिया है, वह मैंने आपके सामने रखा है । मैं ज्यादा न कहता हुआ एक बात ही कहूंगा कि यह जो 10, 2 और 3 का सिलसिला है, इसमें 10 तो हाई स्कूल के लिए हैं, दो साल

वोकेशनल ट्रेनिंग के लिए और तीन साल डिग्री कोर्स के लिए हैं, इस में जो दो साल हैं, वे कालेज के अन्दर लगाने चाहिए' । अगर 10 के अन्दर ही यह दो साल जोड़ दिए गये, तो जिस तरह से हमने देखा कि हमारा पिछला हायर सैकेण्ड्री सिस्टम का तजुर्बा कारगर साबित नहीं हुआ, हो सकता है कि यह भी कामयाब न हो । इसलिए मेरा कहना यह है कि यह जो दो साल का पीरियड है, यह कालेज के अन्दर लगना चाहिए । इस पीरियड को कालेज के साथ ऐसे ढंग से अटैच किया जाए कि वहां पर इस की जांच हो और यह कालेज के साथ लगा रहे । अब जो स्कूल बनाने जा रहे हैं, उनमें इस बात को सोचना जरूरी है । मैं इतना ही कहते हुए चेयरमैन साहब यह कहूंगा कि इस पर काफी बहस हो चुकी है । इसलिए मैं उन बातों की ज्यादा तफसील में न जाते हुए जो यहां पर कही जा चुकी हैं, इतना ही कहूंगा कि इस सिल– सिले में काफी अच्छी बातें आई हैं और हमें शिक्षा के सिलसिले में यह प्राथमिकता देनी है कि प्रोडक्टिव मैन पावर बने, ताकि देश की अर्थ व्यवस्था सुदृढ़ हो सके । इन शब्दों के साथ मैं आपका शुकिया अदा करता हूं ।

राव बंसी सिंह (अटेली) : चेयरमैन साहब, शिक्षा के बारे में जो रैजोल्यूशन गुलाटी साहब ने रखा था, उस पर बड़ी विस्तारपूर्वक चर्चा हो रही है । मैं यह समझता हूं कि हमारे माननीय सदस्य श्री जोशी जी ने जितने विस्तारपूर्वक शिक्षा के बारे में बता दिया है, उसको देखते हुए हमारे लिए कोई ऐसी बात नहीं

रहती, जिस पर हम रौशनी डाले । लेकिन मैं यह समझता हूं कि शिक्षा पद्धति के बारे में परिवर्तन लाना चाहिए और यह समाज के लिए बहुत ही जरूरी हो गया है, क्योंकि आज जो शिक्षा पद्धति चल रही है, उस से समाज में जितने भी लड़के हाई स्कूल से या कालेज से निकलते हैं, वे सब के सब अन–एमलायमैंट की हालत में आ रहे हैं । आज हमारे देश के सामने अन–एम्पाल्यमेंट एक बड़ी भारी समस्या है, जो यह पैदा कर रही है । इसके अलावा एक दूसरी प्रौब्लम जो आज हमारी शिक्षा पद्धति पैदा कर रही है, वह आज हमारे देश में ही नहीं सारी दुनियां के सामने है और वह है फैमिली प्लानिंग । फैमिली प्लानिंग का जो मसला है, वह इस शिक्षा से हल नहीं हुआ है, क्योकि इस तरफ उनका ध्यान नहीं दिलाया जाता । इससे वह प्रॉब्लम बढ़ रही है । यह दोनों मसले, अन–एम्प्लायमैंट और फैमिली प्लानिंग । आज देश के सामने हैं । इन विषयों परही मैं बात कागा क्योंकि शिक्षा की पद्धति में चेंज लाकर ही हम इन दोनों मसलों को हल कर सकते हैं । चेयरमैन साहब, आज जो हरियाणा में शिक्षा चल रही है, उसके ऊपर मैं आपका थोड़ा सा ध्यान दिलाऊगा । हमारे शिक्षा मन्त्री जी भी यहां बैठे हैं, मैं अपने विचारों द्वारा जो शिक्षा पद्धति आज चल रही है, उसके बारे में उनको अवगत कराने की कोशिश करुंगा । आज जो बच्चे पढ़ते हैं, उन बच्चों को, जब टीचर कक्षा के अन्दर जाते हैं, रोजाना लैसन देते हैं । इस के इलस्वा उनको होम टासक भी दिया जाता है । वे बच्चे अपनी होम टासज करके ले जाते हैं और उनकी कापियां देखकर अध्यापक साइन भी कर देते हैं । इसके

बावजूद भी अगर बच्चों के पेरैन्ट्स पढ़े लिखे हों और वे उनकी कापियां देखें तो उनमें 5–7 गलतियां अवश्य मिल जाती हैं । हालांकि कापी पर लाल लाइन के निशान लगे होते हैं । मैं समझता हूं कि आज की शिक्षा क्लर्क बनाने वाली शिक्षा है । ऐसी शिक्षा होनी चाहिए, जो क्लर्क न बनाए। जब तक हम इस बात का ध्यान नहीं रखेंगे कि प्राईमरी स्कुल, हाई स्कूल और मिडिल स्कूल की शिक्षा के जो अध्यापक हों, वह लरन्ड हों, विद्वान हों, जब तक हम लरन्ड टीचर्ज को नहीं लगाएंगे, तब तक यह प्रौब्लम हल नहीं हो सकती । उसका कारण यह है कि जब बच्चे नर्सरी से मिडल में आते हैं, तो उस बच्चे को मनोवैज्ञानिक ढग से शिक्षा देने की जरूरत है । अगर बच्चे का ध्यान बिजनैस की तरफ है तो उसे उसी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है, अगर एग्रीकल्चर की तरफ रुझान है, तो उस तरह की शिक्षा की आवश्यकता है । उस प्रवृत्ति की जांच करने के बाद अध्यापक उसके रुझान के मुताबिक अग शिक्षा देता है तो वह बच्चा आत्म–निर्भर हो सकेगा । अगर मनोवैज्ञानिक ढंग से बच्चे को शिक्षा नहीं दी जाएगी तो उस शिक्षा से बच्चा क्लर्क ही बनेगा और उस शिक्षा का परिणम यह निकलेगा कि जब बच्चा पढ़ लिखकर बाहर आएगा तो वह समझेगा कि मैंने तो हाई स्कूल पास किया है, अब मेरे लिए घर पर करने के लिए कोई काम नहीं रह जाता । अगर उसे सर्विस मिल जाए तो काम चल सकता है और तभी वह मां बाग का भार उतार सकता है । अगर नौकरी नहीं मिलती, तो घर के काम करने में अपी हतक समझता है । इसलिए इस एजुकेशन को देखना

डिपार्टमैंट का फर्ज हो जाता है कि यह एग्रीकल्चरिस्ट का लड़का है, इसके घर पर जमीन है, इसको जमीन की शिक्षा देनी है । यह इंडस्ट्रियलिस्ट का लडका है, इसको इंडस्ट्री की शिक्षा देनी है, यह बिजनैसमैन का लड़का है इसको बिजनैस की शिक्षा– देनी है । इस हालत में एग्री– कल्चरिस्ट के बच्चे को एग्रीकल्चर की शिक्षा देनी चाहिए और जहां पंचायत के फार्म हैं, उन को स्कूलों के साथ अटैच कर देना चाहिए ताकि स्कूल के बच्चे उन एग्रीकल्चर फार्मज में प्रैक्टिकल ज्ञान प्राप्त कर सकें । प्रैक्टिकल ज्ञान प्राप्त होने पर भी अगर नौकरी न मिले तो भी घर पर वह खेती का काम कर सकता है । चेयरमैन साहब, आजकल डिगनिटी आफ लेबर की भावना बच्चों के अन्दर से मिटा दी जाती है । बच्चा जब पढ़कर निकलता है तो घर का काम करने में बेइज्जती समझता है । अगर घर पर गोबर गैस प्लान्ट लगा एं, तो वह गोबर उठाकर उसमें पानी मिलाकर गैस प्लान्ट में डालना वह अपनी बेइज्जती समझता है । आज के बच्चे के अन्दर स्कूल में यह भावना पैदा नहीं की जाती कि हमें अपने हाथ से काम करने में गौरव समझना चाहिए, शान समझनी चाहिए । मेरा विचार है कि पहली शिक्षा तो बच्चे में डियनिंटी आठ लेबर को भावना पैग करके चाहिए । दूसरे स्बावलम्बो की शिक्षा देनी चाहिए । जब बच्चे कालेज या स्कूल से निकले तो नौकरी की तरफ न देखे बल्कि उसको प्रैक्टिकल नालिज होनी चाहिए । एग्रीकलचरिस्ट का लड़का एग्रीकल्चर का काम करे, बिजनैसमैन का लड़का बिजनैस का काम करे । इस प्रकार की शिक्षा की आज आवश्यकता है ।

चेयरमैन साहब, मैं सबसे बड़ी कमी गर्ल्ज–एजुकेशन की महसूस करता हूं । यह ठीक है कि 1967 के बाद से लड़कियों की शिक्षा में काफी उन्नति हुई है, लेकिन अभी भी काफी कमी है, आज की लड़कियों को कल की माताएं बनना है अगर उनको अच्छी शिक्षा दी जाएगी तो वे अच्छी माता बन सकेंगीं, अच्छे बच्चे पैदा कर सकेंगी और फिर उन बच्चों पर शिक्षित माताओं का प्रभाव भी अच्छा होगा । बच्चे बड़े होकर समाज का अंग बनेंगे । अगर उनका चरित्र अच्छा होगा तो समाज अच्छा होगा और समाज अच्छा होगा तो देश भी अच्छा होगा यह सब लड़कियों की अच्छी शिक्षा से ही हो सकता है । जिन इलाकों में कन्याओं के अलग स्कूल नहीं हैं और को–एजुकेशन में लड़कियों को भेजने से लोग हिचकते हैं तो वहां पर अलग से लड़कियों के स्कूल खोले जाए । इसी पर देश और समाज की उन्नति निर्भर करती है ।

शिक्षा मन्त्री महोदय से मेरी प्रार्थना है कि वे कन्याओं की शिक्षा की तरफ अधिक ध्यान दें । चेयरमैन साहब, इतना ही कहकर मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय हिया ।

चौधरी शयाम लाल (पलवल) : माननीय चेयरमैन साहब, सदन के समक्ष शिक्षा की वर्तमान पद्धति मै आम्ल परिवर्तन लाने का प्रस्ताव प्रसतुत है । वास्तवमें मनुष्य में गुण या. दोष तीन प्रकार के उत्पन्न होते हैं–जन्म से, संगति से और शिक्षा से । कुछ जन्मजात प्रवृत्तियां होती हैं जैसे हम देखते है कि एक हिरणी के

बच्चे को दौड़ने और छलांग की कोई शिक्षा नहीं दी जाती लेकिन वह अपने आप ही दौड़ने और छलांग लगाने लग जाता है । कहने का अभिप्राय यह है कि कुछ बातें तो जन्म से होती हैं । दूसरे संगति का मनुष्यके जीवन कोरू बनाने या बिगाड़ने में बहुत बड़ा हाथ है । जैसे कि बेल का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता, वह बेल पेड के सहारे उसकी चोटी तक पहुंच जाती है, उसकी संगति लेकर । इसीलिए कहा जाता है कि मनुष्य जहां बैठेगा, उसका प्रभाव उस पर होना स्वाभाविक है । आप इव बेचने वाले की दुकान पर जाते हैं और बेशक आप इत्र नहीं खरीदते लेकिन खुशबू अवश्य आपके कपड़ों में से आने लगेगी । जैसे कहावत भी है –

यद्यपि गंधी कुछ देत ना

तो भी वास सुवास ।

इस बारे में एक किस्सा भी है । दो सगे भाई थे । बड़ा भाई काफी सज्जन था और दूसरा भाई काफी दुष्ट था । किसी ने उस सज्जन भाई से प्रश्न किया कि तुम दोनों सगे भाई हो, फिर क्या बात है कि तुम इतने भगत हो और वह इतना दुष्ट है तुम में आपस में भिन्नता क्यों है? उसने उत्तर दिया–

अहम् मुनि नाम वचनम् श्रणोमी,

श्रगोति थस्य यवनस्य वाक्यम्

न तस्य दोषों न च में गुणोयम ।

ससर्गजा दोषो गुणे भवन्ति ।''

यानी मैं मुनियों के वचन सुनता हूं अच्छे सज्जन लोगों में बैठता हूं और वह दुष्ट लोगों में बैठता है, खराब लोगों की संगति करता है । मैं भला हूं तो इसमें मेरा कोई गुण नहीं है और वह दुष्ट एं इसमें उसका कोई दोष नहीं, क्योंकि दोष और गण संगति से उत्पन्न होते हैं ।

इसके पश्चात् मनुष्य का बनना और बिगडना शिक्षा पर निर्भर करता है । शिक्षा पर दो दिन से चची जारी छउ और बार–बार यह बात दोहराई जा रही है कि शिक्षा जाब–ओरियनटिड हो, उसमें डिगनिटी आफ लेबर होनी चाहिए । जब मैं सर्विस करता था और जिस स्कूल का प्रिंसिपल था, वहां पर जे० बी० टी० क्लासिज भी थीं । उसमें क्ले माडलिग, कार्ड बोर्ड माडलिंग, लेदर वर्क, एग्रीकल्चर, माइनर कपट, मेजर क्रापट आदि विषय थे । हम देखते थे कि ये चीजे सिफ' इम्तिहान तक हाँ सीमित थी । आगे जाकर उनका कोई उपयोग नहीं होता । प्रैक्टिकली भी कुछ नहई । होता था । अध्यापक लोग भी इनका इस्तेमाल ऐसे ही करते थे जिस प्रकार उन्होंने प्राप्त की थी । हम यह देखते थे कि लड़ के चोरी करके पास करने का यत्न करते थे । किसी से लेदर का काम करवा लिया, किसी से क्ले मौडलिग बनवा ली, किसी से ड्राईग बनवा ली और एग्जामिनर के सामने

रख दी । तो चोरी से और नकल करने से वे डिग्रियां प्राप्त की गई हैं । चेयरमैन साहब, कई माननीय सदस्यों ने यहां पर यह कहा कि फार्मज होने चाहिए, एग्रीकल्चर की ट्रेनिग होनी चाहिए, लेकिन आजकल के वक्त में किसानों के बच्चे खेती करने कोतैयार नहीं और दुकानदार का लड़का दुकान पर बैठने के लिए तैयार नहीं है, क्योंकि आजकल की शिक्षा ही इस प्रकार की है कि वे ऐसा काम करना अगना अपमान समझते हैं, उनकी अपना घर का काम करने में शम' आती है ।

चेयरमैन साहब, मैं आपको एक और बात बताता हूं कि 14 प्रकार की प्रवृत्तियां होती हैं, उनमें से एक प्रवृत्ति होती है सैल्फ असरशन की, दिखावे की प्रवृत्ति और यह सब में होती है । आज लोग दिखावे की प्रवृत्ति में पड़े हुए हैं, टीचर के सामने लड़का ढीली ढाली पैन्ट डालकर, लम्बे–लम्बे बाल करके और मुंह में सिग्रेट डालकर निकलना अपनी शान समझता है और टीचर के सामने घरेलू काम करता हुआ, शायद वह यह समझता कि वह टीचर की नजरों में गिर जाएगा । मैं आपको आप बीती सुनाता हूं, मैं एक गांव में चला गया, तो सामने से एक लड़का तूड़े (भूसा) का टोकरा भर कर आ रहा था और. मैं जब उसे सामने से दिखाई दिया तो वह एक घर में घुस गया, मैंने दूसरे लड़के से पूछा कि यह उस का घर है, तो वह कहने लगा कि यह घर तौ उसका नहीं है, दूसरा है, सो वह इस लिए घर में घुसा कि सामने से तूड़े का टोकरा ले जाते हुए हैडमास्टर ने देख लिया तो

उसकी तौहीन होगी । तो इस प्रकार की प्रवृत्ति से लडके घर का काम काज करने में अपनी तौहीन समझते हैं, यही हुक बेरोज–गारी की समस्या है, जो हमारे सभी साथियों के साथ सिरदर्दी बनी हुई है और इससे कितनो अन–एम्प्लायमैंट हो गई है । एक छोटी सी नौकरी के लिए रोज हजारों एप्लीकेशनज आती हैं । सो मेरा कहने का मतलब है कि जब तक हम इस दिखावे की भावना को नहीं छोड़ते और हम अपने घर का काम करने में जो कि हमारे बुजुर्गों का काम है, शर्म महसूस करते हैं, तब तक हम आगे नहीं बढ सकते, जिसकी वजह से हम यहां तक पहुंचे हैं, और जिस काम को करने में हमारे बुजुर्गो की बेइज्जती नहीं हुई, अपमान नहीं हुआ, उसी को करने में आज हम अपना अपमान समझते हैं, अपनी बेइज्जती समझते हैं, क्योंकि. हमें आज इस प्रकार की शिक्षा नहीं दी जाती और न ही हमारे में वह स्पिरिट पैदा की जाती है । इसका एक ही कारण है । मैं तो लड़कों को कहा करता हूं कि जिस के मां बाप का जो पेशा है, जो धन्धा है, उसमें उसको एक आध घण्टा जरूर लगाना चाहिए । दुकानदारका लड़का दुकान पर बैठे, किसान का लड़का खेतों में जरूर काम करे ताकि जो हमारा पैतृक व्यवसाय हैं, कम सेकम हम उसमें तो निपुण हों, लेकिन वह यह समझकर चलते हैं कि यह काम तो हमने करना ही नहीं हैं, हम तो बाबू और साहब बनेंगे और ऐसा सोचकर वे कुछ भी नहीं बन पाते । वह उलटा समाज पर बोझ बन जाते हैं तो इसलिए डिगनिटी आफ लेबर बहुत आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा का मतलब है शारीरिक उन्नति, मानसिक उन्नति,

सामाजिक और राजनैतिक उन्नति । सम्पूर्ण शिक्षित तो हम उसे कह सकते हैं जिसमें यह सभी गुण विद्यमान हों । केवल डिग्रियों से बात नहीं बनती, जैसा कि मैंने पहले ही' बताया है कि चोरी और नकल से डिग्रिया प्राप्त कर लेते हैं और फिर शिक्षा भी उसी प्रकार की ही देते हैं । आज लोग गलत तरीके से नौकरी भी मांगना चाहते हैं । हमारे पास कई साथी आते हैं और कहते हैं किं चाहे जितने भी पैसे खर्च हो जाएं, हमें नौकरी चाहिए । आज नौकरी प्राप्त करने के लिए योग्यता का कोई पैमाना नहीं रहा है । लोग तो यह समझते हैं कि किसी की जमीर को खरीदकर नौकरी मिल जाए, क्योंकि उन्होंने जो डिग्रियां ली हैं, वह उस तरीके से ली हैं । तो वह इसे प्रकार से समाज को इस धन्धे से गन्दा करना चाहते हैं । शिक्षा विभाग ही किसी समाज के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण विभाग है लेकिन शिक्षा में जो शिक्षक आते हैं, यह बड़े दु:ख की बातें है कि उनकी टीचर बुनने की लास्ट आपशन होती है, वे पहले और जगहों पर ट्राई करते हैं जहां पर इंस्पैक्टर शब्द हो, वहां पर भागते हैं या जहां पर ऑफिसर शब्द हो, वहां पर भागते हैं । जब किसी तरफ हाथ नहीं पडता और चारों तरफ अन्धेरा हो जाता 'है, तो फिर टीचरी लाईन की तरफ भागते हैं । जब तक हमारे शिक्षक इस कैलीबर के नहीं होंगे, स्टैण्डर्ड के नहीं होंगे । तब तक हम बच्चों को सही शिक्षा नहीं दे पाएंगे । आज हम कई बार अपने पूर्वजों का और अपने गुरुओं का जिकर करते हैं । उनका शिक्षा की तरफ जो डेडीकेशन था वह केवल तनख्वाह प्राप्ति नहीं था, बल्कि वे लोग अपना कर्त्तव्य

समझते थे कि हमने बच्चो का जीवन बनाना है, जिससे दुइ आगे जाकर तरक्की कर सेके, लेकिन आज कें टीचर तो केवल अंगुलियों. पर दिन गिनते रहते है कि कब महीना खत्म हो और कब तनख्वाह मिले । आजकल विद्याथियों में भी वह पुराने जमाने वाली भावना नहीं है । उनमें भी गुरु वाली भावना नहीं है । वह भी यह समझता है कि टीचर की तो पढ़ाने की डयूटी है, क्योंकि सरकार उसको तनख्वाह देती है और हम भी फीस देते हैं और इसके बदले में शिक्षा देना उनकी डयूटी है, यह कोई हम पर एहसान नहीं है । आजकल शिक्षक भी अपनी. शिक्षा बेचता है, शिक्षक के अन्दर अगर किसी को ज्ञान देने की कंजूसी आ जाए, कि यह ज्ञान दे दिया तो बड़ा गलत हो जाएगा, तो यह समाज के लिए हानिकारक है । वह क्लास में बच्चों के साथ जस्टिस नहीं कर पाता और फिर बच्चों के माता–पिता को अलग से बुलाकर यह सलाह देता है कि आपका लड़का कमजोर है, इसके लिए आप टंचूशन लगवाइए, अन्यथा यह क्लास में चलने वाला नहीं है । फिर वह घर पर बच्चों को अच्छे तरीके से पढ़ाने की कोशिश करता है, क्योंकि वह उसकी एक तरह से दुकान हो गई, अच्छा रेपुटेशन होगा, अच्छी पढ़ाई होगी, अच्छे लड़के आएंगे । मतलब कद्रुने का यह है कि जब कोई टीचर अपने प्रोफैशन के प्रति मनी माईंडिड हो जाता है, तो उसे विद्यार्थी के प्रति कोई श्रद्धा नहीं रहती । यह भी मैं एक कारण समझता हूं जिससे हमारी शिक्षा पद्धति में एक प्रकार की कमी है, त्रुटि है। जिसको हमें दूर करना है ।

चेयरमैन साहब, इससे आगे मैं कुछ स्पोर्टस के बारे में कहना चाहता हूं । यहां पर कई मेरे भाइयों ने स्पोर्टस स्कूल राई का भी जिकर किया, यह स्पोर्टस भी बच्चों के जीवन के लिए यूक आवश्यक अंग है, क्योंकि sound mind in a sound body वाली कहावत निरर्थक नहीं है । जब तक हम स्वस्थ्य नहीं होंगे, तब तक हम कुछ नहीं कर सकेंगे क्योंकि कहा जाता है कि स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ्य दिमाग होता है । हमारे यहां खेलों का कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं है । हम देखते हैं कि पी० टी० आई० साहेबान पांच सात दिन पहले इस भावना से बच्चों को खिलाते हैं कि हम टीम के साथ बाहर चले जाएं, और जो फण्डज हैं, उनके साथ हम भी सैर कर आएंगे । वहू इसे तो चार दिन का खेल तमाशा समझते हैं, डस भावना से वह लोग भी चलते हैं । अगर एक अच्छा खिलाड़ी पैदा किया जाए, तो उसमें अपना नाम भी होगा, प्रान्त का नाम भी होगा । अच्छा खिलाड़ी एक भी निकल जाए, तो उससे देश का नाम ऊंचा हो जाता है । अगर इस भावना से वे चल, तो अवश्य ही बच्चों में उत्साह पैदा हो सकता है । पर वे इस भावना से नहीं चलते, अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए सब कुछ करते हैं । अतरू हमें खेलों की तरफ विशेष छगन देना होगा । अगर हम सही मायनों में किसी को शिक्षित बनाना चाहते हैं तो स्वास्थ्य का होना बहुत जरूरी है । यह करैक्टर बिल्डिग है । चौधरी ईश्वर सिंह जी ने कहा कि मनुष्य के अन्दर कई प्रवृत्तियां होती हैं । गाने की प्रवृत्ति, अच्छे गाने अगर हम उन्हें न देंगे तो फिर बच्चे फिल्मी गाने ही गाएंगे, दूसरे अच्छे म्यूजिक नहीं सीख

पाएंगे' । ' यदि यह सब जगह पर सम्भव. न हो तो बड़े–बड़े केन्द्रों पर तो प्रबन्ध होना आवश्यक है । रबिन्द्र नाथ जी ने एक नर्व पद्धति का स्कूल खोला था । उसमें कोई क्लासिज नहीं थी, बच्चे फी छोड़ दिए जाते थे, शिक्षक अलग–अलग बैठे होते हैं, कोई म्यूजिक वाला, कोई मैथेमैटिक्स वाला, कोई अंग्रेजी वाला, कोई हिन्दी वाला । सब कुछ बच्चों के ऊपर छोड़ रखा था कि जहां पर उसकी प्रवृत्ति है, वहां –पर वहू उस अध्यापक के पास जाए और अपनी रूचि के मुताबिक सीखे। उन्होंने एक बात और वच्वों के लिए कही थी कि बच्चें एक कोमा' खिलते हुए फूल की तरह हैं । इन खिलते हुए फूलों पर फव्वारों का पानी डालें या थोड़ी– थोड़ी शबनम उन पर पड़े, तो वे अच्छे फूल सकते हैं । अगर उनके ऊपर ओले पड़ने लगेंगे, तो उनकी पंखुडिया उखड़ जाएंगी ।

उन्होंने यह कहा था कि क्लास में बैठे हुए जो खिलते हुए फूल है, उनको अध्यापक जब अपने मन का भाषण ठोंसते हैं, तो उन पर ऐसे प्रभाव होता है, जैसे खिलते ीउ फूल पर ओले का । तो इनका मानसिक विकास नहीं हो पाता । इसलिए हमारी जो एजुकेशन है, उसमें यी देखा जाना चाहिए कि बच्चा क्या चाहता है, किस तरह से वह चलना चाहता है, और क्या उसकी प्रवृत्तियां हैं, यह सब कुछ देखना पड़ता है । जब शिक्षक को ट्रेनिंग दी जाती है, और उसको मनोविज्ञान पढ़ाया जाता है तो उसकी बहुत बड़ी डयूटी है कि उस बच्चे की हिस्टरी देखे, फैमिली बैक–ग्राउंड

देखे और बच्चे की प्रवृत्ति का भी ध्यान रखे, यानी एक हिस्टरी तैयार करके चला जाए और उसी के अनुसार उसके साथ व्यवहार किया जातु, लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाता, कर्त्तव्य–पालन में वह थोड़ी कोताही करता है, क्योंकि आज यह तुक आम भावना है कि हम अधिकारों को तो याद रखते हैं, लेकिन कर्त्तव्य भूल जाते हैं और जब कर्त्तव्य नहीं रहता होवइ अधिकार अधिकार नहीं रह जाता । तो यह अधिकार और कर्त्तव्य ये दोनों तो को–रिलैटिड सी चीज है, साथ–साथ चलने वाली चीजें हैं । तो शिक्षक और शिक्षार्थी जब तक दोनों अपना कर्त्तव्य याद नहीं करेंगे तब तक यह बात ठीक ढंग से चल नहीं पाती । अब स्वावलम्बी बनने के लिए जब तक कोई टैक्नीकल ट्रेनिंग नहीं दी जाएगी, टैक्नीकल भी इस किस्म की दी जाए, जो उसे लाभदायक हो । आजकल नौकरियों का धन्धा यह है कि नौकरी देते वक्त भी हमें कुछ न कुछ सोचना पड़ेगा कि किमको नौकरी दी जाए, नौकरी के लिए आधार बनाना पड़ेगा । जो कारखानेदार है, मिल मालिक है या बहुत बड़ा जमींदार है, सरमाएदार है उन पर बैन लगाना होगा, उनको नौकरी की आवश्यकता नहीं एं और वे आज इसलिए नौकरी प्राप्त कर लेते हैं कि उनके पास पैसा होता है और जिसको वास्तव में नौकरी कीजरूरत है, उसको मिल नहीं पाती । अब एक दो हजार रुपए महीना पाने वाले अफसर का लड़का तो कुछ दिन बेरोजगार रह सकता है, लेकिन ।रक दो मौ रुपए महीना पाने वाला मजदूर या चपरासी का लड़का अगर घर बैठ जाए तो उसके लिए वह समस्या बन जाता है । तो नौकरियों में भी इस किस्म

का प्रैफ्रैंस हमें देना होगा । यदि हम बीस सूत्रीय कार्यक्रम को पूर्ण रूप से लागू करना चाहते हैं, तो ऐसा करना ही पड़ेगा । बीस सूत्रीय कार्यक्रम क्या है? हमें सबको समान अवसर देना है । यानी केवल सादगी से ही काम नहीं चलता । उसको जीवन में जरूरियात की चीजें प्राप्त करवाना, समान अवसर देना यही भावना इसमें निहित है, इसलिए शिक्षा विभाग के ऊपर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी एं । आज यह एक बहुत बड़ा बनिग प्रश्न है, केवल हरियाणा में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत में ही ऐसा है, क्योंकि सारे भारत में वही पद्वति चल रही एं । कोठारी कमीशन जब सन. 64 में बैठा, तो उसमें विदेशी भी शामिल थे और रशियन एक्सपर्टस भी शामिल थे, जिनसे हमें ' कुछ आशा थी, लेकिन वह भी कोई निश्चित मार्ग दर्शन नहीं कर सके । वही धन्धा, वही हिसाब–किताब वही ट्रांसलेशन मैथड है । ट्रांसलेशन मैथड यह एं कि इंग्लिश का हिन्दी कर दिया और हिन्दी का इंग्लिश कर दिया, यानी उधर से इधर कर दिया और इधर से उधर कर दिया । तो इससे जो मानसिक विकास होना चाहिए था वह नहों हो पाता । हमारे शिक्षा मन्त्री महोदय. जिनका शिक्षा संस्थाओं से पुराना लगाव और सम्बन्ध भी रहा है और ये इसमें रूचि भी लेते हैं, बड़े सुलझे हुए व्यक्ति ऐं, तो मैं तो यह कहूगा कि जैसे हमारे माननीय चौधरी मेहर चन्द जी फरमा रहे थे कि अगर हरियाणा शिक्षा में सुधार ला सका तो यह एक बड़ी सेवा होगी. बहन बडा उदाहरण होगा । जहां हम हर चीज में, हर आंकड़ों में आगे चलते हैं वहां शिक्षा के सुधार में भी हम आगे हो, तब हम अपनी सही उन्नति

कर सकते हैं । केवल आंकड़ों से हम अपनी उन्नति नहीं कर सकते, कि इस दफा हमारे इतने लड़कों ने मैट्रिक पास की, इतनों ने कालेज से परीक्षा पास की, इतने कालेज खुर्ने औंर इतने स्कूल सुने । हमें क्वांटिटी नहीं चाहिए, बल्कि क्वालिटी चाहिए । तो इन शब्दों के साथ और कुछ न कडुने हुए शिक्षा मन्त्री जी से निवेदन करुंगा कि जो सुझाव मैंने दिए हैं, उन पर वे गम्भीरता से विचार करें ।

श्री अमर सिंह (बचानी खेडा एम.सी.) : चेयरमैन साहब, सदन में शिक्षा सम्बन्धी एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा चल रही है कि देश के अन्दर शिक्षा किस किस्म की हो, क्या हमारा सिस्टम आफ एजुकेशन होना चाहिए, और किम तरह से हमारी प्रगति हो सकती है? आज समाजवाद के दौर थें यहां हम बीम सूत्रीय प्रोग्राम पर इतना जोर दे रहे हैं वहां एजुकेशन भी उसी की एक कड़ी है । इस समय जो सिस्टम आफ एजुकेशन चल रहा है उससे देश में या प्रदेश में एक तरह से फ्रस्टैशन पैदा हो रही है । इसको रोकने के लिए हमें सोचना है कि किस प्रकार का हमारा सिस्टम आफ एजुकेशन हो । चेयरमैन साहब, यहां पर बहुत सारे सुझाव आए । एक जमाना था, जब गुरु और चेले का बहुत पवित्र सम्बन्ध होता था, उस समय आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती थी और शारीरिक, मानसिक और आत्मिक– शक्ति के बारे में पूर्ण रूप से बताया जाता था । इतिहास के पन्ने पलटने से हमारे पुराने वेद और शास्त्रो से यह पता लगता है कि गुरु ओर चेले के सम्बन्ध

इतने सुदृढ रहे हैं, जिसकी आज की भारतीय संस्कृति में और दूसरे देशों में ऐसी मिसाल नहीं मिलती, जो उस समय भारत में थी । इस प्रकार ज्यों–ज्यों जमाना बदलता गया, हमारा सिस्टम आफ एजुकेशन भी बदलता गया । बहुत पहले जहां भारतीय संस्कृ त का जोर था और सिस्टम आफ एजुकेशन हमारा धार्मिक रहा, वहां बाद में, मुसलमानों का राज हुआ, तो हिन्दुस्तान में उर्दू का जोर रहा । इसी प्रकार अंग्रेजों ने पौने दो सौ साल हिन्दुस्तान में राज किया और एजुकेशन की ऐसी प्रणाली स्थापित की जो कि व्हाइट कालर क्लास पैदा करने के लिए थी । ऐसी प्रणली लागू कर दी गई जिससे हमारी हालत बद से बदतरीन होती गई । इसलिए आज देश के अन्दर. सिस्टम आफ एजुकेशन को सुधारने की जरूरत है । जब बच्चा पैदा होता है, उर्समें बराबरी नहीं होती, चाहे वह किसी के घर में पैदा हो । बच्चा. एक गरीब के घर में भी पैदा. होता है, राजा के घर में भी पैदा होता है और एक झोपड़ी मे भी पैदा होता–है । कुदरती तौर पर बच्चे की पैदाइश में कोई अन्तर नहीं है । सामाजिक दृष्टि से ज्यों–ज्यों वह बच्चा बड़ा होता चला जाता है त्यों–त्यों वातावरण भी उसी तरह से बदलता जाता है तो आज – देश में हम समाजवाद के दौर मैं से गुजर रहे है और बीस सूत्रीय प्रोग्राम की बम्ब– कर रहे – हैं औत. मुझे उम्मीद है कि प्रधान मन्त्री के इस प्रोग्राम से हमारे में बराबरी आएगी. । लेकिन इसको बराबरी में लाने के लिं एजुकेशन. एक ऐसी कड़ी है, जो इसको सुदृढ़ बना सकती है । चेयरमैन साहब, आप जानते हैं कि आज एजुकेशन की जिस प्रणाली से हम

चल रहे हैं, उस सिस्टम से हम 'दो बाते पैदा कर रहे हैं, एक तो यह कि जो बिलों मिडल क्लास के बच्चे पडते हैं, वे रोजी कमाने की गर्ज से स्कूल में दाखिल होते हैं और जो अपर मिडल क्लास के बच्चे पडते हैं, वे एंज्वायमैंट के लिए दाखिल होते है, वे सैर और तफरीह के लिए स्कूलों और कालेजों में दाखिल होते हैं । आज हम एक पब्लिक स्कूल और एक बेसिक स्कूल, जिसमें हमारे आम बच्चे तालीम हासिल करते हैं, उस सिस्टम को आप देखिए । पब्लिक स्कूलो के अन्दर जो एजुकेशन का सिस्टम है और जो दूसरे सरकारी या गैर– सरकारी स्कूलों के अन्दर एजुकेशन का सिस्टम है, उसमें बड़ी डिंस्पैरिटी है । यह डिस्पैरिटी ऐजुकेशन के आधार पर दूर होनी चाहिए, क्योंकि जो डिस्पैरिटी हम एजुकेशन को बेस बनाकर दूर करेंगे, वह ठीक तरह से दूर होगी, इसलिए इस डिस्पैरिटी को इसें आधार पर दूर करना चाहिए । इसके अलावा चेयरमैन साहब, जो बिरादरी के आधार पर स्कूल कालेजिज चल रहे हैं इनसे भी अलहदगी की भावना पैदा होती है । आवहमें राष्ट्रीय भावना वाली एजुकेशन की जरूरत है । आज हमारे सिस्टम आफ एजुकेशन के अन्दर सबसे कमी वाली बात यह नजर आती हुँ कि हमारी एजुकेशन ऐसे दायरे के अन्दर शिक्षित लोगों को खड़ा कर देती है कि बहु रोटी हासिल करने के लिए ही तालीम हासिल करते हैं । ऐसी तालीम न तो राश्ट्रीय भावना, न काम करने की भावना, न देश की सेवा करने की भावना और न ही घर का काम करने की भावना पैदा करती हए । मैं कोई ज्यादा

नहीं बोलना चाहता, क्योंकि बहुत सारी बातें हाउस में आ चुको हैं, इसलिए मैं कुछ सुजैशन्ज के तौर पर कहना चाहता हूं ।

हर स्कूल में बिन्डिग फण्ड होता है, जो कि मैं समझता हूं ठीक प्रकार से इस्तेमाल नहीं हो रहा है । मेरा सुझाव है, इस पैसे से ब्लाक लेवल पर वर्कशाप्स खोली जाएं, जहां पर एग्रीकल्चरल इम्पलीमैंट्स बनाने के लिए और दूसरे दस्तकारियों के सामान बनाने के साधन उपलब्ध हों । छरू महीने में एक बार हर लड़का जो आठवीं से दसवीं तक पढ़ता है, एक महीने के लिए वहां जाकर काम करे और ट्रेनिंग ले और उसको बाकायदा वहां से सर्टीफिकेट मिले । इस तरह से लड़के टैक्नीकली ट्रेड हो सकेंगे, उनके अन्दर डिगनिटी आफ लेबर आएगी और वे प्रोडक्टिव काम कर सकेने । जापान में आप देखे वहां पर कोई बेरोजगार नहीं है, स्कूल में पढते–पढ़ते ही बच्चा सौ रुपए महीने का कारीगर बन जाता है और नौकरी के पीछे नहीं भागता । वहां पर बच्चा स्कूल से पढ़ने के बाद अपनी वर्कशाप्स चलाकर उनमें पुर्जे वगैरह बनाकर अपने लिए रोजगार पैदा करता है । हमारे यहां भी वैसा ही सिस्टम चालू करना चाहिए जिससे हमारी तालीम प्रोडक्टिव और प्रैक्टिकल आधार पर चल सके (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए) इस वक्त स्पीकर साहब, हमारा सिस्टम आफ एजुकेशन अन–प्रोडक्टिव और बाबू पैदा करने वाला है । ग्रेजुएट्स नौकरी के लिए मारे–मारे फिर रहे हैं, हम गांवों में जाते हैं तो कई ऐसे लड़के हमारे पास आते हैं, जो कहते हैं कि वे ओवर एज होने

वाले हैं इसलिए उनको नौकरी दिलाई जाए, नहीं तो वे सरकारी नौकरी के लिए फिट नहीं रहेगे । स्पीकर साहब, आपको पता है कि जो लोअर मिडल क्लास का लड़का है, कमीन और गरीब हरिजन का लड़का है, छोटे किसान, बैकवर्ड क्लास और खाती लुहार का लड़का है,वह सर्विस को आधार मानकर ही त्तालीम हासिल करता है । एक तो वह पहले ही गरीब होता है और दूसरे जब उसे मौजूदा सिस्टम की तालीम हासिल करने के बाद नौकरी नहीं मिलती, तो आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि जिस गरीब मां बाप ने उनको पढ़ाया, उनकी क्या हालत होगी । इसलिए तालीम का आधार ऐसा होना चाहिए बच्चे पड लिख कर रोटी कमा सकें । अब कोठारी कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर 10+ 2+3 वाला एजुकेशन का सिस्टम निकाला जा रहा है । इसमें दम साल स्कूलिंग के लिए रखे हैं, दो साल वोकेशनल ट्रेनिंग दी जाएगी और तीन साल कालेज के लिए होंगे । स्पीकर साहब, हमारा हरियाणा देश में हर मामले में सब से आगे है और इसने कई बातों में दूसरे प्रदेशों को लीड दी एं । में अर्ज करता हूं कि इस पैट्रर्न आफ एजुकेशन को बदलने में भी हरियाणा पहल करे । आज हमारे मैट्रिक और बी० ए० पास लउके को जो गांव में रहता है, उसको इतना भी पता नहीं कि बाजरे का बीज एक किल्ले में कितना डलता है, गेहूं का कितना डलता है और कौन सी फसल किस मौके पर बोई जाती है । गांव में तो एजुकेशन के ढांचे का बुरा ही हाल है । वहां तालीम का स्टैण्डर्ड इतना लो है 'कि वे बच्चे किसी मुकाबिला के इम्तिहान में नहीं आ पाते । यह बात

गलत नहीं होगी, अगर मैं यह कह कि गांव का मैट्रिक पास लड़का शहर के अनपढ़ लडके के बराबर होता है । शहर के बच्चे का जनरल नालेज इतना होता है कि वह हर बात को जानता है, लेकिन देहात का लड़का सिर्फ एक ही बात जानता है कि सुबह बस्ता लेकर स्कूल जाना है और शाम को उतई होने पर वर आना है । एजुकेशन का मतलब सिर्फ किताबें रटने का ही नहीं होना चाहिए, बल्कि ऐसी एजुकेशन होनी चाहिए कि वह रोजमर्रा की लाइफ में कामयाब होने और रोटी कमाने के लायक बना दे । ऐसी शिक्षा ही समाज के लिए, देश के लिए और प्रदेश के लिए लाभदायक होगी । स्पीकर साहब, इन्सान का जन्म बार–बार नहीं मिलता और मनुष्य का जीवन सबसे उत्तम माना गया है । जानवर और इन्सान में एक ही अन्तर है कि जानवर भोग योनी भोगता है और इन्सान कर्म योनी. भोगता है । इन्सान अपने कर्त्तव्य सैं भगवान को भी पा सकता है । तालीम है।' ऐसी चीज है जो इन्सान को जानकर से अलग करती है । देश में बराबरी और समाजवाद लाने के लिए तालीम ऐसी होनी चाहिए जो टैक्नीकल भी हो और इसके साथ–साथ धार्मिक भी हो । धार्मिक शिक्षा से ही देश भक्ति की भावना पैदा होती है । आत पुराना इतिहास उठाकर देख लें देश के लिए जिन्होने कुरबानियां दी हैं, वे देश में बडे–बडे गुरु और महात्मा हुए हैं । इस देश में गुरु बाल्मीकि जैसे हुए हैं, जिन्होंने कहते हैं कि राम से दस हजार साल पहले ही रामायण लिख दी थी । मेरे कहने का मतलब यह है कि हमारे स्कूलों में जो तालीम दी जातु उसमें ऐसे बडे–बड़े गुरुओं और

महात्माओं और ऋषिओं के चरित की' 'निसारने दी जाएं । मैं समझता हू. कि– हमारे एजुकेशन मिनिस्टर साहब बहुत सुलझे हुए हैं और इस सारे एजुकेशन सिस्टम कौ जानते हैं, इसलिए वे इन बातों की तरफ ध्यान देंगे । हम एजुंकेशन सिस्टम पर विचार करने के लिए 1948 में मुदालियर कमिशन, 1 952 में –राधा हाष्णन कमिशन और 1964 में कोठारी कमिशन बैठा और इन तीनों कमिशनो की रिपोर्ट सु पर बड़ी गम्भीरता के साथ विचार किया– गया– ।

जो सिस्टम आफ एजुकेशन लार्ड मैकाले ने जारी किया था, उसने एक ऐसी क्लास पैदा कर दी थी, ऐसी गुलाम भावना के लोग पैदा कर दियु थे जो गुलामी करने के लिए नौकरियो के पीछे भागते रहें, आज भी भाग रहे हैं । इसके सिवाय अंग्रेजों से और कुछ नहीं सीख सके । ऐसी हीन भावना की तालीम हमको दे गए थे । अंग्रेज बड़ा चालाक शासक था । वे ऐसी तालीम देते थे जिससे वे दूसरे देशों पर कब्जा करने मैं कामयाब हो सकें । वे लोगों के दिल में ऐसी छाप छोड़ देते थे, ऐसी इंगलिश 'भावना भर देते थे कि जो हमारे दिंलीदिंमाग से निकलती नहीं । इसी भावना से अंग्रेज हिन्दुस्तान पर राज करके चले गए । अगर हम उसी भावना से चलते रहे, तो फ्रस्ट्रेशन पैदा होगी । इस भावना को बदलने के माना जब तक हम गुरुओं के, देशभक्तों के लिट्रेचर स्कूलों में, सिलेबस में नही लाएमें, तब तक यह ढांचा टीक नहीं होगा । अभी गुलाटी साहब ने एक किताब पेश की थी, जिस में

मम्मी, डैडी के सिवाय और कुछ नहीं लिखा था । ऐसी पुस्तकों से हमारा कल्याण नहीं हो सकता, क्योंकि जब बच्चा पैदा होता है, वह कुम्हार की मिट्टी की तरह होता है । कुम्हार अगर चाहे, उसकी सुराही बनाए, चाहे तो घडा बना दे, वह कुछ भी बना सकता है । इसी प्रकार बच्चा जिस संगत में पड़ेगा, उसी प्रकार का हो जाएगा । अच्छी संगत में जाएगा अच्छा होगा, बुरी संगत में पड़ेगा तो बुरा बनू' जाएगा–, जेबकतरा बनेगा, अच्छे स्कूल में. पड़ेगा तो अच्छा विद्यार्थी बनेगा । मेरे कहने का मतलब है जैसा माहौल होगा, जैसा एन्वायरनमैंट होगा, उसी डग सेंडल जाता है । इस एन्वायरनमैट को ठीक करने की आवश्यकता है । जब तक टैक्नीकल एजुकेशन नहींहोगी, तब तक हम! इस एन्वायरनमैट को ठीक करने में कामयाब नहीं हो सकते । मैं एक चीज– और कहना चाहता हू । जैसे कि मेरे आनरेलब मैबंर चौधरी मेहर चन्द ने बताया कि स्कूलों को बन्द करने से, उनकी संख्या कम करने से एजुकेशन के सिस्टम में सुधारनही होगा । स्कूलो में जो पढ़ाया जाता है, उसको चेंज करके टैक्निंकल एजुकेशन दें । प्राइमरी स्कूल पांचवी क्लास तक हैं, उनमें कहीं– कहीं एक या दो टीचर है । हाई स्कूलों मैं भी पूरे टीचरें नहीं हैं । आज देश में गुरु चेले की भावना बदलती जा रही है । गुरु के मन में पैसा कमाने की भावना है, और आज का सिस्टम मोनिटरी सिस्टम बना गया है । हम सबसे पहले मोनिटरी बै–भि–फिट को देखते हैं । चाहे एजुकेशन सिस्टम हो, चाहे कोई दूसरा सिस्टम हो, हर चीज को हम पैसे की दृष्टि से नापते हैं ' टीचर और स्टुडैन्ट की भावना

अब बदल चुकी है । टीचर समझता है कि मैंने 4 घंटे पढ़ाना है और सिर्फ नौकरी की गर्ज से पढाना है और बच्चा मिडल स्टैण्डर्ड तक या मैट्रिक तक इसलिए पढता है कि वह नौकरी पर लग जाए । इस भावना से बच्चे स्कूल जाते हैं और उस भावना से टीचर पढ़ाते हैं । स्पीकर साहब, मैं एजुकेशन मिनिस्टर साहब से अर्ज करुंगा, वे अच्छे एजुकेशनिस्ट हैं, आर्य समाज उनकी बैकग्राउंड है, वे काफी धार्मिक विचार रखते हैं, वे समझते हैकि आज देश के सामने कितनी समस्याएं हैं । ये मसले सिर्फ तालीम से सुधर सकते हैं । पुराने जमाने के बारे में हम सुनते हैंकि सैकड़ों कोसों पर एक गांव होता था, किसी आदमी की सौ साल से कम उमर नहीं होती थी और बीस साल के बाद बच्चा होता था । ऐसा क्यों था? इसलिए कि उस जमाने में वातावरण इस किस्म का था, बच्चों को शिक्षा इस किस्म की दी जाती थी जिससे बच्चों की चितवृत्ति एकाग्र रहती थी । उनको मानसिक, शारीरिक और धार्मिक शिक्षा दी जाती थी जिससे उनका मन कन्ट्रोल में रहता था । वे ऐसे चक्रों में नहीं पड़ते थे जिससे फैमिली प्लानिंग करने की जरूरत पड़े । आज अगर हमारी एजुकेशन उसी ढंग को हो कछु, तो आज भी वही बात हो सकती है । स्पीकर साहब, आप रशिया में देरवे सिर्फ 12 परसैन्ट लोग खे–भी' करते हैं लेंकिन वे लोग अपने–अपने दायरे के अन्दर, अपने– अपने शोबे के अन्दर इस ढंग से लगे हैं, उन्होंने अपने कारोबार को इतना अच्छा बना लिया है कि अगर उन्हें 50 नौकरों की जरूरत हो, तो केवल 25 दरखास्तें ही पहुंचती हैं और 25 पोस्टें खाली रहती हैं । इसका कारण क्या

है? इसका कारण यह है कि वे अपने बिजनैस में, इस ढंग से लगे हैं, उनकी तालीम हुस ढंग की है जो बेरोजगार लड़के पैदा नहीं करती । हस्के मुकाबले हमारे यहां खुशकिस्मती से अगर कोई एक पोस्ट निकलती है, तो हजार–हजार दरखास्तें होती हैं । इस बेरोजगारी को रोकने के लिए मेरा सुझाव है, एजुकेशन मिनिस्टर साहब, इस सुझाव पर विचार करें, जो बी० एम पास या मैट्रिक पास लड़के है, उनको एक सर्कुलर के जरिए सूचित किया जाए कि जो दस्तकारी खोलने में रुच रखते हैं उनको ज्यादा सुविधाएं दी जाएंगीं । अगर उनको सुविधा मिल जाए, पैसे की सुविधा मिल जाए, टैक्नीकल नलिज दी जारा, तो वे स्माल स्केल इंडस्ट्री अपने घर में खोल सकते हैं, तहसील हैड–क्वार्टर पर खोल सकते हैं और कोई न कोई काम कर सकते हैं । आप उनको औप्शन दें कि आप कौन सा काम करना चाहते हैं । उनको टैक्नीकल एजुकेशन दें, और वे यह समझें कि उन्हें आत्म सम्मान मिलेगा । अगर उन्हें आत्म सम्मान मिलेगा, तो वे अपना काम बढ़ाएने । शिक्षा का जो देश में माहौल है, इसको बदलना आवश्यक है । प्रिल ढंग से समाज चाहता है, उम ढंग से इसके तौर–तरीके बदलने पड़ेंगे । हमारी प्रधान मन्त्री का यह दावा है कि सब को बराबर लाना है । जो अमीर आदमी है, जिसने गरीब का खून चूस कर बन इकट्ठा' कर रखा है और गरीब को काम धन्धा देने पर रुपया खर्च नहीं करता, वहू लोग जेल में होंगे । इस पालिसी को कामयाब बनाने के लिए, हमें सबसे पहले शिक्षाप्रणाली को सुधारना होगा । मैं यह समझता द्र कि हमारे स्कूलों में किसी किस्म की

कमी नहीं रहनी चाहिए, लेकिन कमी है । 1 5 अगस्त, 1 947 के बाद ही हमारे एजुकेशन सिस्टम में तबदीली होनी चाहिए थी । किताबी नालेज की जगह टैक्नीकल औंर धार्मिक नालेज दी जानी चाहिए ।

Mr. Speaker : The House stands adjourned till 9.30 a.m. tomorrow.

18.50 बजे।

(The Sabha then *adjourned till 9.30 a.m. on Friday, the 23rd jannuary,1976).